वर्ष-6, अंक-12, 16-30 जून, 2021 (पाक्षिक)

चाणक्य वार्ता

ISSN 2456-1207

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

मूल्य : 50 रुपये
कुल पृष्ठ 40

इस अंक में पढ़ें

ड्रैगन परेशान क्यों? तीरथ सरकार के सौ दिन, मनोहर सरकार का प्रदर्शन पहले से भी बेहतर, 5जी और कोरोना संक्रमण का संबंध, राष्ट्र की कसौटी पर राज्य, शस्त्र मानव मारते हैं पर शास्त्र..., नमक आंदोलन, हाइपरलिपीडेमिया का ज्ञान व समाधान आदि महत्वपूर्ण सामग्री। साथ ही पढ़ें देश-विदेश की प्रमुख खबरें तथा सभी स्थायी स्तंभ।

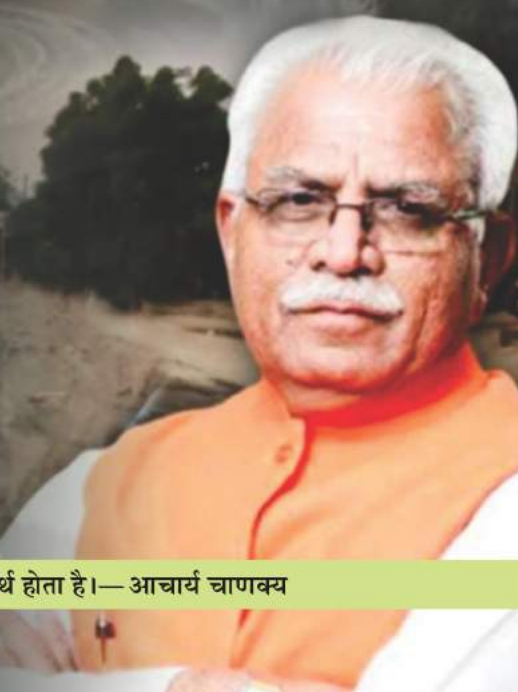

आत्म विजय प्राप्त करने वाला सभी प्रकार की संपत्ति एकत्र करने में समर्थ होता है।— आचार्य चाणक्य

VISIT…

www.centuryply.com
CENTURYPLY®
LAMINATES | PLY
CenturyPly and CenturyLaminates come with specially designed surface treatment - ViroKill Technology.
Contains Activated Nanoparticles
Ruptures and kills 99.99% viruses on surface contact
Saves you from contamination
Now With
VIROKILL
Kills 99.99% Viruses
Raho Befikar
Corporate Office: Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata – 700088
+91 33 39403950
1800-5722-122
customerhelpdesk@centuryply.com
Century Plyboards India Limited
Century Plyboards (India) Ltd.
Century Plyboards India Ltd
Century Plyboards (India) Limited
Century Plyboards (I) Limited

ISO 9001 Certified
SKIPPER
PIPES
FIXED FOR LIFE
COMPLETE RANGE OF PVC PIPES AND BATH FITTINGS
CPVC | UPVC | SWR | UGD | HDPE | BOREWELL | AGRICULTURE
CISTERN | SEAT COVER | BATH FITTINGS
NSF
pw
FOR ENQUIRY : enquiry@skipperlimited.com | Toll Free : 1800 120 6842

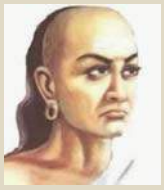

चाणक्य वार्ता

सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 6, अंक : 12, 16-30 जून, 2021

अनुक्रम

5 सम्पादक के नाम पत्र

6 सम्पादक की कलम से

राष्ट्रीय

08 तीरथ सिंह रावत सरकार के सौ दिन : ओमकार त्यागी/जितेन्द्र कुमार

11 हरियाणा की मनोहर सरकार का प्रदर्शन पहले से भी बेहतर : विशाल शर्मा

13 5जी और कोरोना संक्रमण के बीच संबंधों की हकीकत ? : योगेश कुमार गोयल

15 भारत के संविधान की जन्मकथा-19 : लक्ष्मीनारायण भाला

चिंतन

17 नमक आंदोलन—कांग्रेस और संघ: एक सिंहावलोकन-25 : कृष्णानंद सागर

18 आचार्य चाणक्य की ये बातें बडे काम आने वाली हैं : रमेश जैन

स्वास्थ्य

19 हाइपरलिपीडेमिया—ज्ञान एवं समाधान : डॉ. रेखा फुल्ल

हमारी भाषाएं

20 प्राकृत भाषा और उसका वैशिष्ट्य-3 : प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी

साहित्य

22 ऑक्सीजन : इन्दुकांत आंगिरस

कविताएं

22 स्वार्थ और विश्वास : राजेंद्र प्रसाद वत्स

22 मैं गाँव खोजता हूँ : प्रभुनाथ शुक्ल

व्यंग्य

23 शस्त्र मानव मारते हैं पर शास्त्र... : धर्मपाल महेंद्र जैन

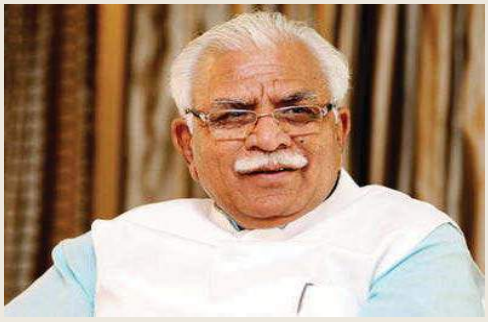

नई दिल्ली कार्यालय
मुख्यालय :
'सन्निधि', ए-28, मनसाराम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
कॉरपोरेट कार्यालय :
321, तृतीय तल, वर्धमान मॉल, प्लॉट-2, सेक्टर-19, द्वारका, नई दिल्ली-110077
सम्पर्क : 09871909808, 09718681010
ई-मेल : **chanakyavarta@gmail.com**

उत्तर क्षेत्र कार्यालय
एस.सी.ओ. 24, द्वितीय तल, सेक्टर-11, पंचकूला, हरियाणा-134112
सम्पर्क : 0172-4672424, 09466988764

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यालय
116, कॉमर्स हाउस, एम.जी. रोड, फैंसी बाजार निकट ऐक्सिस बैंक, गुवाहाटी, असम-781001
सम्पर्क : 09101834214, 9864337619

दक्षिण क्षेत्र कार्यालय
13, नल्लन्ना मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600 079
सम्पर्क : 9342302248, 9941245660

संरक्षक
डॉ. योगेन्द्र नारायण (पूर्व महासचिव, राज्यसभा)
कुलाधिपति, गढ़वाल विश्वविद्यालय
लक्ष्मीनारायण भाला (वरिष्ठ साहित्यकार)

परामर्श मंडल
ए. सूर्य प्रकाश (पूर्व अध्यक्ष, प्रसार भारती)
पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि
(कुलाधिपति, रोमा विश्वविद्यालय)
वेणुगोपालन (वरिष्ठ पत्रकार)

सम्पादक मंडल
सम्पादक : **डॉ. अमित जैन**
राजनीतिक सम्पादक : **ओम प्रकाश पाल**
उप सम्पादक : **सारांश कनौजिया**

राष्ट्रीय समन्वयक
घनराज भम्बी
(वरिष्ठ पत्रकार—रक्षा सेनाएँ एवं अर्द्ध सैनिक बल)

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार प्रभारी
दिलीप बैनर्जी, कोलकत्ता
डा. सु. कृष्णचन्द्र चौरडियां, चेन्नई

आर्थिक सलाहकार मंडल
सी.ए. मन्त्रेश्वर कर्ण
सी.ए. स्वीटी जैन

अन्तरराष्ट्रीय सलाहकार मंडल
धर्मपाल महेन्द्र जैन, टोरंटो, कनाडा

विधि सलाहकार मंडल
योगेश कुमार (चेयरमैन, नेचर व्यू)
अजय नागर (स्वतंत्र पत्रकार)
डॉ. भरत कुमार, (शिक्षाविद्), बनारस

राज्य प्रभारी
उत्तर क्षेत्र प्रभारी—**विशाल शर्मा**, चंडीगढ़
पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रभारी—**राजीब अगस्ती**, गुवाहाटी
दक्षिण क्षेत्र प्रभारी—**नवरतन पींचा जैन**, चेन्नई
पश्चिमी क्षेत्र प्रभारी—**आशा सिंह देवासी**, मुम्बई
पूर्वी क्षेत्र प्रभारी—**प्रकाश बेताला**, भुवनेश्वर
कर्नाटक प्रभारी—**हर्ष गोयल**, बेंगलुरु
तमिलनाडु प्रभारी—**जे.पी. ललवानी**, चेन्नई
मध्य प्रदेश प्रभारी—**लखनलाल चौरसिया**, भोपाल
पश्चिमी उ.प्र. प्रभारी—**अंकित जैन**, मेरठ

विविध

24 जिंदगी का फलसफा कितना मासूम है : शशि प्रभा पाठक
25 राष्ट्र की कसौटी पर राज्य : गीतांजलि राघव
27 तुष्टिकरण का एक ओर ज्वलन्त जीता-जागता उदाहरण : कौशल अरोड़ा

समाचार जगत

28 खबरों में देश-विदेश : सोनम जैन
29 उत्तर भारत की खबरें : विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन
30 पूर्वोत्तर भारत की खबरें : राजीब अगस्ती/आलोक सिंह
31 दक्षिण भारत की खबरें : नवरतन पिंचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय
32 पश्चिम भारत की खबरें : आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

श्रद्धांजलि

34 पद्मश्री लक्ष्मीनंदन बोरा, पद्मश्री पियोंग तमजेन जमीर, श्री जिओना चाना, श्रीमती वीना कोहली, श्री शशिभूषण प्रसाद सिंह

जॉब अलर्ट

36 सरकारी नौकरी के अवसर : सीए स्वीटी जैन

सबरंग

37 सिनेमा, साहित्य, श्रद्धांजलि : डॉ. महेश्वर

बिक्री केन्द्र

38 सूची-पत्रिका बिक्री केन्द्र

देश भर में 'चाणक्य वार्ता' के प्रतिनिधि

राज्य ब्यूरो चीफ
धीरेन्द्र मिश्र, नई दिल्ली
डॉ. अमर सिंहल, जयपुर, राजस्थान
शैलेन्द्र जैन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
इन्द्रमोहन मिश्रा, हरिद्वार, उत्तराखंड
डॉ. गुलाब सिंह, यमुना नगर, हरियाणा
शरद छिब्बर, चंडीगढ़
रमेश गुप्ता, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर
एस.के. व्यास, जलंधर, पंजाब
गुरुवचन सिंह, शिमला, हिमाचल प्रदेश
सतीश सिंह, गुवाहाटी, असम
आलोक सिंह, शिलांग, मेघालय
शुभ्रांशु दाम, धर्मनगर, त्रिपुरा
तुम्बम रीबा 'लीली', ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश
हुरई जेलियांग, दीमापुर, नागालैंड
डॉ. ललमुआनओमा साइलो, आईजोल, मिजोरम
किरन कुमार, इम्फाल, मणिपुर
डॉ. छुकी लेप्चा, गंगटोक, सिक्किम
वेद प्रकाश पाण्डेय, बेंगलुरु, कर्नाटक
ईश्वर करुण, चेन्नई, तमिलनाडु
जी. गौरीशंकर, हैदराबाद, तेलंगाना
उमा महेश्वर रेड्डी, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश
श्रीकांत कण्णन, पुडुचेरी
अरुण लक्ष्मण, तिरुवन्तपुरम, केरल
धीरेन बरोट, अहमदाबाद, गुजरात
अमोस छेत्री, पणजी, गोवा
किशोर आपटे, मुम्बई, महाराष्ट्र
विनायक भिषे, सतारा, महाराष्ट्र
विनोद कुशवाहा, भोपाल, म.प्र.
आदेश ठाकुर, रायपुर, छत्तीसगढ़
सियानंद मंडल, पटना, बिहार
गौतम चौधरी, राँची, झारखंड
दिनेश जैन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
राजेन्द्रपाल शर्मा, पोर्टब्लेयर, अंडमान निकोबार

नेशनल सोशल मीडिया हेड
आदित्य जैन, यमुनानगर

नेशनल मार्केटिंग हेड
पीयुष जैन, नई दिल्ली

जिला ब्यूरो चीफ
अविनाश पाठक, नागपुर, महाराष्ट्र
अनमोल जैन, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
सुनीता गोस्वामी, मथुरा, उत्तर प्रदेश
डॉ. डी.के. अस्थाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
संजय सक्सेना, कानपुर, उत्तर प्रदेश
सोनम जैन, दिल्ली
अजय भट्ट, देहरादून
ए. रणजीत, आईजोल, मिजोरम

*नोट : देश के कोने-कोने में आप अपने समाचार पत्र हॉकर के माध्यम से घर बैठे 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका मँगा सकते हैं। यदि आपको पत्रिका मिलने में कठिनाई होती है, तो आप 'चाणक्य वार्ता' के मुख्य प्रसार कार्यालय, नई दिल्ली में **08586858185** पर सम्पर्क कर सकते हैं अथवा*

***chanakyavarta@gmail.com** पर ई-मेल भी कर सकते हैं।*

—प्रसार प्रबंधक

© सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय रहेंगे।

इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसाइटी, नई दिल्ली का पाक्षिक प्रकाशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमित जैन के लिए विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद से मुद्रित एवं ए-28, मनसाराम पार्क, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : अमित जैन।

आवरण व लेआउट : **स्वपन कम्यूनिकेशन, दिल्ली**

वेबसाइट : www.chanakyavarta.com

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर अपने विचार या कोई सुझाव हमें हमारी ई-मेल आईडी response50123@gmail.com पर भेज सकते हैं। स्थान की उपलब्धता के अनुसार हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
—सम्पादक 'चाणक्य वार्ता'

चाणक्य वार्ता के 1 जून के अंक में दीपक जैन द्वारा लिखित रामदेव बनाम आईएमए लेख पढ़ा। इस लेख में उन्होंने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के लाभ बताने का प्रयास किया है। साथ ही यह भी बताने का प्रमाणिक प्रयास किया है कि किस प्रकार फार्मा कंपनियों को एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति से भारी आर्थिक लाभ मिल रहा है। दीपक जैन ने बहुत ही सुंदर ढंग से इस पूरे विषय को रखा है। आयुर्वेद के क्षेत्र में बहुत कम कार्य हुआ है। एक समय था जब हम शैल्य चिकित्सा अर्थात ऑपरेशन भी आयुर्वेद पद्धति से किया करते थे। यदि केंद्र और राज्य सरकारें आयुर्वेद को बढ़ावा देंगी, तो जिस प्रकार तीसरी लहर की संभावना व्यक्त की जा रही है, उस समय आयुर्वेद के उपचार से ही हमारे नागरिक ठीक हो सकेंगे।

महंत ज्ञानप्रताप
हरिद्वार, उत्तराखंड

वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. गौरव फुल्ल के शोध लेख में आयुर्वेदिक दवाइयों के विषय में विस्तार से पढ़कर अच्छा लगा। चाणक्य वार्ता ने अपने इस अंक में यह लेख छाप कर बताया है कि हमारे डॉक्टर कोरोना वायरस का उपचार अपने अनुभव के आधार पर कर रहे हैं। अभी तक कोई भी ऐसी दवाई नहीं बनी है, जो गंभीर रूप से कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति का शत-प्रतिशत उपचार कर सके। प्रयोग में आने वाली अधिकांश दवाइयां हमारी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती हैं और इसी के माध्यम से उपचार होता है। आयुर्वेद में बहुत सी ऐसी दवाइयां हैं जो हमारी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होती हैं। कुछ ऐसे घरेलू उपाय भी हैं, जिनसे हम अपनी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं। यह आसानी से उपलब्ध हैं। इसलिए मेरा मानना है कि हमें कोरोना का स्थाई उपचार आयुर्वेद में ही खोजना चाहिए। आयुर्वेद में निश्चित रूप से कोई ऐसी दवाई मिलेगी जो गंभीर रूप से संक्रमित मरीजों को भी राहत प्रदान करेगी। इस कार्य में डॉ गौरव फुल्ल जैसे विद्वान एवं अनुभवी आयुर्वेद डॉक्टर सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इसी अंक में मुझे योगेश कुमार गोयल का डीआरडीओ द्वारा बनाई गई स्वदेशी दवाई 2डीजी पर भी लेख पढ़ने को मिला। इसके अलावा ब्लैक फंगस, यलो फंगस और व्हाइट फंगस पर केंद्रित धीरेंद्र मिश्र का लेख भी बहुत ज्ञानवर्धक था।

डॉ. मुकुल वार्ष्णेय
नई दिल्ली

चाणक्य वार्ता के 1 जून के अंक में डॉ. दिलीप धींग द्वारा तमिल ग्रंथ नालडियार पर बहुत ही उपयोगी जानकारी प्रदान की गई। हिंदी पत्रिका में एक अन्य क्षेत्रीय भाषा में लिखी गई रचना के बारे में पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इसी को विविधता में एकता कहते हैं। यह कार्य चाणक्य वार्ता जैसी पत्रिका ही कर सकती है। पूर्व में जिस प्रकार पत्रिका ने जम्मू कश्मीर से लेकर दक्षिण भारतीय राज्यों तमिलनाडु व कर्नाटक आदि पर विशेषांक निकाले और इसी प्रकार गुजरात आदि राज्यों पर भी विशेषांकों का प्रकाशन किया, उससे भी पत्रिका का विभिन्न गैर हिन्दी भाषी प्रदेशों के प्रति लगाव प्रदर्शित होता है। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति चाणक्य वार्ता का समर्पण सराहनीय है। इस लेख के लिए विद्वान लेखक डॉ दिलीप धींग की भी मैं सराहना करता हूं।

अजय विश्वनाथ
बेंगलुरु, कर्नाटक

सोशल मीडिया का अपना लाभ है किंतु इसकी हानियां भी बहुत अधिक हैं। अफवाहों का तेज प्रसार, असत्य बातों का प्रचार इसकी सहायता से बहुत ही आसानी से किया जा सकता है। चाणक्य वार्ता के 1 जून के अंक में प्रकाशित धर्मपाल महेंद्र जैन के व्यंग्य लेख में ऐसे ही एक विषय को लिया गया है। कई बार तो यह पता कर पाना भी मुश्किल हो जाता है कि सोशल मीडिया पर हमारे साथ जुड़ा हुआ व्यक्ति किस प्रवृत्ति का है। केंद्र व राज्य सरकारें अफवाहों पर लगाम लगाने के लिए नियम बना रही है। आशा करता हूं कि जिस समस्या के विषय में व्यंग्यकार ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है उस विकट समस्या का समाधान भी शीघ्र ही निकलेगा और जल्द ही इसकी स्थिति में बदलाव देखने को मिलेगा। यह जल्द हो यह भी आवश्यक है।

संजय जैन
जयपुर, राजस्थान

चाणक्य वार्ता के 1 जून के अंक में मुझे कविताओं ने बहुत अधिक आकर्षित किया। इस अंक में सोनल ओमर, महेंद्र कुमार मध्येशिया, मुकेश कुमार ऋषि वर्मा की कविताएं मुझे पढ़ने को मिली। तीनों ही कविताओं की रचना बहुत ही अच्छे ढंग से की गई है। ये तीनों कविताएं अलग-अलग विषयों पर केंद्रित थी। कम शब्दों में अभिव्यक्ति किस प्रकार की जा सकती हैं, यदि यह सीखना हो तो हमें कविता लिखना और समझना आना चाहिए। कविताएं अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। पत्रिका के नाम के अनुरूप यह लगता है कि इसमें केवल राजनीतिक विषय ही होंगे, किंतु पत्रिका द्वारा साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रकाशित रचनाओं को देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है। मैं लम्बे समय से चाणक्य वार्ता का पाठक हूं। कविताओं ने इसके निखार को सदैव ही बढ़ाया है। पत्रिका की साहित्य साधना के लिए मैं संपादक मंडल का आभारी हूं।

बजरंगलाल 'अनोखे'
भोपाल, मध्यप्रदेश

भगत सिंह के बारे में हमने पहले भी कई बार पढ़ा, सुना और देखा है। किंतु वरिष्ठ इतिहासकार कृष्णानंद सागर ने जिस प्रकार चाणक्य वार्ता में अपनी लेख श्रृंखला के 24वें भाग में उनका वर्णन किया है वह अत्यंत रोचक और नवीन है। किसी भी व्यक्ति जिसने भगत सिंह को पढ़ा और जानने का प्रयास किया होगा, उसके लिए इस प्रकार का वर्णन और अधिक प्रेरणादायी है। इसके साथ ही प्रमुख बात यह है कि उसे इस लेख से कुछ नई जानकारियां मिलेगी। लेख को पढ़कर ऐसा लगता है कि हमने अपने स्वतंत्रता संग्राम के केवल कुछ ही हिस्से को जाना है। बहुत सी ऐसी बातें हैं, जिनको इतिहास में दरकिनार कर दिया गया है, लेकिन उनमें वास्तविकता है।

सुशील दावरे
मुम्बई, महाराष्ट्र

ड्रैगन परेशान क्यों ?

हाल ही में ब्रिटेन के कॉर्नवाल में आयोजित जी-7 देशों के सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संबोधन चीन को अच्छा नहीं लगा। हालांकि, चीन ने इस बारे में खुलकर कुछ नहीं कहा है, लेकिन उसने इशारों में संकेत दे दिए हैं कि वैश्विक स्तर पर जो हो रहा है वो अच्छे संकेत नहीं हैं।

अब सवाल यह है कि चीन ऐसा क्यों सोचता है? जी-7 देशों का शिखर सम्मेलन हर साल होता है, लेकिन चीन के लिए इस बार का सम्मेलन परेशान करने वाला क्यों है? इस विषय पर गंभीरता से विचार करने पर कई बातें सामने आती हैं। पहली बात यह है कि जी-7 में इस बार ब्रिटेन ने भारत, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया और दक्षिण अफ्रीका को शामिल किया था। जबकि जी-7 के अमेरिका और जापान पहले से स्थायी सदस्य है। यानि चीन के खिलाफ बने नए अंतरराष्ट्रीय संगठन क्वॉड के सभी चार देश जी-7 के भी सदस्य हैं। चीन के लिए ये देश सिरदर्द की वजह इसलिए हैं कि अमेरिका इसके बल पर चीन के वैश्विक प्रभाव और दुनिया को पश्चिम से पूर्व की दिशा में मोड़ने की मुहिम को झटका देना चाहता है।

फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जी-7 के शिखर सम्मेलन के सत्र को डिजिटल माध्यम से संबोधित करते हुए 'मुक्त समाज एवं मुक्त अर्थव्यवस्था' की पैरवी करना भी चीन के खिलाफ जाता है। मोदी ने अपने संबोधन में लोकतंत्र, वैचारिक स्वतंत्रता और स्वाधीनता के प्रति भारत की सभ्यतागत प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि तानाशाही, आतंकवाद, हिंसक उग्रवाद, झूठी सूचनाओं और आर्थिक जोर-जबरदस्ती से उत्पन्न विभिन्न खतरों से साझा मूल्यों की रक्षा करने में भारत जी-7 का एक स्वाभाविक साझेदार है। प्रौद्योगिकी कंपनियों तथा सोशल मीडिया मंचों का आह्वान करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वे अपने उपयोगकर्ताओं के लिए सुरक्षित साइबर परिवेश सुनिश्चित करें। जी-7 नेताओं ने स्वतंत्र, मुक्त और नियम आधारित हिंद प्रशांत क्षेत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित किया और क्षेत्र में साझेदारों का सहयोग करने का संकल्प लिया। साथ ही ट्वीट कर बताया कि 'खुले समाज' की अवधारणा भारतीय सभ्यतागत लोकाचार का एक हिस्सा हैं। भारतीय समाज की जीवंतता और विविधता में इनकी अभिव्यक्ति होती है।

कोविड-19 महामारी का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री का यह कहना कि जी-7 के सत्र में भारत की भागीदारी से समूह की यह सोच प्रतिबिंबित होती है कि हमारे समय की सबसे बड़ी समस्या का समाधान भारत की भागीदारी के बिना संभव नहीं है। भारत स्वास्थ्य सहित सभी बड़े मुद्दों पर जी-7 और अतिथि साझेदारों के साथ गहराई से जुड़ा रहेगा। साथ ही कोविड-19 टीकों पर पेटेंट छूट के लिए समूह के समर्थन का भी आह्वान प्रधानमंत्री ने किया। मोदी के आह्वान का दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा, ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन, डब्ल्यूटीओ के महानिदेशक ओकोंजो इविला और संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतेरेस ने भी समर्थन किया। इसी तरह जलवायु परिवर्तन पर एक सत्र में प्रधानमंत्री ने सामूहिक कार्रवाई पर जोर दिया। पर्यावरण के संबंध में भारत की उपलब्धियों को उन्होंने रेखांकित किया। भारतीय प्रधानमंत्री का यह उद्बोधन चीन को अच्छा नहीं लगा। ऐसा इसलिए कि इनमें से अधिकांश मुद्दे उसके खिलाफ जाते हैं।

चीन नहीं चाहता कि संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, कनाडा, इटली, जर्मनी और जापान जैसे सात सबसे विकसित देशों का समूह पहले से ज्यादा प्रभावी बने। ऐसा इसलिए कि 1973 में आए तेल संकट और वैश्विक आर्थिक मंदी की वजह से तत्कालीन राष्ट्रपति बैलेरी जिस्कॉर्ड डी एस्टेइंग ने इस संगठन की शुरुआत की थी। केवल छह देशों वाले इस संगठन की पहली बैठक वर्ष 1975 में आयोजित की गई थी। मानवाधिकारों की सुरक्षा, लोकतंत्र, कानून का शासन, सतत विकास, और समृद्धि जैसे मुद्दों पर काम करने वाले इस संगठन में 1976 में कनाडा को भी शामिल किया गया था। 49 सालों से प्रत्येक वर्ष जी-7 समिट का आयोजन किया जाता है। वर्तमान में जी-7 में जो देश शामिल हैं वे कई मामलों में दुनिया में शीर्ष स्थान पर कायम हैं। जी-7 देश दुनिया में सबसे बड़े निर्यातक हैं। इन देशों के पास सबसे बड़ा गोल्ड रिजर्व है। ये सभी सात देश दुनिया में सबसे बड़े स्तर पर परमाणु ऊर्जा का उत्पादन करते हैं। वर्ष 2018 तक जी-7 में शामिल देशों की कुल संपत्ति 317 ट्रिलियन डॉलर यानि 31,700,000 करोड़ डॉलर थी जो विश्व की कुल संपत्ति का 58 फीसदी हिस्सा है। ग्लोबल जीडीपी में जी-7 देशों का 46 फीसदी से भी ज्यादा हिस्सा है। इतना ही नहीं जी-7 देशों द्वारा चीन को दरकिनार कर भारत, ऑस्ट्रेलिया, साउथ कोरिया और दक्षिण अफ्रीका को बुलाना उसे अच्छा नहीं लगा। इससे चीन का वैश्विक मंचों पर अलग-थलग होना शुरू हो गया है।

यहां पर एक सवाल यह भी है कि आखिर जी-7 को विस्तार देने की जरूरत क्यों पड़ी? इसका सीधा जवाब यह है कि चीन दुनिया का सुपरपावर और सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बनना चाहता है। वह अमेरिका को नंबर वन पॉजिशन से अलग करने की कोशिश में दशकों से जुटा है। अब वो इसके करीब पहुंच गया है। चीन की ये रणनीति अब खुलकर सबके सामने आ रही है। ऐसा चीन अपनी आर्थिक ताकत और रक्षा ताकत के बल पर कर रहा है। उसका मकसद दुनिया पर धौंस जमाना है। फिर उसकी रणनीति में खुद के हितों की चिंता शामिल है। चीन को खुले समाज की चिंता नहीं है। फिर उसने जी-7 को टक्कर देने के लिए ब्रिक्स का गठन कर लिया है। चीन ने ब्रिक्स में भारत और पाकिस्तान को भी जोड़ लिया है। लेकिन ये उसकी रणनीतिक चाल है। ऐसा इसलिए कि अपने गुट में शामिल होने के बाद भी वो डोकलाम और गलवान जैसी घटनाओं को भारत के खिलाफ अंजाम दे रहा है। भारत विरोधी ताकतों को संरक्षण देने में चीन लगा हुआ है। यह साफ है की चीन ब्रिक्स की आड़ में जी-7 को कमजोर करना चाहता है। यानि अमेरिका की बादशाहत को समाप्त करने की रणनीति पर चीन ने तेजी से काम करना शुरू कर दिया है। ऐसे में भारत के विरोधी गुट से नजदीकी बढ़ाना और खुद की ताकत को मजबूत करना ड्रैगन को स्वभाविक तौर पर बुरा लगेगा ही। इसके जवाब में उसने पूर्वी लद्दाख क्षेत्र में तनाव की स्थिति को नए सिरे से बढ़ावा देना शुरू कर दिया है। चीन भारत को न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामरिक शक्ति के लिहाज से भी कमजोर करना चाहता है। वहीं भारत चीन के सामने झुककर खड़े होने के बजाय तनकर खड़ा होने के लिए प्रयासरत है।

—डॉ. अमित जैन

हरियाणा सरकार

प्रोनिंग प्रक्रिया
(पेट के बल लेटना)
कोविड-19 मरीजों हेतु ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने में सहायक

"यदि आप कोविड के मरीज हैं और घर पर ही क्वारंटाइन हैं तो प्रोनिंग की प्रक्रिया के द्वारा आप अपने ऑक्सीजन के स्तर को सुधार सकते हैं। आपकी जागरुकता ही आपको इस बीमारी से लड़ने में सहायक सिद्ध होगी।"

– **मनोहर लाल**, मुख्यमंत्री, हरियाणा

कोविड-19 मरीज खुद अपनी देखभाल के लिए प्रोनिंग की मदद लें

- प्रोनिंग मरीज़ के शरीर की पॉज़िशन को सुरक्षित तरीके से परिवर्तित करने की एक प्रक्रिया है, जिसमें पीठ के बल लेटा हुआ मरीज ज़मीन की तरफ मुंह करके पेट के बल लेटता है।
- चिकित्सा के क्षेत्र में प्रोनिंग शरीर की एक स्वीकृत अवस्था है, जो सांस लेने की प्रक्रिया को आरामदायक बनाती है और शरीर में ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाती है।
- सांस लेने में तकलीफ वाले कोविड-19 मरीजों, विशेषकर होम आइसोलेशन वाले कोविड मरीजों के लिए प्रोनिंग की प्रक्रिया काफी फायदेमंद है।

प्रोनिंग (पेट के बल लेटने) का महत्व

- वैंटिलेशन को बढ़ाती है, श्वसन कोशिकाओं को खोलकर आसानी से सांस लेने में मदद करती है।
- इसकी आवश्यकता केवल उसी स्थिति में है, जब मरीज़ को सांस लेने में तकलीफ महसूस हो रही हो और उसका एस.पी.ओ.-2 का स्तर 94 से नीचे चला गया हो।
- होम आइसोलेशन के दौरान तापमान, ब्लड प्रेशर और ब्लड शुगर जैसे अन्य लक्षणों के अलावा एस.पी.ओ.-2 को नियमित रूप से मॉनिटर करना बेहद महत्वपूर्ण है।
- हाइपोक्सिया (ऑक्सीजन सर्कुलेशन की कमी) मरीज़ की हालत और ज़्यादा बिगड़ने का कारण बन सकती है।
- उचित समय पर प्रोनिंग और वैंटिलेशन की बेहतर व्यवस्था से कई ज़िंदगियां बचाई जा सकती हैं।

प्रोनिंग के दौरान तकिया लगाने का सही तरीका

- एक तकिया गर्दन के नीचे रखें
- एक या दो तकिये छाती और जांघ के ऊपरी हिस्से की बीच रखें
- दो तकिये पैर की पिंडलियों के नीचे रखें।

सेल्फ-प्रोनिंग के लिए

- आपको 4 से 5 तकियों की ज़रूरत होगी
- लेटने की पॉज़िशन में नियमित रूप से बदलाव करते रहना होगा
- किसी भी पॉज़िशन पर 30 मिनट से ज़्यादा का समय न लगाएं

30 मिनट से 2 घंटे तक पेट के बल लेटें
30 मिनट से 2 घंटे तक दाईं तरफ करवट से लेटें
30 मिनट से 2 घंटे तक शरीर के ऊपरी हिस्से को ऊपर उठाएं और बैठ जाएं
30 मिनट से 2 घंटे तक बाईं तरफ करवट से लेटें
फिर से 1 नंबर वाली पॉज़िशन पर वापस लौटें और पेट के बल लेटें।

इन परिस्थितियों में प्रोनिंग से बचें

- गर्भावस्था
- डीप वेनस थ्रोम्बॉसिस (जिसका उपचार 48 घंटे के भीतर हुआ हो)
- हृदय सम्बन्धी प्रमुख बीमारियों की स्थिति में
- अस्थिर रीढ़, जांघ या कूल्हे की हड्डी फ्रैक्चर होने की स्थिति में
- भोजन के बाद करीब एक घंटे तक प्रोनिंग न करें।
- प्रोनिंग को केवल तब तक करें जब तक आप इसे आसानी से कर पा रहे हैं।

अधिक जानकारी हेतु हेल्पलाइन नंबर
8558893911 (सम्पूर्ण राज्य के लिए)
1075 (गुरुग्राम व फरीदाबाद को छोड़कर)

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा www.prharyana.gov.in @Cmohry @DiprHaryana

तीरथ सिंह रावत सरकार के सौ दिन

नए मुख्यमंत्री के आने से प्रदेश में सकारात्मक लहर

ओमकार त्यागी / जितेन्द्र कुमार

उत्तराखंड में यह चुनावी साल है। इसी साल बीजेपी सांसद तीरथ सिंह रावत को देवभूमि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री का अहम ताज मिला है। अब उनके पास सबसे बड़ी चुनौती पार्टी की सत्ता में वापसी सुनिश्चित करने की है। बहुत कम समय में उन्होंने इस बात के संकेत दे दिए हैं कि वो उत्तराखंड के नागरिकों के भरोसे को जीतने में कामयाब होंगे। इसके लिए उन्होंने कई अहम कदम उठाए हैं। दरअसल, भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय नेतृत्व के फैसले के बाद तीरथ सिंह रावत 10 मार्च 2021 को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री बने। उन्हें त्रिवेन्द्र सिंह रावत के स्थान पर इस पद की जिम्मेदारी मिली है। उत्तराखंड के सीएम पद की जिम्मेदारी उन्हें तब मिली जब विधानसभा का कार्यकाल लगभग एक साल ही शेष रह गया है। मुख्यमंत्री के रूप में वह अपने 100 दिन पूरे कर रहे हैं। उनके सामने एक नहीं कई चुनौतियां हैं, परंतु उनके तेवरों को देखने के बाद लगता है कि वे इन चुनौतियों को पार करने की हिम्मत रखते हैं।

मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत के सामने पहली चुनौती उत्तराखंड के लोगों के बीच खुद को भरोसे के काबिल साबित करने की है। दूसरी चुनौती उत्तराखंड में विकास कार्यों को तेजी से पूरा करना भी है और तीसरी चुनौती आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी की जीत सुनिश्चित करना है। इसके अलावा उनके सामने पार्टी हाईकमान और उत्तराखंड के बीजेपी नेताओं और कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलने की भी चुनौती है। इन सभी चुनौतियों को पार करके ही तीरथ सिंह अपने लक्ष्य को साधने में सक्षम हो पाएंगे और फरवरी 2022 में बीजेपी की सत्ता में फिर से वापसी को सुनिश्चित कर पाएंगे। मुख्यमंत्री बनने के बाद तीरथ सिंह रावत ने कहा था कि उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है वे उसे निभाएंगे। त्रिवेंद्र सिंह रावत ने बतौर सीएम जो काम किए हैं उन्हें मैं आगे बढ़ाने का काम करूंगा। उन्होंने कहा था कि प्रदेश की बेहतरी के लिए जो कुछ भी करना आवश्यक होगा, उसे तत्काल प्रभाव से किया जायेगा।

फिलहाल, पहले सौ दिन के दौरान मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत कोरोना महामारी की दूसरी लहर और कुंभ का आयोजन सफलतापूर्वक कराने में काफी हद तक सफल रहे हैं। ऐसा कर उन्होंने प्रदेश की जनता और साधु संतों के बीच अपनी विश्वसनीयता कायम की है। अब मुख्यमंत्री उत्तराखंड सरकार के काम को तेजी से आगे बढ़ा रहे हैं। वे प्रदेश की महत्वकांक्षी व जन कल्याणकारी योजनाओं पर पूर्ण ध्यान दे रहे हैं और भाजपा सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यों को तेजी से पटरी पर लाने में जुटे हैं, ताकि चुनावी साल में पार्टी को इसका सियासी लाभ मिल सके।

जनहितैषी छवि बनाने पर जोर : त्रिवेंद्र सिंह रावत के चार साल के कार्यकाल के दौरान नौकरशाही की मनमानी की वजह से जनता में उपजे असंतोष को दूर करने के लिए तीरथ सिंह पूरा प्रयास कर रहे हैं। मुख्यमंत्री का पदभार संभालने के तुरंत बाद उन्होंने साफ संकेत दे दिया है कि वे नियमों की किताबें नहीं पढ़ेंगे बल्कि जनहित में उचित फैसले लेंगे। ऐसा कर उन्होंने आम जनता को अपनी ओर आकर्षित किया है।

साधु-संतों पर मेहरबान : हरिद्वार, ऋषिकेश और चारों धामों की धार्मिक और सांस्कृतिक यात्रा के कारण उत्तराखंड को देवभूमि के रूप में जाना जाता है, इसलिए प्रदेश की राजनीति में साधु संतों का प्रभाव साफ तौर पर देखने को मिलता है। मुख्यमंत्री बनने के बाद तीरथ सिंह रावत ने कुंभ मेले को लेकर नाराज साधु संतों को मनाया और उनकी मांगों को पूरा किया। कुंभ के दौरान तीरथ सिंह ने साधु संतों पर हेलीकॉप्टर से फूलों की बारिश कराकर भी लोकप्रियता हासिल की। अनेक साधू संतों से मुख्यमंत्री सीधे संपर्क में रहते हैं। मुख्यमंत्री बनने के बाद से वह कई बार हरिद्वार का दौरा कर चुके हैं। हर दौरे में वह संत समाज के कहने के अनुरूप फैसले कर रहे हैं। यही वजह है कि भाजपा से नाराज चल रहे साधु संत अब पार्टी का साथ देने का मन बना रहे हैं। हाल ही में मुख्यमंत्री तीरथ सिंह ने 2010 की तर्ज पर अखाड़ों को कुंभ मेला क्षेत्र में भूमि आवंटित करने के निर्देश दिए हैं।

तीरथ सिंह रावत के लोकप्रिय फैसले : सत्ता की कमान संभालते ही उन्होंने गैरसैंण मंडल बनाने का फैसला स्थगित कर दिया और देवस्थानम बोर्ड के फैसले पर जल्द ही विचार करने की घोषणा की। कोटद्वार में मेडिकल कॉलेज पर लगाई गई रोक को तीरथ सिंह रावत ने हटा दिया और इसके लिए बजट भी जारी कर दिया। कर्मकार कल्याण बोर्ड में उन्होंने सचिव को बदला और विभिन्न विभागों में कार्यरत ऐसे अधिकारियों की भी विदाई कर दी, जो सरकार को अपने हाथों की कठपुतली समझते थे। उन्होंने देव स्थानम बोर्ड से 51 मंदिरों को बाहर रखने की घोषणा करके लोकप्रियता हासिल की।

विकास पहली प्राथमिकता : 11 जून 2021 को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत ने राज्य योजना के तहत विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में सड़कों समेत तमाम विकास कार्यों के लिए

गंगोत्री से लड़ सकते हैं चुनाव

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत वर्तमान में लोकसभा सांसद हैं। नियमानुसार उन्हें छह माह के अंदर विधानमंडल का सदस्य बनना होगा। माना जा रहा है कि सीएम गंगोत्री सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। यह सीट भाजपा विधायक गोपाल रावत के निधन के बाद से खाली है। स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं की मुख्यमंत्री को गंगोत्री सीट से चुनाव लड़ाने की पेशकश के बाद से संगठन स्तर पर भी चुनाव को लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन कौशिक भी बता चुके हैं कि सीएम गंगोत्री विधानसभा सीट से मुख्यमंत्री के लिए सबसे बेहतर विकल्प हैं। इससे पहले कोटद्वार विधायक और कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत, बद्रीनाथ विधायक महेंद्र भट्ट, भीमताल विधायक रामसिंह कैड़ा समेत सात विधायक मुख्यमंत्री के लिए अपनी विधानसभा सीट को छोड़ने की पेशकश कर चुके हैं।

करीब 47.74 करोड़ की धनराशि को मंजूर किया। मुख्यमंत्री ने सोमेश्वर विधानसभा क्षेत्र के दो मोटर मार्गों के निर्माण को 3.14 करोड़, धर्मपुर विधानसभा क्षेत्र के दो मोटर मार्गों के लिए 1.69 करोड़, गंगोलीहाट में सुकल्याड़ी बैंड से पभ्या मनतोली गुरैनो आगर मोटर मार्ग के निर्माण को 1.02 करोड़ स्वीकृत किए। विकासनगर विधानसभा क्षेत्र में एनएच-74 से खुशालपुर होते हुए लांघा रोड तक लिंक मार्ग बनाने को उन्होंने 29.62 लाख देने का ऐलान किया। इसके अलावा मुख्यमंत्री हर जिले के अपने दौरे के दौरान लगातार योजनाओं की बारिश कर रहे हैं।

15,000 करोड़ की योजनाओं को तीरथ ने दी स्वीकृति : तीरथ सिंह रावत ने अभी तक 15 हजार करोड़ रुपए की योजनाओं को अपनी स्वीकृति दी है। इन योजनाओं पर कार्य शीघ्र ही शुरू होने की उम्मीद है। इन सभी योजनाओं से अवस्थापना विकास में मदद मिलेगी। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में पानी, बिजली और स्वास्थ्य की सुविधाओं में भी सुधार होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाने की तैयारी : देश में शिक्षा की गुणवत्ता के मामले में उत्तराखंड का चौथा स्थान है। इस दिशा में तीरथ सरकार लंबी छलांग लगाने की तैयारी कर रही है। इसीलिए 8वीं तक ही पढ़ाई करके नौवीं कक्षाओं में पढ़ाई जारी रखने से कतरा रहे करीब 11 फीसदी छात्रों पर अब प्रदेश सरकार विशेष रूप से ध्यान दे रही है। अटल उत्कृष्ट विद्यालय योजना के माध्यम से उम्मीद जताई जा रही है कि माध्यमिक कक्षाओं में स्कूल छोड़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या में कमी आएगी। माध्यमिक स्तर पर स्तरीय शिक्षा के बूते उच्च शिक्षा में भी छात्र नामांकन बढ़ाने की तैयारी है। सतत विकास लक्ष्य को पाने के लिए उत्तराखंड को 11 पैमाने पर परखा जा रहा है।

भारत नेट फेज टू परियोजना : उत्तराखंड के मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत ने केंद्रीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार मंत्री रविशंकर प्रसाद से मुलाकात के दौरान उत्तराखंड में स्टेट लेड मॉडल के अंतर्गत स्वीकृत भारत नेट फेज-टू परियोजना के लिए प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति देने की अपील की। प्रदेश में फास्ट ट्रैक स्पेशल कोर्ट के लिए आवश्यक सहायता देने का भी मुख्यमंत्री ने आग्रह किया। साथ ही भारत नेट फेज-टू परियोजना के अंतर्गत प्रदेश के सीमांत गांवों तक संचार सुविधाएं विकसित करने की योजना को भी तीरथ आगे ले जाना चाहते हैं। इसके लिए पर्वतीय क्षेत्रों में फाइबर केबिल बिछाई जानी है। मुख्यमंत्री ने रविशंकर प्रसाद से उत्तराखंड में इंडिया इंटरप्राइजेज आर्किटेक्चर परियोजना को स्वीकृति देने का भी अनुरोध किया। इससे कृषि, स्वास्थ्य व शिक्षा आदि विभागों के कंप्यूटरीकरण में मदद मिल सकेगी।

उत्तराखंड में सकारात्मकता की लहर : मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत के उत्तराखंड की गद्दी सम्भाले अभी मात्र सौ दिन ही हुए हैं, मगर प्रदेश में एक सकारात्मक सोच के साथ विकास की गति को पंख लगे हैं। जिस समय तीरथ सिंह रावत की ताजपोशी हुई उस समय कहा जा रहा था कि मुख्यमंत्री के रूप में काँटों भरा ताज उन्हें मिला है, परंतु वे तीरथ सिंह ही थे जिन्होंने परेशानियों को अवसर में बदल कर प्रदेश की मूल समस्याओ का निदान किया है। ऋषिकेश के रवि रजक आयुष्मान लाभार्थी हैं, उन्हें लगता है कि कोरोना काल में मुख्यमंत्री ने बेहतरीन काम किया है। उनकी बात से देहरादून के दवा व्यवसायी संजीव गुप्ता भी इतेफाक रखते हैं। जब विपक्ष ने कुम्भ को कोरोना से जोड़ा तो इस बारे में संजीव गुप्ता कहते हैं कि ये सिर्फ विपक्ष का प्रोपेगैंडा है, सच्चाई इसके विपरीत है दरअसल भाजपा ने कुम्भ पर बहुत काम किया है। आस्था और पर्यटन उत्तराखंड के जीवन का अहम हिस्सा हैं, पर्यटन उत्तराखंड की आजीविका का मूल आधार है और मुख्यमंत्री दोनों चीजो को बड़ी अच्छी तरह से समझते हैं। रामझूला के भगवती काला कहते हैं कि तीरथ सिंह रावत के आने से एक उम्मीद जगी है, उन्होंने शाखा से सत्ता तक का सफर संघर्ष के दम पर तय किया है वो जानते हैं कि पहाड़ की जरूरत क्या है।

पलायन व रोजगार ये उत्तराखण्ड की बड़ी समस्या हैं। इस बात को तीरथ भी जानते हैं कि

''वे छात्र संघ मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष भी रहे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्य और संगठन मंत्री रहे तीरथ सिंह रावत पढ़ाई पूरी करने के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के साथ जुड़ गए। इस दौरान उन्होंने एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम किया और वह आरएसएस में प्रांत प्रचारक भी रहे। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में राज्य के संगठन मंत्री का पद भी संभाला।''

यदि इन दो समस्या का हल खोज लिया गया तो वीरान पड़े पहाड़ फिर जी उठेंगे। इसके लिए तीरथ सिंह रावत हर सम्भव कोशिश में लगे हुए हैं। उन्होंने दिल्ली में हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात कर चारधाम यात्रा मार्ग को गति देने के साथ उससे जुड़े सम्पर्क मार्गों को भी परियोजना से जोड़ने का प्रस्ताव दिया है। पहाड़ों में जल के अपार स्रोत्र हैं पर बहुत गांवों में जल के संसाधन अभी भी प्राकृतिक हैं इसके लिए जल का सही उपयोग करने के लिए व उपलब्धता बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री ने जल शक्ति मंत्रालय को प्रस्ताव भेजे हैं। उत्तराखण्ड में विदेशों की तर्ज पर दो वननगर बसाने की योजना है उसके लिए हरिद्वार व देहरादून को चिन्हित किया गया है। सौ दिनों के कार्यकाल में मुख्यमंत्री ने अपनी इच्छा शक्ति का परिचय दिया है। जनता ने विधानसभा उपचुनाव में प्रचण्ड जीत दिला कर अपनी मोहर भी लगाई है। रुद्रप्रयाग के प्रमोद नेगी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ऋषिकेश में आउट सोर्स के माध्यम से कार्यरत हैं, उन्हें लगता है कि मुख्यमंत्री ने पहाड़ का जीवन जिया है वो यहाँ की विषमता भी समझते हैं उनके आने से पहाड़ का जीवन सरल होगा। मकानों पर लटके जंग लगे ताले टूटेंगे, वीरान गांवो को पलायन के दंश से मुक्ति मिलेगी। सौ दिन हजार उम्मीद लेकर आये है कि इस बार सरकार गांव तक पहुँचेगी, उनका दर्द सुना जायेगा और फिर गाँव लोकगीतों से गूँज उठेंगे।

राजनेता के साथ कुशल अध्येता भी हैं तीरथ सिंह : तीरथ सिंह रावत का जन्म 9 अप्रैल 1964 को पौड़ी गढ़वाल के सीरों, पट्टी असवालस्यूं नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता का नाम कलम सिंह रावत और माता का नाम गौरा देवी है। उन्होंने हेमवती नंदन गढ़वाल विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन किया है। श्रीनगर गढ़वाल के बिरला कॉलेज, हेमवती नंदन गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर से समाजशास्त्र में एमए और पत्रकारिता में डिप्लोमा की शिक्षा भी उन्होंने ग्रहण की है।

अध्ययन के समय से ही तीरथ सिंह समाज सेवा में रुचि रखने लगे थे और छात्र राजनीति में वे अत्यंत सक्रिय रहे। उन्होंने हेमवती नंदन गढ़वाल विश्वविद्यालय के छात्र संघ का चुनाव लड़ा और सफलतापूर्वक अध्यक्ष पद के लिए चुने गए। वे छात्र संघ मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष भी रहे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्य और संगठन मंत्री रहे तीरथ सिंह रावत पढ़ाई पूरी करने के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के साथ जुड़ गए। इस दौरान उन्होंने एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम किया और वह आरएसएस में प्रांत प्रचारक भी रहे। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में राज्य के संगठन मंत्री का पद भी संभाला। इस दौरान उन्होंने छात्रों के लिए कई सराहनीय कार्य किए। उनके शानदार काम की वजह से उन्हें राष्ट्रीय संगठन मंत्री का पद भी मिला। वे भारतीय जनता पार्टी के आरंभिक सदस्यों में से एक हैं। राम मंदिर आंदोलन में भी उन्होंने अहम भूमिका निभायी थी।

दो साल जेल में रहे तीरथ सिंह : तीरथ सिंह रावत 90 के दशक में चले श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े और विभिन्न आंदोलनों में दो साल जेल में भी रहे। उन्होंने उत्तराखंड निर्माण के समय मुजफ्फरनगर के रामपुर तिराहे से गढ़वाल तक शहीद यात्रा की अगुवाई की थी। 90 के दशक में उत्तराखंड राज्य निर्माण आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका रही, इसी कारण वर्ष 2000 में जब उत्तराखंड राज्य बना तो श्री रावत राज्य सरकार में शिक्षा मंत्री बने। उससे पूर्व उत्तर प्रदेश में भी उन्होंने विधान परिषद सदस्य के रूप में कार्य किया था और परिषद के विनिश्चय संकलन समिति के अध्यक्ष भी रहे थे।

दो राज्यों के विधान मंडल के सदस्य रह चुके हैं रावत : साल 2007 में तीरथ सिंह रावत को भाजपा उत्तराखंड इकाई का महामंत्री चुना गया। इसके बाद उन्हें प्रदेश भाजपा चुनाव अधिकारी और प्रदेश सदस्यता अभियान का प्रमुख पदभार भी दिया गया। धार्मिक समझ के कारण उन्हें दैवीय आपदा प्रबंधन समिति का अध्यक्ष भी चुना गया। तीरथ सिंह रावत फरवरी 2013 से दिसंबर 2015 तक उत्तराखंड भाजपा के अध्यक्ष भी रहे। 2017 में उन्हें भारतीय जनता पार्टी का राष्ट्रीय सचिव बनाया गया। सीएम तीरथ सिंह रावत एक कुशल अध्येता भी हैं। वे उन गिने-चुने नेताओं में से हैं जो दो अलग-अलग राज्यों के विधान मंडल के सदस्य रहे हों। वे उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड विधान परिषद और विधानसभा के सदस्य भी रहे और उसके बाद संसद के लिए चुने गए। पार्टी ने उन पर भरोसा करते हुए उन्हें हिमाचल प्रदेश का चुनाव प्रभारी भी बनाया था।

लेखकद्वय चाणक्य वार्ता के सलाहकार एवं पत्रकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

तीरथ सिंह रावत : एक परिचय

- राम मंदिर आंदोलन और उत्तराखंड राज्य निर्माण अंदोलन में सक्रिय रहे।
- मुजफ्फरनगर के रामपुर तिराहे से गढ़वाल तक शहीद यात्रा की अगुवाई
- 1997 से 2002 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य रहे।
- 2000 से 2002 तक उत्तराखंड के शिक्षा मंत्री रहे।
- 2012 से 2017 तक विधायक रहे।
- 2013 से 2015 तक उत्तराखंड बीजेपी के अध्यक्ष रहे।
- लोकसभा चुनाव 2019 में पौढ़ी गढ़वाल से बीजेपी सांसद चुने गए और हिमाचल प्रदेश के चुनाव प्रभारी भी रहे।

हरियाणा की मनोहर सरकार का प्रदर्शन पहले से भी बेहतर

''हरियाणा में लागू इस योजना को मिली सफलता की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तारीफ कर चुके हैं। इतना ही नहीं राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस और महात्मा गांधी की जयंती पर 2 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देशभर में स्वामित्व योजना लांच करने की घोषणा कर चुके हैं। इसके तहत देश के हर जिले के 11-11 गांवों को लाल डोरा मुक्त घोषित किया जाएगा। हरियाणा इस योजना की शुरुआत करने वाला पहला राज्य है, जिसका श्रेय निश्चित रूप से मुख्यमंत्री मनोहर लाल को जाता है।''

विशाल शर्मा

हरियाणा में पिछले सात साल से मुख्यमंत्री मनोहर लाल के नेतृत्व में बीजेपी की सरकार है। मनोहर लाल के नेतृत्व में कई क्षेत्रों में प्रदेश को नई पहचान देने का काम किया गया है। बीजेपी सरकार प्रदेश के संपूर्ण विकास के लिए लगातार प्रयासरत है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल का कहना है कि सभी क्षेत्रों में सभी का समान विकास ही हमारी प्राथमिकता है। मनोहर सरकार की जन हितैषी रणनीति की नीति आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में जमकर तारीफ की है। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि कोरोना संकट के बीच प्रदेश सरकार ने जनहित में क्या-क्या कदम उठाएं हैं और नीति आयोग ने सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स रिपोर्ट 2020 में हरियाणा के बारे में क्या कहा है।

एसडीजी रिपोर्ट 2020 : नीति आयोग ने अपनी एसडीजी रिपोर्ट 2020 में समग्र विकास के मामले में हरियाणा सरकार की तारीफ की है। एसडीजी रिपोर्ट के अनुसार 2020-21 में हरियाणा में बिजली सप्लाई तेजी से बढ़ी है, शहरी विकास के कार्य में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। राज्य ने स्वास्थ्य व्यवस्थाओं और गरीबी दूर करने के क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। इन क्षेत्रों में उसकी रैंकिंग में पिछले साल के मुकाबले काफी सुधार आया है। खास बात यह है कि हरियाणा में लैंगिग समानता में काफी सुधार आया है। लेकिन अभी इस क्षेत्र में राज्य को कई अहम कदम उठाने बाकी हैं। ठीक इसी तरह भूमि सुधार क्षेत्र में भी काम करने की जरूरत है।

सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स रिपोर्ट 2019 में प्रदेश का स्कोर 57 था। 2020 में यह स्कोर 10 अंक पाकर 67 पर पहुंच गया है। ओवर आल हरियाणा इस समय 100 में से 67 अंक पाकर देश के सभी राज्यों की सूची में 14वे स्थान पर है। इस रैंकिंग में सबसे पहले नंबर पर केरल है, जबकि दूसरे नंबर पर हिमाचल प्रदेश और तमिलनाडु हैं। लेकिन इसी रिपोर्ट में बेरोजगारी, शिक्षा, औद्योगिक और आर्थिक विकास व कुछ अन्य मामलों में सरकार को जोर देने की जरूरत है।

हरियाणा एक हरियाणवी एक : मोदी सरकार की एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना के तहत भारतीय संस्कृति से विद्यार्थी रूबरू हो रहे हैं। इसी कड़ी में अब मनोहर सरकार ने हरियाणा एक हरियाणवी एक के तहत प्रदेश की संस्कृति से विद्यार्थियों को जोड़ने के लिए बड़ा अभियान चलाया है। समग्र शिक्षा अभियान के तहत प्रदेश को चार मंडलों में बांटा गया है। स्कूलों के विद्यार्थी संबंधित जिलों की संस्कृति, भौगोलिक स्थिति, जिले की बोली, जातीय कहानियां, प्रसिद्ध मंदिर, जिले में लगने वाले मेले, स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी लेंगे। वहीं समय-समय पर एक दूसरे जिले में विद्यार्थी जाकर भी इस विषय में अध्ययन करेंगे। इसके लिए विभाग ने अलग-अलग जिलों का आपस में आवंटन कर दिया है। चूंकि केंद्र सरकार ने एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत हरियाणा को तेलंगाना के साथ जोड़ा हुआ है, इसलिए हरियाणा के विद्यार्थी तेलंगाना की संस्कृति व भौगोलिक स्थिति के बारे में रूबरू हो रहे हैं। वहीं दूसरे प्रदेशों में बोली जाने वाली भाषा को भी विद्यार्थी सीख रहे हैं।

हरियाणा के लोगों को मिलेगा मालिकाना हक: कोरोना महामारी की दूसरी लहर के बीच हरियाणा की मनोहर सरकार ने मई 2021 में जन कल्याण की दिशा में कई कदम उठाए हैं। इस नीति के तहत हरियाणा सरकार ने शहरी निकायों की संपत्ति पर बरसों से काबिज लोगों को मालिकाना हक देने का अहम फैसला लिया है। यह उन्हीं लोगों पर लागू होगा जो कम से कम 20 साल से उस प्रापर्टी पर काबिज होंगे। 31 दिसंबर 2020 को 20 साल पूरे होने की अवधि मानी जाएगी। यानी उनकी लीज एक जनवरी 2000 से पहले की होनी चाहिए। जो व्यक्ति 50 साल से ऐसी प्रापर्टी पर काबिज है, उसे रजिस्ट्री कराते समय कलेक्टर रेट (सर्किल रेट) पर 50 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। 40 साल से काबिज व्यक्ति को 40 फीसदी, 30 साल से काबिज लोगों को 30 फीसदी और 20 साल से काबिज व्यक्तियों को 20 फीसदी छूट कलेक्टर रेट में मिलेगी। यदि कोई व्यक्ति

100 साल से काबिज है तो उसे भी अधिकतम 50 फीसदी की छूट ही मिल सकेगी। यानी वह प्रापर्टी मुफ्त में अपने नाम कराने का दावा नहीं कर सकता।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने इस महत्वपूर्ण योजना के बारे में एक पत्रकार वार्ता भी की, जिसमें उन्होंने बताया कि इस फैसले से हरियाणा के करीब 40 हजार लोगों को फायदा होगा। उन्होंने कहा कि सरकार की इस योजना का लाभ दुकानदारों और मकान मालिकों को समान रूप से मिलेगा। ऐसे लोगों को इस संपत्ति की रजिस्ट्री अपने नाम कराने के लिए कलेक्टर रेट में 20 से 50 फीसदी तक की छूट प्रदान की जाएगी।

यह योजना एक जून, 2021 से लागू हो चुकी है। इस योजना के अन्तर्गत जमीन का मूल्य निर्धारण थर्ड पार्टी करेगी। दो माह के भीतर योजना का लाभ सभी को प्रदान करने की रूपरेखा तैयार की गई है। आवेदन करने के बाद 15 दिन के भीतर संबंधित प्रापर्टी का 25 प्रतिशत पैसा जमा कराना होगा। अगले 45 दिन के भीतर 75 फीसदी पैसा जमा कराना पड़ेगा। पूरा पैसा आ जाने पर संबंधित दुकान या मकान कब्जाधारक के नाम कर दी जाएगी। अगर एक प्रापर्टी के कई फ्लोर हैं और उस पर दो से तीन लोग कब्जाधारी हैं तो उन सबकी अलग-अलग रजिस्ट्री होगी और अलग-अलग पैसे लिए जाएंगे। छत का अधिकार सबसे ऊपर रहने वाले व्यक्ति का होगा, लेकिन वह उस पर कोई निर्माण नहीं कर सकेगा।

रिहायशी इलाकों की जमीन बेचने की योजना : हरियाणा सरकार ने रिहायशी इलाकों के बीच छोटे—छोटे टुकड़ों में पड़ी जमीन को शहरी निकायों को बेचने की अनुमति दे दी है। इस तरह के छोटे-छोटे टुकड़ों में पड़ी सरकारी प्रॉपटी बिना उपयोग के बेकार पड़ी है।

ऐसी प्रापर्टी को साथ लगते प्लाट या मकान मालिकों अथवा खुले बाजार में बेचने की व्यवस्था की गई है। मूल्य निर्धारण थर्ड पार्टी करेगी। इससे जो पैसा आएगा शहरी निकाय उस पैसे को इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। इस पैसे को अलग खाते में रखा जाएगा। ताकि जरूरत पड़ने पर कहीं बाद में उसे इस्तेमाल में लाया जा सके।

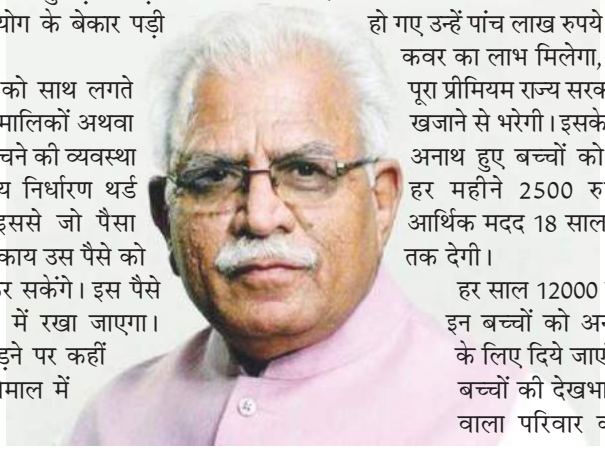

लाल डोरा योजना : हरियाणा सरकार ने लाल डोरा को लेकर भी बड़ा फैसला लिया था। इस योजना के तहत हरियाणा राजस्व विभाग ने जिलों में लाल डोरा मुक्त हुए करीब पौने पांच सौ गांवों के नए नक्शे तैयार कर लिए हैं। इन गांवों में ड्रोन सर्वे और चूना मार्किंग का काम भी पूरा हो चुका है।

राजस्व विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव ने डीसी को नए नक्शे जल्द चंडीगढ़ मुख्यालय भेजने के निर्देश दिए हैं। अभी तक 472 गांवों को लाल डोरा मुक्त किया जा चुका है। इन गांवों के लोगों को नए सिरे से भूमि के स्वामित्व प्रमाण पत्र प्रदान किए गए हैं। योजना के तहत लाल डोरे में शामिल भूमि का ग्रामीणों को मालिकाना हक मिला है। जमीन की रजिस्ट्री होने से ग्रामीणों को इस भूमि पर भी लोन मिल सकेगा। हरियाणा में लागू इस योजना को मिली सफलता की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तारीफ कर चुके हैं। इतना ही नहीं राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस और महात्मा गांधी की जयंती पर 2 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देशभर में स्वामित्व योजना लांच करने की घोषणा कर चुके हैं। इसके तहत देश के हर जिले के 11-11 गांवों को लाल डोरा मुक्त घोषित किया जाएगा। हरियाणा इस योजना की शुरुआत करने वाला पहला राज्य है, जिसका श्रेय निश्चित रूप से मुख्यमंत्री मनोहर लाल को जाता है। हरियाणा के करनाल जिले की निसिंग तहसील का सिरसी ऐसा पहला गांव है जो लाल डोरा मुक्त हो चुका है।

कोरोना संकट राहत योजना : कोरोना से प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने बाल देखभाल योजना का दायरा बढ़ाने का भी ऐलान किया है। इसके तहत कोरोना महामारी की चपेट में आने की वजह से जिन बच्चों के माता-पिता दिवंगत हो गए उन्हें पांच लाख रुपये के बीमा कवर का लाभ मिलेगा, जिसका पूरा प्रीमियम राज्य सरकार अपने खजाने से भरेगी। इसके अलावा अनाथ हुए बच्चों को सरकार हर महीने 2500 रुपए की आर्थिक मदद 18 साल की उम्र तक देगी।

हर साल 12000 रुपए भी इन बच्चों को अन्य खर्चों के लिए दिये जाएंगे। जिन बच्चों की देखभाल करने वाला परिवार का कोई सदस्य नहीं है उनकी देखभाल बाल देखभाल संस्थान करेंगे और बाल देखभाल संस्थान को 1500 रुपए प्रति बच्चा प्रति महीना 18 वर्ष तक सहायता भी सरकार द्वारा प्रदान की जाएगी। यह राशि अवधि जमा के रूप में बैंक खाते में डाल दी जाएगी। 21 वर्ष की आयु होने पर बच्चे को मैच्योरिटी राशि दे दी जाएगी। अन्य पूरा खर्चा बाल देखभाल संस्थान द्वारा किया जाएगा। साथ ही सरकार के बाल गृहों में पालन पोषण होने पर सरकार पूरा खर्च उठाएगी। इन बच्चों का बैंक खाता खुलवा कर इसमें 1500 रुपए प्रति महीने 18 साल की उम्र तक जमा कराए जाएंगे। कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में मुफ्त आवासीय शिक्षा दी जाएगी। ऐसी बच्चियों की शादी के लिए अभी से उनके बैंक खाते में 51 हजार रुपये जमा कराए जाएंगे।

वोकेशनल स्टडीज के छात्रों को सरकार टैब भी उपलब्ध कराएगी। यह लाभ कोविड की पहली लहर और दूसरी लहर के दौरान अनाथ हुए बच्चों को मिलेगा।

लेखक चाणक्य वार्ता के उत्तर क्षेत्र प्रभारी हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

हरियाणा सरकार की अन्य महत्वपूर्ण योजनाएं

1. कोरोना काल में मनोहर सरकार ने प्रदेश के सम्पूर्ण विकास के लिए 1,170 करोड़ रुपए की 98 परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास किया।
2. किसानों के हितों को देखते हुए 3 सालों से लगातार फसलों पर एमएसपी बढ़ाने का निर्णय। 2021 में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 16 फसलों पर MSP बढ़ाकर एक बार फिर किसानों को तोहफा दिया है। जिसका सीधा लाभ भी हरियाणा के किसानों को मिलेगा।
3. प्रदेश की प्रत्येक एकड़ कृषि भूमि की जांच कर सॉयल हैल्थ कार्ड बनाए जाएंगे। 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लिए मनोहर सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।
4. हरियाणा में बीजेपी की सरकार ने अपने कार्यकाल में महिलाओं के जीवन को आसान बनाने के लिए उन्हे पुरुषों के बराबर तनख्वाह और रात की शिफ्ट में काम करने का अधिकार दिया है। Nari Shakti New India को स्टार्ट-अप के लिए 83% लोन महिलाओं को मंजूर किए गए हैं।

5जी और कोरोना संक्रमण के बीच संबंधों की हकीकत ?

योगेश कुमार गोयल

पिछले कुछ समय से सोशल मीडिया के माध्यम से 5जी नेटवर्क और कोरोना महामारी के बीच संबंध को लेकर कुछ लोगों द्वारा लगातार भ्रामक संदेश वायरल किए जा रहे हैं, जो जंगल में लगी आग की भांति चारों ओर फैल रहे हैं। ऐसे ही कुछ संदेशों में दावा किया जा रहा है कि 5-जी से इंसानों की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, जिससे ऐसे लोगों के कोरोना संक्रमित होने की आशंका बढ़ जाती है जबकि कुछ संदेशों में कहा गया है कि 5-जी तकनीक की मदद से वायरस को फैलाया जा रहा है या किसी तरह ट्रांसमिट किया जा रहा है। हालांकि दूरसंचार विभाग सहित लगभग सभी जिम्मेदार संस्थाओं द्वारा निरन्तर इस तरह के संदेशों का खंडन किया जा रहा है। इस तरह के संदेशों में देश में कोरोना वायरस के तेजी से बढ़ते संक्रमण और 5जी टेस्टिंग की कड़ियां आपस में जोड़कर लोगों में भ्रम फैलाने के लिए बढ़-चढ़कर दावे किए जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि कोविड-19 की दूसरी लहर का कारण 5जी मोबाइल टावरों का परीक्षण ही है और इन परीक्षणों के दौरान निकलने वाले रेडिएशन को ही कोरोना की दूसरी लहर बताया जा रहा है।

वायरल दावों में कहा जा रहा है कि भारत में कोरोना की जो दूसरी लहर आई है, जिसमें इतनी बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो रही है, उसका कारण कोई बीमारी नहीं बल्कि 5जी टावर की टेस्टिंग से निकलने वाला खतरनाक रेडिएशन है, जिससे कोरोना संक्रमण तेजी से फैल रहा है। एक वायरल ऑडियो में तो कोरोना से हो रही मौतों को 5जी टेस्टिंग का नाम देते हुए दावा किया गया है कि इसी वजह से लोगों का गला सूख रहा है और मई तक 5जी की टेस्टिंग हो जाने के बाद मौतें भी रूक जाएंगी। हालांकि वायरल ऑडियो की पड़ताल करने पर पीआईबी फैक्ट चैक टीम द्वारा इस दावे को पूरी तरह फर्जी पाया गया, जिसके बाद पीआईबी फैक्ट चेक द्वारा लोगों से आग्रह किया गया कि कोरोना काल में ऐसे फर्जी संदेश साझा कर भ्रम न फैलाएं। ऐसे ही भ्रामक दावों के चलते कुछ देशों में तो असामाजिक तत्वों द्वारा कुछ मोबाइल टावरों को जलाया भी गया है, ब्रिटेन में तो वोडाफोन के एक 5जी टावर पर किसी ने पैट्रोल बम तक फैंक दिया।

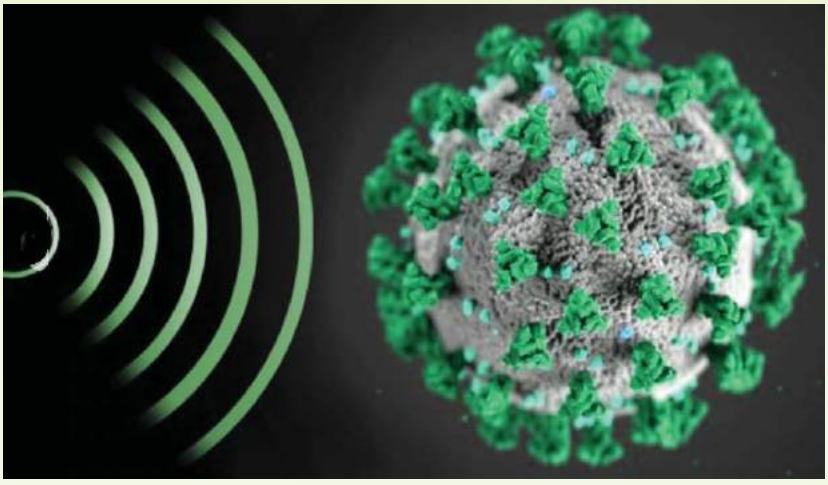

''5जी आधुनिक युग की मोबाइल फोन टैक्नोलॉजी है, जिसके जरिये संचार और डाटा मौजूदा 4जी से करीब 20 गुना अधिक तीव्र गति से संभव हो सकेगा। दरअसल आज के तकनीकी युग में सूचनाओं का तीव्र आदान-प्रदान समय की मांग है और 5जी तकनीक के कारण उच्च इंटरनेट स्पीड के चलते रक्षा, चिकित्सा, शिक्षा इत्यादि लगभग सभी क्षेत्रों में एक क्रांति सी आ जाएगी।''

5जी आधुनिक युग की मोबाइल फोन टैक्नोलॉजी है, जिसके जरिये संचार और डाटा मौजूदा 4जी से करीब 20 गुना अधिक तीव्र गति से संभव हो सकेगा। दरअसल आज के तकनीकी युग में सूचनाओं का तीव्र आदान-प्रदान समय की मांग है और 5जी तकनीक के कारण उच्च इंटरनेट स्पीड के चलते रक्षा, चिकित्सा, शिक्षा इत्यादि लगभग सभी क्षेत्रों में एक क्रांति सी आ जाएगी। अब सवाल यह है कि आखिर 5जी तकनीक से कोरोना के प्रसार की अफवाहों को दुनियाभर में क्यों बल मिला? दरअसल मौजूदा 3जी, 4जी की तुलना में 5जी तकनीक में जिस स्पैक्ट्रम बैंडविथ और मिलीमीटर वेव्स का इस्तेमाल किया जाता है, उसमें ऊंची फ्रीक्वेंसी की तरंगें होती हैं और कवरेज के लिए ज्यादा टावर और छोटे-छोटे सेल जैसे बहुत घने नेटवर्क की आवश्यकता होती है। जानकारों के मुताबिक 4जी की तुलना में 5जी में हर सेल में 5-10 गुना ज्यादा छोटे सेल की जरूरत होती है और ज्यादा टावर, ज्यादा एंटीना तथा ज्यादा छोटे-छोटे सेल का सीधा सा अर्थ है कि इनसे निकलने वाली रेडियो तरंगों से लोगों का सम्पर्क भी ज्यादा होगा। दुनियाभर में अभी तक सौ से भी ज्यादा टेलीकॉम कम्पनियां 5जी टैक्नोलॉजी की शुरूआत व्यावसायिक रूप से कर चुकी हैं और लोगों के स्वास्थ्य पर इस तकनीक के प्रभाव को लेकर विश्वभर में कई अध्ययन भी किए जा चुके हैं। हालांकि कुछ अध्ययनों में वैज्ञानिकों ने इसके स्वास्थ्य पर नुकसान का दावा किया है लेकिन कई अन्य अध्ययनों तथा अमेरिका की नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अध्ययन में कहा गया है कि 5जी से लोगों की सेहत पर कोई नुकसान नहीं होता। चूंकि कुछ अध्ययनों में इसके सेहत पर प्रभावों का जिक्र किया गया है, इसीलिए 5जी तकनीक को कोरोना संक्रमण से जोड़कर कुछ लोगों ने भ्रामक संदेश वायरल करने शुरू कर दिए।

मोबाइल और दूरसंचार सेवा कम्पनियों के संगठन 'सेल्यूलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीओएआई) द्वारा पहले ही इस तरह के वायरल दावों को गलत और झूठा बताया

जा चुका है और अब दूरसंचार विभाग ने भी लोगों से ऐसे भ्रामक, आधारहीन, असत्य और फर्जी संदेशों से बचने तथा इस तरह की अफवाहों पर ध्यान नहीं देने की अपील करते हुए स्पष्ट किया है कि 5जी तकनीक और कोरोना महामारी के प्रसार के बीच कोई संबंध नहीं है। दूरसंचार विभाग के अधिकारिक बयान में वायरल संदेशों को पूरी तरह बेबुनियाद बताते हुए कहा गया है कि इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है कि देश में 5जी ट्रायल या नेटवर्क से कोविड-19 बीमारी फैल रही है। विभाग का यह भी कहना है कि भारत में अभी तक 5जी नेटवर्क कहीं भी शुरू नहीं हुआ है, इसलिए भी यह दावा आधारहीन है कि भारत में कोरोना वायरस 5जी के परीक्षण या इसके नेटवर्क के कारण फैला है। दूरसंचार विभाग के मुताबिक मोबाइल टावरों से बहुत कम क्षमता की नॉन-आयोनाइजिंग रेडियो तरंगें उत्सर्जित होती हैं, जो मनुष्यों सहित अन्य जीवों को भी किसी भी प्रकार की हानि पहुंचाने में अक्षम होती हैं।

सीओएआई के महानिदेशक एस पी कोचर का वायरल अफवाहों को लेकर कहना है कि डब्ल्यूएचओ भी अपनी एडवाइजरी में स्पष्ट कर चुका है कि 5जी तकनीक और कोविड-19 के बीच कोई लेना-देना नहीं है। दरअसल डब्ल्यूएचओ द्वारा स्पष्ट तौर पर कहा जा चुका है कि जिन देशों में अभी 5जी टेस्टिंग नहीं हो रही है, उन देशों में भी कोरोना फैल रहा है जबकि आस्ट्रेलिया, अमेरिका, दक्षिण कोरिया, जर्मनी, स्विट्जरलैंड जैसे देशों में 5जी चल रहा है लेकिन वहां फिलहाल कोरोना के मामले भारत से कम हैं, इसलिए 5जी टेस्टिंग से कोरोना संक्रमण के प्रसार के दावों का कोई आधार नहीं है।

दरअसल कोरोना वायरस संक्रमण ईरान सहित कुछ ऐसे देशों तथा ब्रिटेन के ऐसे शहरों में भी फैला, जहां उस समय तक 5जी तकनीक की शुरूआत भी नहीं हुई थी। अगर भारत की ही बात करें तो कोरोना की दूसरी लहर का प्रकोप ऐसे कई इलाकों में भी देखा गया है, जहां 5जी टेस्टिंग शुरू ही नहीं हुई है। सीओएआई महानिदेशक कोचर के मुताबिक दुनिया में पहले ही कई देशों में 5जी नेटवर्क शुरू हो चुके हैं और लोग सुरक्षा के साथ इन सेवाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं, इसलिए इन अफवाहों में कोई सच्चाई नहीं है और जरूरी है कि लोग इस तरह की आधारहीन गलत सूचनाओं पर ध्यान न दें।

केवल दूरसंचार विभाग और सीओएआई ही नहीं बल्कि दुनियाभर के वैज्ञानिक इस तरह दावों की निंदा कर रहे हैं, जिनमें कहा जा रहा था कि 5-जी तकनीक की टेस्टिंग के कारण कोविड-19 संक्रमण फैल रहा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि कोरोना वायरस और 5-जी तकनीक के बीच संबंध जैविक रूप से संभव ही नहीं है। 5-जी का इस्तेमाल मोबाइल फोन नेटवर्क के लिए किया जाता है, जो रेडियो वेब पर काम करता है। वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य की तेज किरणों और मेडिकल एक्स-रे जैसी हाई फ्रीक्वेंसी वाली तरंगों से शरीर की कोशिकाओं को नुकसान होता है लेकिन 5-जी तकनीक तथा दूसरी मोबाइल फोन तकनीकों में जिन रेडियो तरंगों का इस्तेमाल होता है, वे इलैक्ट्रोमैग्नेटिक स्पैक्ट्रम में कम फ्रीक्वेंसी वाली तरंगें होती हैं, जिनसे शरीर की कोशिकाओं को नुकसान नहीं होता। दुनियाभर के वैज्ञानिकों का यही कहना है कि 5जी मोबाइल टावर नॉन आयोनाइजिंग रेडियो फ्रीक्वेंसी छोड़ते हैं, जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं है। वाचडॉग की भूमिका निभाने वाली संस्था 'इंटरनेशनल कमीशन ऑन नॉन-आयोनाइजिंग रेडिएशन प्रोटेक्शन' (आईसीएनआईआरपी) भी लंबे अध्ययन के बाद 5जी तकनीक के इस्तेमाल से स्वास्थ्य को खतरे संबंधी दावों को खारिज कर चुकी है।

इंग्लैंड की यूनिवर्सिटी ऑफ रीडिंग में सेल्यूलर माइक्रोबायलॉजी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा. सिमोन क्लार्क के अनुसार 5-जी तकनीक का लोगों की प्रतिरोधक क्षमता कम होने और कोरोना संक्रमण से कोई संबंध नहीं है। उनका कहना है कि शक्तिशाली रेडियो तरंगों से गर्मी अवश्य उत्पन्न होती है और ऐसी शक्तिशाली रेडियो तरंगें मनुष्य की शारीरिक क्रियाओं को प्रभावित भी कर सकती हैं लेकिन ऐसा तभी संभव है, जब इनसे शरीर का तापमान बढ़ता हो। डा. सिमोन के मुताबिक 5-जी तकनीक से इतनी ज्यादा गर्मी भी उत्पन्न नहीं होती, जिसका आम लोगों पर कोई असर हो। दरअसल 5-जी रेडियो तरंगें छोटी होती हैं और इतनी शक्तिशाली नहीं होती कि उनका प्रभाव लोगों की प्रतिरोधक क्षमता पर पड़े। एशिया के विभिन्न देशों के इंजीनियरों को 5जी नेटवर्क का प्रशिक्षण देने वाले एएलटीटीसी के अधिकारियों के मुताबिक 5जी की तरंगों से कोरोना वायरस नहीं चिपक सकता, इसलिए इन तरंगों के माध्यम से कोविड-19 के प्रसार का कोई संबंध नहीं है।

ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी में पेडियाट्रिक्स विभाग के प्रोफेसर एडम फिन का भी यही मानना है कि 5-जी तकनीक की मदद से किसी भी वायरस को ट्रांसमिट करना असंभव है। वह कहते हैं कि मोबाइल फोन और इंटरनेट में काम आने वाली इलैक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगें तथा वायरस, दोनों अलग-अलग चीजें हैं जबकि सर्वविदित तथ्य यही है कि कोरोना वायरस एक संक्रमित व्यक्ति से दूसरे तक ट्रांसमिट होता है और इसे लैब में भी बनाया जा सकता है लेकिन 5-जी तकनीक से इसके प्रसार का कोई संबंध संभव ही नहीं है। यूके के डिजिटल, कल्चर, मीडिया और स्पोर्ट्स विभाग का भी यही मानना है कि वायरस किसी जीवित कोशिका के बाहर लंबे समय तक नहीं रह पाते, इसलिए वे एक रास्ता तलाशते हैं तथा प्राय: खांसी अथवा छींक के बाद निकले ड्रॉपलेट्स के माध्यम से ही दूसरों तक पहुंचते हैं और इंसान या जानवरों की कोशिकाओं में प्रवेश के बाद वहां अपनी संख्या बढ़ाते हैं, जिससे संक्रमण होता है। हैरानी की बात है कि दुनियाभर के वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों द्वारा कोरोना संक्रमण के प्रसार और 5जी तकनीक के संबंध को लेकर स्थिति लगातार स्पष्ट करने के बावजूद अफवाहें थमने का नाम नहीं ले रही।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार तथा स्तंभकार हैं और 31 वर्षों से पत्रकारिता में निरन्तर सक्रिय हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

भारत के संविधान की जन्मकथा-19

लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खीदा'

स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू और भारत के संविधान का प्रारूप तैयार कर उसे पूर्णता प्रदान करने वाली समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव रामजी उपाख्य बाबा साहेब आंबेडकर इन दोनों की चिंतन धारा, विचारधारा एवं कार्यशैली एक-दूसरे से मेल नहीं खाती थी। संविधान सभा के गठन से पूर्व, संविधान की निर्माण प्रक्रिया के समय, संविधान को स्वीकृत करते समय एवं अंततः उसके क्रियान्वयन के तौर-तरीके को लेकर दोनों के मतभेद स्पष्ट दिखाई देते थे। पं. नेहरू की राजनैतिक चतुराई और डॉ. आंबेडकर की बौद्धिक ऊंचाई, इन दोनों कारणों से दोनों का अपना-अपना स्थान अडिग था। पं. नेहरू की चतुराई संविधान के साथ खिलवाड़ कर अपने दलगत स्वार्थ एवं सत्ता हित में लगी रहती थी, तो दूसरी ओर डॉ. आंबेडकर की ऊंचाई संविधान की गरिमा को बनाए रखने के लिये सच्चाई के साथ अपनी बात रखकर उसके दूरगामी परिणामों एवं दुष्परिणामों को बताती रहती थी।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अंग्रेज यह निर्णय ले चुके थे कि अब उन्हें भारत छोड़ कर अपने देश की स्थितियों को सुधारने के काम को प्राथमिकता देनी है। कांग्रेस इस अवसर पर सत्ता के हस्तांतरण को ही अपनी सफलता मान कर उस दिशा में कार्यरत थी, जबकि डॉ. आंबेडकर अपना लक्ष्य 'पूर्ण स्वतंत्रता' ही हो, ऐसा कहते थे।

अहमदाबाद में 30 नवंबर 1945 के दिन अपने एक भाषण में वे साफ-साफ कहते हैं, ''क्या कोई कभी कह सकता है कि देश को स्वराज नहीं चाहिए। मैं पूर्ण स्वराज चाहता हूं पर कांग्रेस ने पिछले 50 वर्षों में जो हालात पैदा किए, वे पहले कभी न थे। कांग्रेस नेताओं ने मुस्लिमों में विश्वसनीयता खो दी है। 6 करोड़ अछूत पहले से ही कांग्रेस में विश्वास नहीं रखते हैं। यह न होता यदि कांग्रेस नेता व्यवहारकुशल और वास्तविक रहे होते। हिंदू बहुसंख्यकों को इस बारे में सोचना चाहिए। स्वराज हमारे बहुत पास दिख रहा है। ब्रिटिश सरकार अधिक दिनों तक यहां नहीं टिकने वाली है। पर हम अभी तुरंत उन्हें यहां से नहीं हटा सकते हैं, क्योंकि हम हिन्दू एक साथ नहीं हैं।

मैं यह बात जानते हुए कि अहमदाबाद कांग्रेस का गढ़ है, जानने के बाद भी यह बात कह रहा हूं। मैं चाहता हूं कि यह बात कांग्रेस के हाई कमांड तक पहुंच जाए।''

भारत की अनुसूचित जाति, दलित समाज आदि को भारतीय समाज की मुख्य धारा का अंग मानते हुए उनका विचार करना चाहिये। यह बात तत्कालीन कांग्रेस के नेतृत्व को स्वीकार करनी चाहिये, ऐसा उनका मानना था। अपने चुनाव प्रचार के अवसर पर मुंबई में सन् 1946 की 17 फरवरी के भाषण में उन्होंने स्पष्ट किया-

''अनुसूचित जाति वाले मुस्लिमों की तरह भूमि का विभाजन नहीं मांग रहे। वे केवल बराबरी का दर्जा मांग रहे हैं। सैकड़ों सालों से उन्हें दबाया गया पर अब वे यह नहीं चाहते। वे बराबर का राजनीतिक अधिकार मांगते हैं। यदि कांग्रेस उनकी मांगे अनुचित मानती है, तो इस मामले को अंतरराष्ट्रीय प्राधिकरण में भेज दे और वे उसका निर्णय मानेंगे।''

उपरोक्त पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए यदि संविधान निर्माण की प्रक्रिया पर हम गौर करें, तो यह साफ दिखाई देता है कि संविधान का प्रारूप या मसौदा तैयार करने से लेकर उसे अंतिम रूप देने तक जितना चिंतन और परिश्रम डॉ. आंबेडकर के द्वारा किया गया, उसे देखते हुए उन्हें संविधान निर्माता का दर्जा देना स्वाभाविक ही था। संविधान के प्रति उनका भावनात्मक लगाव होना भी उतना ही स्वाभाविक था। संविधान को आत्मार्पित करने से पूर्व 25 नवंबर 1949 के अपने समापन भाषण में उसी भावावेग में उन्होंने चेतावनी भी दी थी कि संविधान चाहे जितना अच्छा हो, वह यदि गलत व्यक्तियों के हाथ में या अधिकार में जाएगा, तो अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाएगा। पं. नेहरू के अधिकार में होने के कारण वे इसी बात से चिंतित थे कि संविधान की मूल भावना से खिलवाड़ होने की संभावना बढ़ गई है। इसी संदर्भ में तथाकथित दलित समाज को अनुसूचित श्रेणी में रख कर अनुच्छेद 334 के अंतर्गत आगामी 10 वर्षों तक उन्हें शिक्षा, नौकरी आदि में आरक्षण की सुविधा दी जाए, ऐसा प्रावधान रखा गया। यह 10 वर्ष की अवधि आरक्षण का लाभ उठाकर इस समाज को स्वावलंबी बन पाने के लिये पर्याप्त होगी, ऐसा उनका मानना था। आरक्षण की व्यवस्था रखने के मूल में जो कारण था, उसका विश्लेषण डॉ. आंबेडकर की दृष्टि से यह था कि भारत के हिन्दू समाज में कर्म के आधार पर जो वर्ण व्यवस्था समाज में प्रचलित थी, वह कर्म से हट कर वंशवाद की ओर मुड़ गयी थी। इसी के परिणाम स्वरूप ऊँच-नीच, छूत-अछूत, अवर्ण-सवर्ण एवं दलित-उन्नत आदि विकारों से तथा विभाजन से समाज ग्रसित होने लगा। इस सामाजिक विकार को दूर करने के लिये दलित वर्ग को संविधान में दी गई आरक्षण की सुविधा को कांग्रेस अर्थात सत्तासीन दल ने गंभीरता से लिया हो, ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा था। डॉ. आंबेडकर इसका कोई और उपाय खोजने लगे। उन्होंने हिन्दू समाज की इस विकार ग्रस्त वर्ण व्यवस्था की चार दीवारी

''बौद्ध धर्म ने भारतीय समाज में लोकतंत्र की स्थापना एवं समाजवादी समाज रचना का मार्ग प्रशस्त किया। यह एक जटिल समस्या है कि इतना उच्च स्थान प्राप्त करने के बावजूद भारत से बौद्ध धर्म लुप्त कैसे हो गया ? सन् 274 ई.पू. तक बौद्ध धर्म की दशा बताने के लिए बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। हालांकि यह देखा गया है कि सम्राट अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म अपनी लोकप्रियता के शिखर पर था। यह बहुत कष्टप्रद स्थिति है कि आखिर इतने महान् एवं लोकप्रिय धर्म ने भारत में अपना अस्तित्व कैसे खो दिया ?''

से तथाकथित शूद्रों को बाहर निकालने की चर्चा आरंभ कर दी। भारत में विद्यमान सभी मत-पंथ-सम्प्रदाय आदि का गहन अध्ययन करने के बाद उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि इस्लाम एवं इसाई मत-पंथ की जड़े भारत में नहीं हैं। अत: इन दो मतों में मतांतरित होने की बात स्पष्ट शब्दों में उन्होंने नकार दी। वैदिक धर्म, आर्य संस्कृति, सिख संप्रदाय, शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध आदि पंथ तथा अन्य कई पूजा पद्धतियों का उन्होंने अध्ययन किया। बौद्ध दर्शन की ओर उनका झुकाव बढ़ने लगा।

भारत की स्वाधीनता के लगभग 170 दिन बाद श्रीलंका (सिलोन) को भी 4 फरवरी 1948 के दिन स्वाधीन कर दिया गया था। भारत में अपना संविधान लागू होने के प्राय: 130 दिन बाद 6 जून 1950 के दिन कोलंबो में आयोजित बौद्धों के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. आंबेडकर ने अपने भाषण में अपने अध्ययन के आधार पर यह बात कही थी—

''बौद्ध धर्म ने भारतीय समाज में लोकतंत्र की स्थापना एवं समाजवादी समाज रचना का मार्ग प्रशस्त किया। यह एक जटिल समस्या है कि इतना उच्च स्थान प्राप्त करने के बावजूद भारत से बौद्ध धर्म लुप्त कैसे हो गया? सन् 274 ई.पू. तक बौद्ध धर्म की दशा बताने के लिए बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। हालांकि यह देखा गया है कि सम्राट अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म अपनी लोकप्रियता के शिखर पर था। यह बहुत कष्टप्रद स्थिति है कि आखिर इतने महान् एवं लोकप्रिय धर्म ने भारत में अपना अस्तित्व कैसे खो दिया?''

भारत ने जब लोकतंत्र को अपनाया है तो उसे सफलतापूर्वक टिकाए रखना हो तो बौद्ध दर्शन ही सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होगा ऐसी उनकी धारणा बनती जा रही थी। अतीत में हुई उसकी असफलता की कारण मिमांसा करने के क्रम में उन्हें जो बोध हुआ वह उन्होंने इन शब्दों में कोलंबो में दिये अपने भाषण में कहा—

''बौद्ध धर्म को सर्वाधिक क्षति मुस्लिम आक्रमण से हुई। उन्होंने बौद्ध प्रतिमाओं को तोड़ा एवं भिक्षुओं की हत्याएं की। उन्होंने गलती से नालंदा विश्वविद्यालय को बौद्ध धर्म का किला समझ लिया एवं भिक्षुओं को सैनिक मानते हुए बड़ी संख्या में उनका कत्लेआम किया। कुछ भिक्षु जो इस नरसंहार से बचने में सफल हुए, वे पड़ोसी देशों-नेपाल, तिब्बत और चीन भाग गए।''

इसी संदर्भ में विगत एक हजार वर्ष के इतिहास को संजोते हुए उन्होंने कहा, ''भारत में बौद्ध भिक्षुओं की कमी के कारण बौद्ध धर्म का पतन हुआ। बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए बाद में कुछ बौद्धों द्वारा एक अन्य भिक्षु वर्ग को खड़ा करने का प्रयास किया गया, परंतु उनके प्रयास निष्फल साबित हुए। ऐसा हिन्दू धर्म में नहीं हुआ। ब्राह्मण का पुत्र अपने जन्म के साथ ही पुजारी होता है। अत: उनके धर्म की रक्षा के लिए कोई अलग पुजारी समुदाय आवश्यक नहीं है। इसी कारण हिन्दू धर्म मुस्लिम आक्रमण एवं कत्लेआम के बावजूद भी बना रहा।''

ब्राह्मणों को बौद्ध दर्शन का विरोधी होने की बात करने वालों को डॉ. आंबेडकर ने अपने इस भाषण में कही हुई इस बात पर भी गौर करना चाहिए कि ''बौद्ध साहित्य के अध्ययन के दौरान मैंने पाया कि बुद्ध के 90 प्रतिशत अनुयायी ब्राह्मण थे। ब्राह्मण बुद्ध के पास विचार-विमर्श एवं शास्त्रार्थ हेतु आया करते थे और पराजित होने पर बुद्ध के अनुयायी हो जाते एवं अंतत: वे बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते। बौद्ध साहित्य ऐसे आख्यानों से भरा पड़ा है। अत: ऐसा कैसे हो गया कि बहुसंख्यक ब्राह्मणों के मध्य फला-फूला बौद्ध धर्म बाद में स्वयं ब्राह्मणों द्वारा तबाह कर दिया गया हो?''

इस भाषण के अंत में उन्होंने प्रखरता के साथ अपने मन की इस अवधारणा को पुष्ट किया कि भारत का लोकतंत्र भारत में निर्मित तथा पड़ोसी देशों में प्रसारित बौद्ध दर्शन के सहारे ही चलेगा एवं बढ़ेगा। बौद्ध दर्शन के विषय में दिये जाने वाले कुछ मनगठंत सिद्धांतों का भी उन्होंने बड़ी दृढ़ता के साथ खंडन करते हुए कहा था—

''मैं कई लोगों की इस राय से सहमत नहीं हूं कि शंकराचार्य के खंडन-मंडन के कारण भारत से बौद्ध धर्म का खात्मा हुआ। यह बात इस तथ्य के प्रतिकूल है कि उनकी मृत्यु के कई शताब्दियों बाद तक बौद्ध धर्म का अस्तित्व रहा। मेरी राय में शंकराचार्य स्वयं बौद्ध थे।

निसंदेह भारत में 'वैष्णव पंथ' और 'शैव पंथ' के उदय के कारण बौद्ध धर्म का पतन हुआ, उन्होंने बौद्ध धर्म की कई अच्छी शिक्षाओं को आत्मसात कर लिया। आज हिन्दू धर्म अपने काफी परिवर्तित रूप में है। उस हिन्दू धर्म ने जो पहले हिंसा की शिक्षा देता था, अहिंसा की शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया। यह बौद्ध धर्म की नकल है।''

अपना भारत सदा रहा है
रचनाधर्मी देश
हस्ती कभी न मिट पाने की
यही है बात विशेष।।
भारत की जल-वायु-मिट्टी में
जिसकी जड़-मूल।
वही सदा देते हैं जग को
कल्याणी फल-मूल।।
आओ! जरा इसे हम देखें
जग हमसे क्या पाता—
परिवारों का ताना-बाना
वसुधा-कुटुम्बकम्-सुकल्पना,
विश्वमार्य कृण्वंतु घोषणा,
वेद विश्वविद्यालय गढ़ना,
धर्म-बोधिनी नव विपश्यना,
आत्म-दर्शी स्वाध्याय प्रेरणा,
विश्वव्यापिनी कृष्ण चेतना,
मठ-मंदिर सेवालय बनना,
गीता ज्ञान सिखाए जीना,
हित्-साधिनी विज्ञान योजना,
योगाधारित जीवन रचना,
गायत्री-परिवार वंदना,
मुनीजनों की शांति कामना,
संत-साध्विगण करें प्रार्थना,
विविध पंथ, बहुविध उपासना,
हरी-कथामृत हिन्दु भावना,
सर्व स्पर्शिणी संघ-साधना,
अतुलनीय बहु जन संगठना।

क्रमश:

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं स्तंभकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

कृष्णानंद सागर

नमक आंदोलन
कांग्रेस और संघ : एक सिंहावलोकन -25

देशवासियों के मन में जो स्वातंत्र्य का ज्वार उमड़ रहा था, उसके अनुकूल जब कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वतंत्रता' का प्रस्ताव पारित कर दिया, तो यह भी आवश्यक हो गया कि वह उसके लिये कोई उचित कार्यक्रम जनता के सामने रखे। लेकिन किसी को कोई योग्य कार्यक्रम सूझ नहीं रहा था।

लुई फिशर के अनुसार, ''रवींद्रनाथ ठाकुर, जो उन दिनों साबरमती के आस-पास थे, 18 जनवरी को गांधी जी से मिलने आए। उन्होंने (गांधी जी से) पूछा कि 1930 में गांधी जी देश को क्या देने वाले हैं। गांधी जी ने उत्तर दिया—''मैं रात-दिन व्यग्रतापूर्वक सोच रहा हूं, परंतु मुझे घोर अंधकार में प्रकाश की कोई किरण नहीं दिखायी देती।'' (गांधी की कहानी, पृष्ठ-96)

दस वर्ष पूर्व उन्होंने मुल्ला-मौलवियों द्वारा आरंभ किए गए 'खिलाफत आंदोलन' को असहयोग आंदोलन का नाम देकर जो आंदोलन चलाया था, उसका जो हश्र हुआ, वह उनके सामने था। उसके परिणामस्वरूप 1921 में तथा उसके बाद भी 1922, 1923 व 1924 में जो व्यापक हिंसा हुई, वह उनके सामने थी। इसलिए वे अब सत्याग्रह के ऐसे रूप की तलाश में थे, जिसमें हिंसा की गुंजाइश न हो। काफी सोच-समझ के बाद उनके ध्यान में नमक के नाम पर सत्याग्रह करने की बात आई।

भारत का विदेश व्यापार प्राचीनकाल से ही बहुत उन्नत था। यहां से निर्यात अधिक होता था और आयात कम। इसीलिए भारत अत्यंत समृद्ध था और सोने की चिड़िया कहलाता था। ईस्ट इंडिया कंपनी भी भारत से कच्चा माल जहाजों में भरकर इंग्लैंड ले जाती थी और इंग्लैंड से तैयार माल उन्हीं जहाजों में भरकर वह भारत लाती थी। किंतु इंग्लैंड में तैयार माल इतना नहीं होता था कि उससे पूरा जहाज भर जाए। माल कम होने के कारण वह काफी हल्का और खाली रहता था। हल्का जहाज चलते समय समुद्री तूफानों में स्थिर नहीं रह पाता और डूब जाता है।

अत: लिवरपूल के बंदरगाह पर बहुत से जहाज इकट्ठे हो गए, जिनमें माल कम होने के कारण उनका आवश्यक वजन कम था और इसलिए उन्हें रवाना नहीं किया जा सकता था। शुरू-शुरू में उसका हल यह निकाला गया कि जितना कम वजन होता था, उतने वजन की उसमें समुद्र तट की रेत भर दी जाने लगी और जहाज भारत पहुंचने लगे। माल के साथ रेत भी यहां उतार दी जाती। कोलकाता की चौरंगी सड़क इसी रेत से तैयार हुई थी। इस सड़क से पहले वहां नहर थी जो कि हुगली से काली घाट मंदिर तक थी। उस नहर को इस रेत से भर दिया गया।

बाद में रेत की बजाए इंग्लैंड से नमक भेजा जाने लगा। लेकिन भारतीय बाजारों में अंग्रेजी नमक चल नहीं पाया, क्योंकि उसकी तुलना में भारतीय नमक बहुत सस्ता था। भारत में अंग्रेजी नमक की बिक्री कैसे की जाए, इसके उपाय ढूंढने के लिए 1836 में 'नमक कमीशन' बनाया गया। इस कमीशन ने अंग्रेजी नमक की बिक्री के लिये भारतीय नमक पर कर (टैक्स) लगाने की सिफारिश की और कर लगा दिया गया।

समुद्र तटों से नमक इकट्ठा करने और बनाने के लिए जगह-जगह ठेकेदार तय कर दिए गए। इन ठेकेदारों के अतिरिक्त कोई भी सीधे तट से नमक नहीं ले सकता था, ऐसा कानूनी प्रावधान कर दिया गया। 1930 में भी यह कानून लागू था।

गांधी जी ने इसी को मुद्दा बनाया और सरकार से कहा कि वह 'नमक कर' हटा दे। यदि नमक कर नहीं हटाया गया तो मैं स्वयं समुद्र तट पर जाकर नमक बनाऊँगा और इस प्रकार कानून तोड़ूंगा। इसे उन्होंने नाम दिया 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' अर्थात् सरकारी आज्ञा का विनयपूर्वक उल्लंघन।

इससे पूर्व 14, 15 और 16 फरवरी 1930 को कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक साबरमती में हुई थी। कार्यसमिति ने गांधी जी को यह अधिकार दिया था कि ''वे जब, जिस तरह और जहां तक उचित समझें, 'सविनय अवज्ञा' जारी कर दें।'' इसके कुछ समय बाद अहमदाबाद में कांग्रेस महासमिति की बैठक हुई। महासमिति ने इस अधिकार का और भी विस्तार करके सविनय अवज्ञा का आंदोलन चलाने की सत्ता भी उन्हें सौंप दी थी।

अब जब उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का स्वरूप नमक कानून तोड़ने के रूप में तय कर लिया तो उसके क्रियान्वयन का कार्यक्रम भी उन्होंने स्वयं ही बना लिया। उन्होंने तय किया कि वे 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से आश्रम के 79 स्वयंसेवकों को साथ लेकर चलेंगे और समुद्र तट पर दाण्डी नामक स्थान पर पहुंच कर नमक कानून को तोड़ेंगे।

निश्चित दिन वे साबरमती से अपने साथियों को लेकर चल पड़े। साबरमती से दाण्डी लगभग 240 मील था और वह सूरत जिले में था। उन्हें रास्ते में 24 दिन लगे। प्रतिदिन वे लगभग 10 मील पैदल चलते थे। रास्ते में सर्वत्र उनका स्वागत होता था। कई लोग उनके साथ भी चल पड़ते थे।

5 अप्रैल को वे दाण्डी पहुंचे। सुबह की प्रार्थना के बाद सब लोग समुद्र तट पर गए। गांधी जी ने समुद्र में एक डुबकी लगायी और किनारे पर लौट आए। तदुपरांत किनारे पर समुद्री लहरों का छोड़ा हुआ कुछ नमक हाथ में उठाया।

इस प्रकार उन्होंने ब्रिटिश सरकार के उस कानून को तोड़ दिया, जिसके अनुसार सरकारी ठेके से न लिया हुआ नमक रखना अपराध था। इसके बाद उन्होंने एक वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसमें कहा कि—

''नमक कानून विधिवत् भंग हो गया है। अब जो कोई सजा भुगतने को तैयार हो, वह जहां चाहे और जब सुविधा देखे, नमक बना सकता है।''

इसके एक महीना बाद 5 मई को दाण्डी के पास के ही एक गांव कराड़ी में गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें यरवदा सेंट्रल जेल ले जाया गया।

परिणाम स्वरूप 6 अप्रैल से देश में एक कोने से दूसरे कोने तक आंदोलन फैलने लगा। बड़े नगरों में बड़ी-बड़ी सभाएं हुईं। कराची, पुणे, पेशावर, कलकत्ता, मद्रास और शोलापुर में इस दृष्टि से काफी गरमी रही।

हमें स्मरण होगा कि इससे दस वर्ष पूर्व असहयोग आंदोलन के समय गांधी जी ने कहा था कि मैं एक वर्ष में स्वराज्य दिला दूंगा। इस बार भी उन्होंने कुछ ऐसी ही बात कही, पर अब कोई समय सीमा नहीं बोली। दाण्डी यात्रा शुरू करने से पहले 27 फरवरी को उन्होंने एक लेख लिखा—'मेरे गिरफ्तार होने पर'। इस लेख में उन्होंने लिखा—''पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए अहिंसा में धार्मिक विश्वास रखने वाला एक-एक स्त्री-पुरुष इस गुलामी में अब नहीं रहेगा। या तो मर मिटेगा, या कारावास में बंद रहेगा।'' (कांग्रेस का इतिहास, खंड-1, पृष्ठ-303)

इसके बाद दाण्डी यात्रा के दौरान एक स्थान पर उन्होंने कहा—'स्वराज्य नहीं मिला तो या तो रास्ते में मर जाऊँगा या आश्रम के बाहर रहूँगा। नमक-कर न उठा सका तो आश्रम लौटने का भी इरादा नहीं है।... अंग्रेजी राज्य ने भारत का नैतिक, भौतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सभी तरह से नाश कर दिया है। मैं इस राज्य को अभिशाप समझता हूं और इसे नष्ट करने का प्रण कर चुका हूँ।'' (कांग्रेस का इतिहास, खण्ड-1, पृष्ठ-306)

गांधी जी के इस प्रकार के उग्र कथनों से लोगों को यह लगने लगा कि यह आंदोलन वास्तव में स्वराज्य आंदोलन है और इस यज्ञ में हमें भी कुछ समिधा डालनी चाहिए। फलतः यह क्रमशः देशव्यापी होता चला गया।

इस वातावरण का प्रभाव संघ के स्वयंसेवकों पर भी होना स्वाभाविक था, क्योंकि संघ की तो प्रतिज्ञा में ही था कि 'मैं हिन्दू राष्ट्र को स्वतंत्र कराने के लिए संघ का स्वयंसेवक बना हूँ'। अतः कई तरुण स्वयंसेवकों के मन में यह भाव आया कि 'मैं भी सत्याग्रह कर के जेल चला जाऊँ'। ऐसे स्वयंसेवक डॉक्टर जी से इस विषय में चर्चा करते थे, तो डॉक्टर जी उन्हें समझाते थे—

''देशहित में जेल जाने से डरना नहीं चाहिए। लेकिन जेल जाना ही देशभक्ति है, ऐसा समझना भी गलत है। देशभक्ति का सर्वोत्कृष्ट प्रकार है अपने समाज को संगठित करते हुए उसे इतना सुदृढ़ बना देना कि विदेशी सत्ता यहां अपना पैर जमा ही न सके। संघ के माध्यम से हम यही कर रहे हैं। सत्याग्रह और आंदोलन आदि से समाज में तात्कालिक हलचल तो होती है, किंतु इसका कोई स्थायी प्रभाव नहीं होता।''

इतना कहने के बाद वे स्वयंसेवक से पूछते—''जेल में कितना समय रहने की तुम्हारी तैयारी है?'' वह कहता—''कम से कम छः महीने की तो सजा होगी ही।'' डॉक्टर जी कहते—''और अगर सजा दो साल की हो गई तो?'' वह उत्तर देता—''तो दो साल रहूंगा।'' इस पर डॉक्टर जी उसे बड़े प्रेम से कहते—''जब तुम्हारी दो साल तक घर से बाहर रहने की तैयारी है, तो यही दो साल संघ कार्य के लिए लगाओ ताकि संघ कार्य की शीघ्र अभिवृद्धि हो।''

डॉक्टर जी से इस प्रकार की दृष्टि प्राप्त करके कुछ समझदार स्वयंसेवक पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन कर संघ कार्य के विस्तार के लिए नागपुर से बाहर गए। कुछ को डॉक्टर जी ने सत्याग्रह करने की अनुमति भी दी।

स्पष्ट है कि डॉक्टर हेडगेवार जी स्थायी महत्व के संघ कार्य को अस्थायी महत्व के आंदोलन पर न्यौछावर करके समाप्त कर देने को तैयार नहीं थे। वह आंदोलन, जिसका भविष्य कुछ भी पता नहीं। वे आंदोलन को समुद्र की एक लहर की तरह मानते थे, जो किनारे से टकराकर समाप्त हो जाती है।

लेकिन वे आंदोलन के महत्व को कम करके भी नहीं आंकते थे। तात्कालिक ही सही, किंतु यह सामूहिक रूप से जन-जागृति का एक सशक्त माध्यम है, ऐसा वे मानते थे। इसलिए वे उसकी सफलता भी चाहते थे।

अतः वे इस चिंतन में लग गए कि इस आंदोलन का उपयोग संघ कार्य के विस्तार हेतु किस प्रकार से किया जाए। (क्रमशः)

लेखक इतिहासकार व संघ विचारक हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

आचार्य चाणक्य की ये बातें बडे काम आने वाली हैं

रमेश जैन

मूर्ख व्यक्ति का समाज में कोई सम्मान नही होता। विवेकहीन व्यक्ति को पग-पग पर अपमानित होना पडता है और परिहास का पात्र बनना पडता है। इसी प्रकार यौवन के आने पर आदमी कभी-कभी अपना विवेक और आपा खो बैठता है। जवानी में आदमी का जोश और उत्साह तो खूब बढा-चढा होता है, पर वह अपना होश खोए रहता है। उसमें अपनी शक्ति का अहम इस कदर बढ जाता है कि उसे अपने सामने वाला व्यक्ति तुच्छ दिखाई देने लगता है। उसका यह अहंकार ही उसे दुःख पहुंचाता है।

आचार्य चाणक्य का कहना है कि किसी को विवशता में जब दूसरे के घर पर निर्भर रहना पडे तो उसका अपना वर्चस्व समाप्त हो जाता है। उसे दूसरे की कृपा पर निर्भर रहना पडता है। उसकी स्वाधीनता नष्ट हो जाती है। यही उसके दुःखों का सबसे बडा कारण है।

हर एक पर्वत में मणि नही होती और हर एक हाथी में मुक्तामणि नही होती। साधु लोग सभी जगह नही मिलते और हर एक वन में चंदन के वृक्ष नही होते। आचार्य चाणक्य का आशय यही है कि अच्छी चीजें सभी जगह प्राप्त नही होती। विशेष गुण वाली वस्तुओं को विशिष्ट स्थानों में ही खोजना पडता है।

लेखक नवभारत टाइम्स में कार्यरत हैं।

डॉ. रेखा फुल्ल

हाइपरलिपीडेमिया : ज्ञान एवं समाधान

आज के परिपेक्ष में कॉलेस्ट्रॉल का बढ़ना या सामान्य भाषा में कहे तो रक्त वाहिनियो में चर्बी का बढ़ना एक सामान्य समस्या बनती जा रही है। यह व्याधि भी अन्य वर्तमान की समस्याओं जैसे उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर), मधुमेह (डायबिटीज), मोटापा आदि की तरह है, जो जीवनशैली की अनियमतता की वजह से यह उत्पन्न होती है। यह समस्या आगे जाकर दिल का दौरा, हृदय की धमनियों में रुकावट, ब्लड प्रेशर, शुगर, फैटी लिवर को उत्पन्न करती है। इसलिए बहुत आवश्यक हो जाता है की हम इसके बारे में जानकारी प्राप्त करके इससे बचें तथा स्वस्थ जीवन व्यतीत करें। इस लेख में आयुर्वेद के द्वारा इसका निराकरण कैसे किया जाए, यह बताने का प्रयास किया गया है।

Dyslipidemia से हम साधारण भाषा में lipids या cholesterol के बढ़ने को समझ सकते हैं। यह मोम जैसा पदार्थ होता है जो शरीर में बढ़कर वजन बढ़ना, पेट, छाती, जांघो पर चर्बी या मोटापा का बढ़ना, शरीर में खून को संचारित करने वाली धमनियो में बढ़कर दिल की बीमारी, लकवा, लिवर की बीमारियां, पित्ताशय में सूजन जैसी बीमारियां उत्पन्न करता है। सामान्य अवस्था में यही lipid हर कोशिका या हार्मोन के निर्माण के लिए जरूरी होता है। अक्सर भारतीयो में यह बढ़ा हुआ पाया जाता है।

Cholesterol दो प्रकार का होता है

1. HDL : इसे अच्छा cholesterol माना जाता है, जिससे हार्ट अटैक होने की संभावना कम होती है।
2. LDL : जो बढ़ जाने पर शरीर में हानिकारक रूप से इकट्ठा होकर रक्त की धमनियों में जम जाता है वह रक्त को सुचारु रूप से शरीर में प्रवाहित होने से रोकता है। यह कोरोनरी हार्ट डीसीसेस या स्ट्रोक का सबसे बड़ा कारण है।

मानव स्तर में cholesterol का स्तर 150-200mg/dl के बीच होता है। 200mg/dl से अधिक स्तर या इसी तरह triglycerides का 150mg/dl से अधिक स्तर शरीर में विभिन्न रोगों को उत्पन्न करता है। यदि समय-समय पर lipid profile जाँच कराई जाए तो इसकी रोकथाम या इलाज द्वारा जीवन के लिए खतरनाक कई बीमारियों से रक्षा की जा सकती है। सही मात्रा में कोलेस्ट्रॉल जहाँ एक जरुरी तत्व या वरदान है वहीं बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल एक अभिशाप है। Cholesterol से ही शरीर में विटामीन डी का निर्माण सम्यक रूप से होता है व कई अन्य विटामिन शरीर में अवशोषित होते हैं।

Dyslipidema बीमारी का कारण दिनचर्या, ऋतुचर्या व खाने पीने के नियमो का पालन न करना है। यदि कोई व्यक्ति ज्यादा चिकनाई युक्त आहार करता है या नया अनाज (एक साल से कम पुराना) खाता है व कफ बढ़ाने वाले भोजन का निरंतर सेवन करता है, नित्य व्यायाम व अपने अन्य दैनिक सामाजिक आर्थिक कार्यों को करने में प्रवृत्त नहीं होता, हमेशा मनोरंजन व आमोद-प्रमोद में लगा रहता है, तब शरीर में इन lipids का संचय उन लोगों में विशेषत: होता है, जिन्हें बीज दृष्टि (genetic causes) होती है मतलब उनके परिवार में कोई इस रोग से ग्रसित रहा होगा।

इस प्रकार के आहार विहार से जब हमारी जठराग्नि (पाचन शक्ति) मंद हो जाती है तब वह खाने को पूर्ण रूप से न पचा कर शरीर में आम (improper metabolized product) की उत्पत्ति करती है जो हमारे शरीर की पोषक धातुओं विशेषत: मेद धातु को दूषित कर रोग की उत्पत्ति करता है।

कैसे बचाव किया जाए—

चिकित्सा सिद्धांत के अनुसार कारणों का परित्याग,जठराग्नि (पाचन शक्ति) की वृद्धि, आम (undigested metabolized products) का पाचन करने से इस रोग से मुक्ति संभव है।

1. आहार में जौ, गेहूं, चना, हरी मूंग, श्यामक चावल से बनी चोकर युक्त रोटी खाई जाए।
2. हरि सब्जियां, लहसुन, आंवला, परवल, शुण्ठी (सूखी अदरक), हरड़, को खाने में प्रयोग किया जाए।
3. भूख लगने पर ही खाना खाना चाहिए।
4. खाना खाने के बीच या उसके तुरंत बाद पानी न पिएं और खाने के बाद कम से कम 100 कदम टहलना चाहिए या बाएं करवट लेकर लेट सकते हैं।
5. नित्य व्यायाम 30 से 40 मिनट तक करना चाहिए।
6. तली हुई चीजें, ज्यादा शक्कर वाली, माँसाहारी भोजन व दिन में सोने का त्याग करना चाहिए।
7. छाछ एवं खिचड़ी का प्रयोग करना चाहिए।
8. उद्वर्तन मतलब यव, बाजरा, कुलथी को बारीक पीसकर रुक्ष मालिश से भी मेदोरोग में फायदा होता है।
9. ऋतु अनुसार उपलब्ध खाद्यान्न का प्रयोग करना चाहिए।
10. सदवृतों का पालन करना चाहिए।
11. दही, काले चने, मक्का, मैदा का प्रयोग कम करना चाहिए।
12. फलों में आंवला, जामुन, पपीता, नींबू, अनार व बेर का सेवन लाभदायक है।
13. हल्दी, मिर्च, दालचीनी, लहसुन, शुण्ठी,

शेष पृष्ठ 21 पर

प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी

प्राकृत भाषा और उसका वैशिष्ट्य-3

(गतांक से आगे) भाषाओं के सम्बन्ध में यह भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि भाषा की स्थिति विभिन्न युगों में परिवर्तित होती रही है। भावों के संवहन के रूप में जनता का झुकाव जिस ओर रहा या भाषा का प्रवाह उसी रूप में ढलता गया। डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री का मानना है कि विभाषायें ही मध्यकाल में क्षेत्रीय भेदों के आधार पर अपभ्रंश बोलियों के रूप में प्रचलित रहीं। क्षेत्रीय भाषाओं के रूप में आज हम जिन बोलियों को भाषा के रूप में विकसित देख रहे हैं, उनका जन्म आठवीं शताब्दी के लगभग अपने-अपने क्षेत्रों की अपभ्रंश बोलियों से हुआ था। वैदिक साहित्य के अध्ययन से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि बोलियों का महत्त्व सदा बना रहा है।

वास्तविकता भी यही है कि भाषाओं के विकास की जड़ें आज भी लोक-बोलियों में-गहराई तक जमीं हुई लक्षित होती हैं। कभी-कभी हम यह अनुमान भी नहीं कर सकते हैं कि कतिपय शब्दों को जिन्हें हम केवल वैदिक साहित्य में प्रयुक्त पाते हैं, वे हमारी बोलियों में सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं।

विभिन्न प्राकृत भाषाओं का संक्षिप्त परिचय: प्राकृत को मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा कहा जाता है, यहाँ उनके प्रमुख भेदों-पालि, शिलालेखी, मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, पैशाची और अपभ्रंश आदि कुछ प्राकृत भाषाओं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है—

पालि : पालि बौद्ध त्रिपिटकों एवं सम्बद्ध ग्रंथों की मूल भाषा है। यह भी प्राकृत भाषा का ही एक रूप (भेद) है। गौतमबुद्ध ने इसे अपने उपदेश का माध्यम बनाया था। इसके नामकरण के सम्बन्ध में विद्वान् एकमत नहीं हैं। कुछ इसे मागधी से विकसित मानते हैं। मागधी और पैशाची प्राकृतों से पालि की पर्याप्त समानता भी है, उसकी कतिपय प्रवृत्तियाँ इसमें उपलब्ध होती हैं। पालि का छान्दस के साथ भी पर्याप्त साम्य है। इसलिए इसे साहित्यिक प्राकृतों में सर्वाधिक प्राचीन माना जा सकता है। इस दृष्टि से सामान्यतया पालि भी एक प्रकार की प्राकृत ही है।

पालि में बौद्धों का विपुल साहित्य उपलब्ध है। इसीलिए मुख्यतया यह बौद्ध साहित्य तक ही सीमित देखी जाती है।

यह भी एक आश्चर्य का विषय है कि सम्राट अशोक ने बौद्धधर्म का प्रबल समर्थक होते हुए भी अपने शताधिक शिलालेख आदि पालि भाषा में न लिखवाकर तत्कालीन राष्ट्रभाषा के रूप में लोकप्रिय प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मीलिपि में लिखवाये।

शिलालेखी प्राकृत -इसका समय ईसा पूर्व 300 से 400 ई. अर्थात् 700 वर्षों का लम्बा समय है। इस लम्बे कालखण्ड के समस्त शिलालेखों की संख्या लगभग 2000 है। इसमें अशोक के शताधिक शिलालेख, उदयगिरि-खण्डगिरि के हाथी गुम्फा आदि शिलालेख एवं पश्चिमी भारत के आन्ध्र राजाओं के शिलालेख साहित्यिक सांस्कृतिक एवं भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्राकृत भाषा के कई रूप इसमें उपलब्ध हैं। हाथी गुम्फा शिलालेख में अपने देश भारतवर्ष के नाम का शिलालेखीय सर्वप्राचीन उल्लेख भरधवर्ष (भारतवर्ष) नाम इसी अभिलेख की दसवीं पंक्ति में मिलता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह अभिलेख अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिलालेखों के अतिरिक्त सिक्कों पर भी प्राकृत के लेख उपलब्ध हैं।

पैशाची प्राकृत : पैशाची एक बहुत ही प्राचीन प्राकृत है। यह किसी प्रदेश विशेष की भाषा नहीं थी, अपितु जन-जाति विशेष की भाषा थी। मुख्यत: यह जन-जाति कैकय, शूरसेन और पांचाल आदि में निवास करती रही होगी या भ्रमण करती रही होगी। इसका प्रचार भी इन्हीं प्रदेशों में रहा। सम्भवत: यह भ्रमणशील जाति भारत में आधुनिक बंजारों और हंगरी में जिप्सी जातियों की पूर्वज रही हो। वाग्भट्ट ने पैशाची को भूतभाषा कहा है। इसके अनुसार यह पिशाच जाति के लोगों की भाषा थी। कुछ विद्वानों ने चूलिका को पैशाची का ही भेद माना है, जबकि कुछ विद्वान् इसे स्वतन्त्र भाषा मानते हैं।

चीनी तुर्किस्तान के खरोष्ठी शिलालेख तथा उद्योतनसूरि रचित कुवलयमाला में इसकी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। गुणाढ्य की बृहत्कथा पैशाची की प्रमुख रचना थी, जो आज उपलब्ध नहीं हैं।

मागधी प्राकृत : मगध क्षेत्र की बोली को मागधी कहा जाता है। अन्य प्राकृतों की तरह इसका स्वतन्त्र साहित्य तो उपलब्ध नहीं है किन्तु संस्कृत नाटकों और शिलालेखों में इसका भी प्रयोग मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मागधी कोई निश्चित भाषा नहीं रही, बल्कि कई बोलियों का सम्मिश्रण इसमें रहा होगा।

मागधी का निश्चित क्षेत्र तय करना कठिन है। फिर भी विद्वानों ने इसे मगध देश की भाषा ही माना है। इसकी प्रकृति शौरसेनी को माना गया है। विद्वानों ने शाकारी, चाण्डाली और शाबरी जैसी लोक भाषाओं को मागधी का ही भेद स्वीकार किया है।

अर्धमागधी प्राकृत : अर्धमागधी प्राकृत को तीर्थंकर महावीर के उपदेशों की भाषा माना

जाता है। इसी भाषा में श्वेताम्बर जैन परम्परा के आगम ग्रन्थ उपलब्ध हैं। प्राचीन आर्य प्रदेश के आधे भाग में बोली जाने वाली भाषा को अर्धमागधी कहते हैं। इसमें मागधी प्राकृत की कतिपय विशेषताएं पाये जाने के कारण कुछ विद्वान् इसे अर्धमागधी कहते हैं। मार्कण्डेय के अनुसार शौरसेनी के निकट होने के कारण शौरसेनी को अर्धमागधी भी मानते हैं। निश्चय ही उपर्युक्त तीनों तथ्यों में सच्चाई मालूम पड़ती है, क्योंकि शौरसेनी और मागधी के क्षेत्र के बीच में बोली जाने वाली भाषा का अर्धमागधी नामकरण सार्थक लगता है।

आगमों में अर्धमागधी को अट्ठारह देशी भाषाओं से प्रसूत तथा सर्वभाषामयी प्रमुख भाषा भी बताया गया है। अर्धमागधी को आर्ष प्राकृत भी कहा जाता है। इस भाषा का गद्य और पद्य, दोनों विधाओं का विपुल मात्रा में साहित्य उपलब्ध है। अर्धमागधी की रूपसंरचना में मागधी और शौरसेनी का पर्याप्त प्रभाव देखा जाता है।

शौरसेनी प्राकृत : शौरसेनी प्राकृत शूरसेन (मथुरा) प्रदेश और इसके आसपास की भाषा थी। दिगम्बर जैन परम्परा के प्रमुख आगमिक तथा सैद्धान्तिक ग्रन्थ इसी भाषा में निबद्ध हैं। इनमें षट्खण्डागम, कसायपाहुडसुत्त, मूलाचार, भगवती आराधना, समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड, गोम्मटसार आदि अनेक आगम शास्त्र आचार्य पुष्पदंत भूतवलि, गुणधर, कुन्दकुन्द स्वामी आदि अनेक आचार्यों के आगम-ग्रन्थ शौरसेनी प्राकृत में ही

''इस प्रकार प्राकृत भाषाएं और इसका साहित्य इतना समृद्ध है, कि इसमें भारतीय संस्कृति एवं लोक संस्कृति के मूल-स्वर ओजस्वी रूप में मुखरित होते हैं। किन्तु आश्चर्य है कि जो स्वयं हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं की जननी है और लम्बे काल तक राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित रही, वह राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर प्राकृत भाषा आज इतनी उपेक्षित क्यों है। क्यों इसे आज अपनी अस्मिता एवं पहचान बचाने और मूलधारा से जुड़ने हेतु संघर्ष करना पड़ रहा है?''

लिखे गये हैं। इस भाषा का प्रचार-प्रसार पूर्व में कलिंग, पश्चिम में सौराष्ट्र तथा दक्षिण में कर्नाटक, आन्ध्र, तमिल आदि अनेक प्रदेशों तक था। मध्यदेश तो इसका मूलस्थान ही था। इसे कुछ विद्वान् उपलब्ध अर्धमागधी साहित्य की भाषा से भी अधिक प्राचीन मानते हैं, पर यह अभी अन्वेषणीय है।

कुछ प्राचीन जैन-ग्रन्थों की शौरसेनी भाषा में कतिपय विशिष्टताएँ पायी जाती हैं, जिससे कुछ विद्वानों की दृष्टि से इसे 'जैन शौरसेनी' भी कहा जाता है। किन्तु मात्र कुछ विशेषताओं के कारण मेरी दृष्टि में यह अलग नामकरण उपयुक्त नहीं है। अत: मूलत: यह भी शौरसेनी ही है। वैसे नाटकों की शौरसेनी में जैन शौरसेनी की अपेक्षा कुछ अधिक भिन्नता है।

महाराष्ट्री प्राकृत : अनेक विद्वानों के अनुसार 'सामान्य प्राकृत' भाषा का ही दूसरा नाम महाराष्ट्री प्राकृत है। किन्तु इस नामकरण का मूल कारण उत्पत्ति स्थान ही है। महाराष्ट्र प्रदेश में जो प्राचीन प्राकृत प्रचलित थीं, महाराष्ट्री प्राकृत जिसे लीलावई-कहा के कर्ता कोऊहल ने मरहट्ठ देशी भाषा कहा है। मरहट्ठ देशी भाषा से ही प्राकृत काव्यों और नाटकों में प्रयुक्त महाराष्ट्री प्राकृत का विकास हुआ होगा। इसमें संस्कृत वर्णों के लोप की प्रवृत्ति सबसे अधिक है। इस कारण यह ललित और मधुर है। संभवत: इसलिए काव्यों और नाटकों में इसे सर्वाधिक स्थान मिला है।

महाराष्ट्री प्राकृत भाषा का कथा और काव्य साहित्य विपुल मात्रा में उपलब्ध है। जैन काव्य-ग्रन्थों और संस्कृत नाटकों आदि इतर काव्य-ग्रन्थों की महाराष्ट्री में कुछ भिन्नता भी देखी जाती है। इसलिए कुछ विद्वान् इसे भी वे जैन महाराष्ट्री कह देते हैं तथा 'जैनमहाराष्ट्री' और 'महाराष्ट्री' इसके ये दो भेद भी स्वीकार करते हैं। सामान्य प्राकृत माने जाने के कारण भी अनेक आधुनिक भारतीय भाषायें तथा बोलियाँ इससे सर्वाधिक प्रभावित देखी जाती हैं।

इस प्रकार प्राकृत भाषाएं और इसका साहित्य इतना समृद्ध है, कि इसमें भारतीय संस्कृति एवं लोक संस्कृति के मूल-स्वर ओजस्वी रूप में मुखरित होते हैं। किन्तु आश्चर्य है कि जो स्वयं हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं की जननी है और लम्बे काल तक राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित रही, वह राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर प्राकृत भाषा आज इतनी उपेक्षित क्यों है। क्यों इसे आज अपनी अस्मिता एवं पहचान बचाने और मूलधारा से जुड़ने हेतु संघर्ष करना पड़ रहा है?

राज्य सरकारों की ओर से अन्य अनेक भारतीय भाषाओं के विकास हेतु स्थापित अकादमी या संस्थानों की भांति सम्पूर्ण देश में एक भी प्राकृत अकादमी, विश्वविद्यालय या संस्थान की स्थापना आज तक क्यों नहीं हुई? ये सब प्रश्न बार-बार उठते और मन को कचोटते हैं। किन्तु इन सब प्रश्नों का समाधान हम सभी को और सरकार को मिल-जुलकर खोजना है और विविध प्रयासों से प्राकृत भाषा को व्यापक रूप में पुन: प्रतिष्ठित करना है, अन्यथा हमारी भावी पीढ़ी हमें प्राकृत की उपेक्षा के लिए कभी क्षमा नहीं कर सकेगी।

लेखक राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

पृष्ठ 19 का शेष भाग

जीरा, मेथी का अधिकांश प्रयोग करना चाहिए।

14. आसन में हस्तपादासन, अर्ध चक्रासन, त्रिकोणासन, वज्रासन, नौकासन, धनुरासन, अर्धमतसेन्द्रासन लाभदायक है।
15. प्राणायाम में अनुलोम विलोम,भस्त्रिका, कपालभाति व भ्रामरी प्राणायाम से लिपिड को कम करने में सहायता मिलती है।
16. सूर्य नमस्कार सर्वांग शरीर को स्वस्थ करने में सहायक होता है। चिकित्सक की निगरानी में कई आयुर्वेदिक औषधि के प्रयोग से dyslipidemia को ठीक कर हार्ट अटैक, लकवा जैसी जानलेवा बीमारी से बचा जा सकता है। इसमें पंचतिक्त गुग्गुल, त्रिफला चूर्ण, व्योषादी मंथ, तक्रारिष्ट, नवक गुग्गुल, गोमूत्र हरीतकी आदि का प्रयोग किया जाता है। अपने PhD अध्ययन के समय सैकड़ों रोगियों को मैंने लौह चूर्ण का प्रयोग कराया और इससे बहुत उत्साहवर्धन परिणाम मिला है।

Cholesterol और मोटापे को कम करने के लिए यह औषधि अत्यंत कारगर मानी गई है। सारांश यह है कि यदि नियमित रूप से व्यायाम, संतुलित आहार, ऋतु व दिनचर्या का पालन किया जाए व 40 साल के पश्चात् समय-समय पर lipid जांच की जाए तो इस बीमारी व उससे उत्पन्न होने वाले रोगों की समय पर रोकथाम की जा सकती है।

लेखिका आयुर्वेदिक डाक्टर हैं। ईमेल : response50123@gmail.com

स्वार्थ और विश्वास

राजेन्द्र प्रसाद वत्स

विश्वास नहीं किसी का खास
क्या कहें, क्या सूनें और बोलें
स्वार्थ यंत्र हो जब पास
विश्वास को मनमर्जी से तोलें।

स्वार्थ का पत्ता जब तक फंसा है
विश्वास वृक्ष तब तक पला है
स्वार्थ जब निकल गया
विश्वास को पता नहीं
कब खरीदा और कब छला गया।

पता नहीं क्या कीमत थी
विश्वास के वास की
रोम-रोम साथ था श्वास
अब रहा न विश्वास किसी का।

क्या खोया, क्या पाया
ये सवाल था सदा विश्वास का
स्वार्थ ने बीजा, उसी ने छीजा
फसल भी लहराई थी।

कब कटी फसल स्वार्थ की
किसने कब कुंडली मिलाई थी
विश्वास से तलाक होने की
कब कसम उसने खाई थी।

स्वार्थ ने खाया
स्वार्थ ने परोसा
स्वार्थ ने ही स्वाह किया
उसने तो जीभर डसा है।

अर्थ ने भी किया अनर्थ
शाख-शाख पर उल्लू बैठा
विश्वास समुद्र कहां से लाएं
स्वार्थ तट पर कृतज्ञ कहां से आएं।

न स्वार्थ पर इतना इतराओ
विश्वास जीते बगैर
स्वार्थ की नाव बन सकती है
पर उसके बगैर तैर नहीं सकती।
इसलिए दाग उस पर मत लगाओ।

कवि वित्त मंत्रालय में वरिष्ठ अधिकारी हैं।

ऑक्सीजन

इन्दुकांत आंगिरस

एक जंगल ने दूसरे जंगल से कहा—अरे, तुम अभी तक जिंदा हो, तुम्हारे पेड़ों का टेंडर तो पिछले महीने ही खुल गया था।

— टेंडर तो खुल गया था, लेकिन पेड़ों को काटने अभी तक कोई नहीं आया। लगता है टेंडर कैंसिल हो गया है।
— टेंडर खुलने के बाद कैंसिल, लगता है कोई नया घोटाला है।
— नहीं, घोटाला कोई नहीं, सुनने में आया है कि मृत्यु लोक में ऑक्सीजन की भारी कमी हो गयी है, इसीलिए फिलहाल पेड़ नहीं कटेंगे।
— चलो, मनुष्य को कुछ तो सद्बुद्धि आई।
— हाँ भाई, इस मृत्यु लोक में ऑक्सीजन सप्लाई करने के लिए हमें कुछ और साल जीवित रहना होगा।
— यह तो बहुत अच्छी खबर है। आओ, मिलकर जिंदगी का गीत गातें हैं।

तभी झूमते पेड़ों को छू कर ताजा हवा का झोंका मेरी आत्मा में पसर गया।

कथाकार वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

मैं गाँव खोजता हूँ

प्रभुनाथ शुक्ल

बदली हुई फिजाओं में मैं गाँव खोजता हूँ!
पीपल की शीतल छाँव की ठाँव खोजता हूँ!!

बारिश में टपकती खपरैल की छत खोजता हूँ!
रौबिली मूछें और हुक्के की बोल खोजता हूँ!!

मौन दीवारों से संवाद का वह मेल खोजता हूँ!!
कोल्हू में नधे बैल बचपन का खेल खोजता हूँ!

सावन की हरियाली और नाचता मोर खोजता हूँ!
बारिश के पानी में कागज की नाव खोजता हूँ!!

मुर्गे की बांग मंदिर का वह घड़ियाल खोजता हूँ!!
नदिया की धार में पायल की झंकार खोजता हूँ!

कोयल की कूक का मैं वह गीत खोजता हूँ!
काले भौरें का वह मधुर संगीत खोजता हूँ!!

वह प्रीति खोजता हूँ मैं वह रीति खोजता हूँ!
आँचल में छुपा लोरियों का गीत खोजता हूँ!!

बाबू के चश्में की टूटी वह फ्रेम खोजता हूँ!
चुपड़ी रोटियों में मैं माँ का प्रेम खोजता हूँ!!

महुवे की गंध और गुड़ की मिठास खोजता हूँ!
पायल से निकले बोल का संदेश खोजता हूँ!!

चौपाल की अट्टहास का वह राज खोजता हूँ!
गुम होते गाँव का अब इतिहास खोजता हूँ!!

कवि स्वतंत्र लेखक और पत्रकार हैं।

धर्मपाल महेंद्र जैन

शस्त्र मानव मारते हैं पर शास्त्र...

आदमी ने तमाम तरह के शस्त्र बनाए। जब वे नाकाफी हो गए तो शास्त्र बनाए। शस्त्र एक वार में कुछ आदमियों को मारता है, शास्त्र हजारों लोगों को लील जाता है। शस्त्र से भी खतरनाक हैं शास्त्र, जैसे अर्थशास्त्र। यह ऐसा शास्त्र है जो हर चीज को पैसों में बदल देता है। विधायक हो तो पैसे ले लो, और पैसे हो तो विधायक ले लो। देह हो तो धन ले लो और धन हो तो वांछित देह ले लो। आत्मा बेचना हो, ईमान बेचना हो, अंग बेचना हो, सबके पैसे मिलेंगे। अर्थशास्त्र ने हर चीज को मूल्य दिया है। पूर्ति घटा कर मांग बढ़ाना और लाभ कमाना इसका मूलमंत्र है। इसके चलते भौतिक चीजों के मूल्य निरंतर बढ़े हैं और नैतिक चीजें अपना मूल्य खोने लगी हैं। अर्थशास्त्र निचोड़ने से पैसा टपकता है।

कुछ लोग अर्थशास्त्र निचोड़ने वाले खानदानों में पैदा होते हैं और कुछ लोग ये तकनीक उनसे सीख लेते हैं। जो रेत में से तेल निकालना सिखा दे ऐसा शास्त्र है यह। यह है जो मानवीय श्रम को दोयम और कागजी पूंजी को उत्तम मानता है। ब्याज, लगान, प्रबंधन जैसे शोषण के तरीके सिखाता है। जो इसे समझ ले वह सरकारें खरीद कर अरबपतियों की सूची में बैठ सकता है और जो इसे नहीं समझे वह सरकारी सहायता की उम्मीद में जिंदगी निकाल देता है।

वैश्वीकरण के बहाने गरीबों को निर्धन और धनवानों को अमीर बनाने वाला यह जादुई शास्त्र है। अपने कुछ लोगों को यह करोड़ों-करोड़ से लाद देता है, और करोड़ों लोग दो वक्त की रोटी में उलझे रहते हैं। इसके गोरखधंधों की बदौलत दुनिया की बड़ी आबादी हक की बजाय कल्याणकारी कार्यक्रमों पर जीती है।

जहाँ अर्थशास्त्र काम नहीं करे वहाँ धर्मशास्त्र तैयार हैं। निरंतर प्रयोग से शस्त्र बूठे हो जाते हैं और धर्मशास्त्र धारदार। शस्त्र देह घायल करता है और धर्मशास्त्र आत्मा। शस्त्र छल रच कर वार करते हैं तो शास्त्र सीधे मन पर। शस्त्र एक जन्म में सारा किस्सा खत्म कर देता है और ये शास्त्र जन्म-जन्मांतर के लिए स्वर्ग और मोक्ष के जाल में फाँस लेते हैं।

धर्म कोई-सा भी हो, कर्मकांड का भ्रमजाल बुनने और उसे फैलाए रखने में निपुण होता है। हर धर्म खुद को सर्वश्रेष्ठ और शेष धर्मों को पिछड़ा, पोंगापंथी और जाहिल मानता है। इसलिए जहाँ अर्थशास्त्र ढीला पड़ जाए वहाँ धर्मशास्त्र उफान मारने लगते हैं। एक फतवा जारी करके एक आदमी पूरी कौम को नापाक बता सकता है।

एक प्यासा बच्चा मंदिर में पानी पी ले तो पूरे देश के मंदिर अपवित्र हो सकते हैं। ऐसे धर्मशास्त्र नहीं होते तो नफरत नहीं होती। शस्त्र मानव मार सकता है मानवता नहीं; पर शास्त्र मानवता भी मार सकते हैं। महिलाओं के प्रति कितने सहिष्णु हैं धर्मशास्त्र, वे उन्हें देवी की मान्यता देते हैं और फिर उनके साथ हो रहे कुकर्म और शोषण की पैरवी करने लग जाते हैं। ये शास्त्र आदमी को अंधधर्म के गहरे नशे में डूबो देते हैं।

जब नशा चढ़ता है तो वह बुद्धि और तर्क हर लेता है। आस्था लोगों को अंधविश्वास के जाल में जकड़ जाती है। ईशनिंदा करो तो मरो। इस तरह अनैतिक लोगों को नैतिक सिद्ध करने का यह ऐसा कुटिल षड्यंत्र है जो मानव अधिकारों को बौना साबित करता है।

यह ऐसे कट्टरपंथी बनाता है जो अपने भीतर आतंकवादी और हिंसक होते हैं। 'मेरा धर्म श्रेष्ठ' का विचार दिमाग में निरंतर घुसाते हुए शास्त्रों ने मनुष्य को जिंदगी भर के लिए नशेड़ी बना दिया है। इस नशे में लोग पिछले जन्मों के कर्मों पर विश्वास करते हैं।

देवभूमि पर जन्मे हैं तो मोक्ष मिले न मिले, सम्मान निधि तो मिलेगी ही। वे शून्य बैलेंस के साथ खाते खोलकर इंतजार करते हैं कि सरकार पैसा डालेगी, केंद्र की नहीं डालेगी तो राज्य की डालेगी ही।

मेरे चश्मे का नंबर माइनस है। व्यंग्य लिखता हूँ तो विद्रूपताएँ दिखती हैं जो सचेत करना चाहती हैं। आपको अच्छाइयाँ भी दिखेंगी, उन्हें जरूर अपना लेना। पर याद रखना, अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र जब गुपचुप हाथ मिला लेते हैं तो बहुत विषैले हो जाते हैं। धर्म और अर्थ के संयोग से मोक्ष मिलता है या नहीं, मुझे नहीं मालूम। पर मुझे पक्का पता है कि धर्म और अर्थ के अनुचित संयोग से सफेदपोश बनते हैं।

मुंबईया भाषा में आप उन्हें भाई और असंसदीय भाषा में गुंडे कह सकते हैं। वे एक घिनौना और मारक शास्त्र बनाते हैं। आपने ठीक पहचाना, उन्होंने इसे नाम दिया है राजनीति शास्त्र। यह अचूक है, इसका वार खाली नहीं जाता। यह अपने लाभ के लिए निरंतर अर्थ बदलता है।

यह सिर्फ ऐसी नीतियाँ बनाता है जो अपने राजा को बचाए रखे और उसके राज परिवार को पोसती रहे। प्रजातंत्र हो, राजशाही हो या जो भी हो, उनकी ही जय-विजय हो; देश और जनता जाए भाड़ में।

लेखक वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।
ईमेल : response50123@gmail.com

शशिप्रभा पाठक

जिंदगी का फलसफा कितना मासूम है

''आज मेरा मन उस व्यवस्था से आहत है कि हम अक्सर किसी भी सरकार को चुनते हैं, तो हमारी सोच सिर्फ हमारी कृत्रिम दुनिया की सजावट तक ही सीमित होती है, हमारे मुद्दे-रोड़, खाद्यान, कृषि, पैट्रोल, राजमार्ग, भवन निर्माण तक सीमित रहते है और हम अपने प्रतिनिधि से इन्हीं समस्याओं का निदान चाहते हैं। क्या हमने कभी सोचा कि हमारे देश को अस्पताल की कितनी जरुरत है? अगर कोई कभी प्राकृतिक प्रकोप आया तो हम उसका सामना कैसे कर सकते हैं?

हम अक्सर अपने स्वभाव के कारण अपनी ही कृत्रिम दुनिया में इतने मशगूल होते हैं कि हमें किसी और की परवाह नहीं होती है। लेकिन हम भूल जाते हैं कि हर प्राणी चर-अचर किसी न किसी खास मकसद से इस पृथ्वी पर आते हैं। अपनी दौलत और शोहरत के लिए अपना मकसद भूल कर अपनी बनाई हुई दुनिया में इतने खो जाते हैं कि हमें एहसास तक नहीं होता कि हम कब स्वार्थ लिप्सा में इतने खो गये कि खुद की कब्र खोदने लगे और उस सृष्टिकर्ता को भूल गये, जिन्होंने हमें मानव योनी में सिर्फ इसीलिए भेजा कि हम परस्पर सौहार्द की भावना के साथ संसार में अपनी भूमिका अदा कर सकें।

आज विश्व कोरोना जैसी वैश्विक महामारी का सामना कर रहा है, क्या हम इसके लिये कभी तैयार थे, या हमने कभी सोचा था कि अगर प्रकृति नाराज होगी, तो हमारा क्या होगा?

हमने परमात्मा के बनाये इस खूबसूरत उपहार के साथ भी नाइंसाफी की है। यह धरती सभी प्राणियों के लिए है, लेकिन हमने सभी प्राणियों का अस्तित्व खतरे में डाल अपनी अलग ही दुनिया बना ली है।

खैर आज मेरा मन उस व्यवस्था से आहत है कि हम अक्सर किसी भी सरकार को चुनते हैं, तो हमारी सोच सिर्फ हमारी कृत्रिम दुनिया की सजावट तक ही सीमित होती है, हमारे मुद्दे-रोड़, खाद्यान, कृषि, पैट्रोल, राजमार्ग, भवन निर्माण तक सीमित रहते है और हम अपने प्रतिनिधि से इन्हीं समस्याओं का निदान चाहते हैं। क्या हमने कभी सोचा कि हमारे देश को अस्पताल की कितनी जरुरत है? अगर कोई कभी प्राकृतिक प्रकोप आया तो हम उसका सामना कैसे कर सकते हैं? हमने देखा कि कोरोना महामारी के आगे इंसानों ने अपना हथियार डाल दिया है, दम तोड़ती जिंदगी और बदहाल व्यवस्था के लिए आखिर दोषी कौन है? क्या हमारे देश की व्यवस्था इस लायक है कि देश में कोई महामारी हो तो जनता को समुचित इलाज और उसकी परवरिश हो सके?

बिल्कुल नहीं क्योंकि हमारे नेता तो जातिवाद, वंशवाद और धार्मिक रुढ़ीवादिता के आधार पर ही अपना अस्तित्व बनाते हैं। उन्हें परवाह नहीं है कि जिस जनता ने उन्हें अपना प्रतिनिधि चुना वो दया की पात्र नहीं है, वो तो सचमुच अपने हक के लिए आपसे अपेक्षा करती है। आपको उन्होंने इसीलिए चुना है कि उनकी समुचित व्यवस्था करने में आप सक्षम हैं। भारतीय राजनीति का भी ध्रुवीकरण हुआ है—बरसों से भारतीय सत्ता पर काबिज होने वाले पक्ष और प्रतिपक्ष सिर्फ संसद में अपनी आवाज इसीलिए बुलंद करते आये हैं कि हमने जनता के लिए क्या किया, मैं पूछना चाहती हूं उन सभी छद्मवेशी नेताओं से कि आपका ध्यान कभी जनता की जरुरतों की तरफ क्यों नहीं गया, मेरे ख्याल से देश को वर्तमान परिस्थितियों में कुछ बिंदुओं को सुधारने की जरुरत है और इसके लिए हमारे भाग्यविधाता यानी चुने हुए जनप्रतिनिधि ही पहल कर सकते हैं।

- चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति लाना।
- शिक्षा के क्षेत्र में वो क्रांति लाना जिससे गांवों की जनता भी लाभांवित हो, बता दें अभी गांवों की शिक्षा पद्धति बहुत ही निम्न स्तर की है। यही कारण है कि साक्षरता के क्षेत्र में भारत सबसे पीछे है। भारत गांवों का देश है और जब तक गांवों का समुचित विकास नहीं होगा तब तक सही दिशा और दशा काल्पनिक होगी।
- गांवों में हर पंचायत स्तर पर डिस्पैंसरी होना जरुरी है। लोग अस्पताल तक पहुंचते-पहुंचते दम तोड़ देते हैं, क्योंकि साधनों का भी अभाव है।
- कुटीर उद्योगों को जमीनी स्तर पर उतारने के लिए ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी होनी चाहिए।
- स्वदेशी निर्मित वस्तुओं को ज्यादा से ज्यादा स्वीकार करने की पद्धति होनी चाहिए। इससे हर हाथ को काम मिलेगा। बता दें कि इन सबकी निष्पक्षता के लिए गैरसरकारी संस्था की भागीदारी हो और समय-समय पर गैरसरकारी संस्था द्वारा इसकी जांच होनी चाहिए।

जनता और भाग्यविधाता तय करें कि हमारे देश भारत की क्या तस्वीर हो? क्या अस्पताल में ऑक्सीजन की भीख मांगना हमारे नागरिकों द्वारा उचित है? नागरिकों को अपना समुचित हक मिलना चाहिए। भगवान ने सबसे समझदार प्राणी मनुष्य को ही बनाया है और मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो पृथ्वी की अनुपम छटा में चार चांद लगा सकता है। बस उसे अपनी स्वार्थ लिप्सा को छोड़ना पड़ेगा।

लेखिका दिल्ली की सामाजिक कार्यकर्ता हैं।
ईमेल : response50123@gmail.com

गीतांजलि राघव

राष्ट्र की कसौटी पर राज्य

देश महामारी की चपेट में है, जरूरत सबको एक मन और एक मत से आगे बढ़ने की है, लेकिन जब हम राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को आपस में टकराते हुए देखते हैं, तो थोड़ी देर के लिए हमें लगता है कि जैसे कुछ हुआ ही न हो। लेकिन चुनाव के टलते ही कोरोना की सुनामी लाखों लोगों को लील जाती है,और बाद में सब इसका ठीकरा एक दूसरे पर फोड़ते नजर आते हैं, नुकसान देश का होता है, समाज का होता है।

क्योंकि ये सच है कि समाज सर्वोच्च है, ये सैद्धांतिक सच है, लेकिन सरकार सर्वोच्च है, ये व्यवहारिक सच्चाई है, नागरिक सरकारों का चयन करने के लिए पार्टी के रूप में समूह बनाते हैं। समूह प्रतिनिधि तय करते हैं, और प्रतिनिधि संविधान को एक सरकार देते हैं।

आप कह सकते हैं, कि पार्टियां, संविधान के साथ सरकार का संबंध कराने के लिए उस पंडित की भूमिका अदा करती हैं, जो एक वर और वधु के बीच संस्कार संपन्न कराता है।

नियम तो ये था कि संविधान को सरकार सौंपने के बाद पार्टियों की भूमिका समाप्त हो जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसलिए समय की मांग है कि सरकार और पार्टियों को अलग-अलग किया जाए। ये सही है कि सरकारें राजनीतिक दलों के गर्भ से ही जन्म लेंगी लेकिन वो पार्टी नहीं बल्कि देश के लिए जवाबदेह होंगी। इतना ही नहीं, एक देश के तौर पर उनकी ये जवाबदेही दिखाई भी देनी चाहिए।

सवाल ये है कि आजादी के बाद टूटे हुए एक सपने को लौह पुरुष ने पूरा किया, तो उनका विचार क्या था?

क्या सरदार ने देश की 562 रियासतों को जोड़कर इसलिए एक भारत बनाया था कि वो पार्टियों के जरिए फिर से कमजोर कर दिया जाए? दरअसल आजादी के बाद ये सोचा गया कि राज्य राष्ट्र को ही सर्वोपरि मानेंगे। इसीलिए बाद में सांसदों की शपथ में अखण्डता जैसे शब्दों को जोड़ा गया।

लेकिन कई बार ऐसा लगा कि देश के कुछ राज्य रियासतों के उसी रंग में खुद को रंगने की कोशिश में हैं। कुछ तो खुद को उपराष्ट्र तक कहने की कोशिश करने का द्रोह करते रहे हैं। ये ऐसी कोशिश है, जो राष्ट्र को लगातार कमजोर कर रही है। इसका ताजा उदाहरण है—बंगाल।

अब बंगाल में ममता बनर्जी को कोरोना वैक्सीन के सर्टिफिकेट पर पीएम मोदी की नहीं बल्कि खुद की फोटो चाहिए। बतौर मुख्यमंत्री यह व्यवहार परिपक्वता का परिचायक नहीं।

चुनाव से पहले चुनाव के बाद बंगाल में मचा बवाल पूरे देश ने देखा। लम्बे अरसे के बाद बंगाल ने मजबूत सरकार के साथ मजबूत विपक्ष को चुना। उम्मीद की जा रही थी कि चुनाव के दौरान बंगाल में जो भय, असमानता, तुष्टिकरण का माहौल बना शायद सरकार बनने के बाद उसमें तब्दीली आए। बंगाल ने एक बार फिर ममता बनर्जी को अपना मुख्यमंत्री चुना, उन्होंने अपने पद व गोपनीयता के साथ राष्ट्र की शान्ति व अखण्डता बनाए रखने की शपथ ग्रहण की, लेकिन राज्य की तस्वीर में कोई परिवर्तन नजर नहीं आया। पहले से ज्यादा भय, नफरत, अराजकता, खून खराबा हुआ और ममता मौन रहीं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समुद्री तूफान यस को लेकर बैठक बुलाते हैं और ममता बनर्जी उस बैठक को बीच में छोड़ कर चली जाती हैं। साथ ही अपने मुख्य सचिव को दिल्ली भेजने से इंकार कर देती हैं। समुद्री तूफान की बैठक सियासी तूफान में बदल जाती है। वो यहीं नहीं रूकीं देश के प्रधानमंत्री को-मिस्टर प्राइम मिनिस्टर, मिस्टर बिजी प्राइम मिनिस्टर, मिस्टर मन की बात प्राइम मिनिस्टर जैसे असम्मान जनक शब्द कहे। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की भाषा और व्यवहार एक पार्टी के कार्यकर्ता सरीखी दिखी। जहां राज्य की स्वास्थ्य व कानून व्यवस्था के लिए ममता बनर्जी को अपनी जवाब देही तय करनी चाहिए थी, लेकिन वो इस नाजुक दौर में भी केंद्र सरकार से उलझती दिखीं। जो ये दर्शाता है कि यह व्यवहार एक राज्य के मुख्यमंत्री का नहीं बल्कि एक व्यक्ति का है। तृणमूल सांसद न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए साक्षात्कार में देश के नेतृत्व पर सवाल उठाती हैं। समझना चाहिए कि सभी एक व्यवस्था का हिस्सा हैं। समझना चाहिए कि सब पार्टी के कार्यकर्ता से पहले जनता के प्रतिनिधि हैं।

विपक्ष शासित राज्य केन्द्र के हर फैसले का विरोध ही करते नजर आ रहे हैं, देश में किसानों के हित के लिहाज से बने कानूनों की बात तो छोड़ ही दीजिए, हद तो तब हो गई जब कोरोना से लड़ने के लिए बनी वैक्सीन को लेकर केंद्र सरकार के खिलाफ माहौल बनाया गया। दरअसल इस नाजुक दौर में भी इन्हें सीखना चाहिए उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक से की कैसे विपरीत परिस्थितियों में देश के साथ देश के लिए काम किया जाए। आखिर

''क्या सरदार ने देश की 562 रियासतों को जोड़कर इसलिए एक भारत बनाया था कि वो पार्टियों के जरिए फिर से कमजोर कर दिया जाए? दरअसल आजादी के बाद ये सोचा गया कि राज्य राष्ट्र को ही सर्वोपरि मानेंगे। इसीलिए बाद में सांसदों की शपथ में अखण्डता जैसे शब्दों को जोड़ा गया।''

वो भी एक विपक्ष शासित राज्य के मुख्यमंत्री हैं।

लेकिन हां, जब आप केंद्र को बदनाम करने की नीयत से बदनाम करते हैं, दिल्ली संभालने वालों को विदेशी मीडिया में जाकर घसीटते हैं तो देश बदनाम होता है।

बदनामी से भी बड़ी बात छवि को धुमिल करने की है, सबसे बड़ा सवाल ये है कि देश के पीएम से लेकर प्रधान तक, डीएम से लेकर सीएम तक क्या एक टीम नहीं हैं? क्या एक गांव की समस्याऐं देश की समस्याऐं नहीं हैं? क्या एक राज्य की समस्या देश की समस्या नहीं है? या फिर देश की समस्या राज्य की समस्या नहीं है? है, बिल्कुल है? संविधान में केंद्र और राज्य सूची का मतलब कामों का विभाजन मात्र है, देश का बंटवारा नहीं है, और हां! संविधान ने राष्ट्र को नए राज्य बनाने और बने हुए राज्यों को अपने अधीन यानि यूटी बनाने के तमाम अधिकारों से संपन्न किया है, इसलिए राष्ट्र प्रभु के समान यानि 'समप्रभु' है।

वो राज्यों का गार्जियन है। केंद्र और राज्य के संबंधों का एक मजबूत पक्ष अर्थ से भी जुड़ा है। जैसे परिवार में पिता की भूमिका अपने सभी बच्चों को सबल बनाने की होती है साथ ही घर के कमजोर बच्चे के लिए उनका झुकाव अधिक होता है ठीक वैसे ही केंद्र सरकार का रवैया और नजरिया देश के सभी राज्यों के लिए होता है।

हमें यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका व यूनियन ऑफ इंडिया के बीच के अंतर को समझना होगा। यूनियन ऑफ इंडिया की मूल भावना में हर राज्य को हर परिस्थिति में एक साथ एक दूसरे के लिए खड़ा होना है।

केंद्र और राज्य के संबंध कैसे हों? ये भलीभांति संविधान में विधित है जो कम से कम उन्हें बताने की जरूरत नहीं है। अलग भाषाई पहचान, असमान विकास, राज्यों का गठन, पुनर्गठन या फिर विशेष राज्य का दर्जा, सब केंद्र की -राज्य संबंधों की सीमा में आते हैं। यही नहीं देश में शिक्षा, व्यापार जैसे विषयों पर नीति निर्माण का सवाल हो उसमें जो बात फोकस में रहती है वह है केंद्र और राज्य के बीच में इनको लेकर क्या आपसी समझ है।

''बदनामी से भी बड़ी बात छवि को धुमिल करने की है, सबसे बड़ा सवाल ये है कि देश के पीएम से लेकर प्रधान तक, डीएम से लेकर सीएम तक क्या एक टीम नहीं हैं? क्या एक गांव की समस्याऐं देश की समस्याऐं नहीं हैं? क्या एक राज्य की समस्या देश की समस्या नहीं है? या फिर देश की समस्या राज्य की समस्या नहीं है? है, बिल्कुल है? संविधान में केंद्र और राज्य सूची का मतलब कामों का विभाजन मात्र है, देश का बंटवारा नहीं है, और हां! संविधान ने राष्ट्र को नए राज्य बनाने और बने हुए राज्यों को अपने अधीन यानि यूटी बनाने के तमाम अधिकारों से संपन्न किया है, इसलिए राष्ट्र प्रभु के समान यानि 'समप्रभु' है।''

भारतीय संविधान में भारत को राज्यों का संघ कहा गया है न कि संघवादी राज्य। भारतीय संविधान में विधायी, प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियों का सुस्पष्ट बंटवारा केंद्र और राज्यों के बीच किया गया है। विधायी शक्ति के विषयों को तीन सूचियों में बांटा गया है। इसमें पहली सूची है केंद्रीय सूची, दूसरी है राज्य सूची और तीसरी सूची है समवर्ती सूची।

संविधान में लिखित निर्देशों के बावजूद अगर केंद्र और राज्य के बीच तालमेल नहीं बैठ पा रहा है तो उसका एक बड़ा कारण है उन निर्देशों की अनदेखी करना। और हां ये कि ये समस्या बड़े राज्यों के साथ ज्यादा है, उनके सीएम खुद को पीएम से कम मानने के लिए तैयार नहीं है, जबकि सब एक टीम का हिस्सा हैं।

इसलिए एक मत ये भी है कि अब सरकार और सियासत को अलग-अलग कर देना चाहिए। परंतु सवाल उठता है कि ये होगा कैसे? इसके लिए जरूरी है कि किसी भी नागरिक के प्रतिनिधि चुने जाने के बाद, वो पार्टी का प्रतिनिधि न रहकर देश का प्रतिनिधि बन जाए। यहां तक कि पद पर रहते हुए कोई भी प्रतिनिधि चुनाव प्रचार से भी दूर रहने के लिए बाध्य हो। परंतु क्या ये संभव है, कैसे संभव है? सियासत की खामियों से देश को अलग दूर कैसे रखा जा सकता है, ये अभी दूर की कौड़ी है। लेकिन राष्ट्र को परम वैभव तक ले जाने के लिए अगर ये महा प्रयास भी करना पड़े तो कम है।

लेखिका लोकसभा टी.वी. में कार्यरत हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

तुष्टिकरण का एक ओर ज्वलन्त जीता-जागता उदाहरण

कौशल अरोड़ा

अभी हाल ही में मुस्लिम समुदाय के रफअत अहमद सुन्नत वल जमात के धार्मिक नेता का जनाजा रामगंज जयपुर में दोपहर को निकला। ठीक, इसी तरह माह अप्रैल में राज्य सरकार के मंत्री सोहेल फकीर के पिता श्री गाजी फकीर मुस्लिम समुदाय के धार्मिक गुरु का जनाजा जैसलमेर में निकला। जिनकी मृत्यु कोरोना से हुई थी।

हृदय विदारक घटना दोनों स्थानों पर एक-सी रही। जहाँ प्रशासन के नाक के नीचे हजारों की भीड़ कोविड नियमों को तोड़कर एकत्र हुई। मानो राज्य के प्रभावशाली जनप्रतिनिधियों, मंत्रियों ने प्रशासन को कैद कर लिया हो। इन दोनों में समानता थी तो यह कि प्रशासन पंगु, सत्ता दल के विधायक, मंत्री, पार्षद, ग्राम पंचायत सदस्य इत्यादि इसमें उपस्थित थे। पुलिस प्रशासन उस भीड़ को रोकने के स्थान पर उन प्रभावशालियो को सुरक्षा उपलब्ध कराने में जुटी रही।

लेकिन हुआ क्या ढाक के तीन पात, पुलिस पर मामूली कार्यवाही कर 10-12 लोगों के खिलाफ प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर दी गई। ऐसे उदाहरण ओर भी हैं जब पुलिस व प्रशासन उनके आगे पंगु बना हो।

जबकि सभ्य समाज का उदाहरण बीकानेर से हमारे सामने है। जहाँ माह मई में बीकानेर में सर्व हिन्दू समाज के आराध्य संत स्वामी सोमगिरि जी महाराज ब्रह्मलीन हुए तब भी

यही प्रशासन वहाँ था। उस प्रशासन पर समाज के किसी भी वर्ग द्वारा कोई दबाव नहीं डाला गया और न ही अनावश्यक प्रतिक्रिया ही की। जबकि स्वयंसेवकों व भक्तजनों ने पुलिस प्रशासन का सहयोग किया। यह है समाज की आंतरिक जागरूकता। यहाँ प्रशासन उन स्वयंसेवकों के कारण जागरूक रहा और शिवबाड़ी मन्दिर परिसर के मार्ग व आसपास के छोटे बड़े मार्गों पर अवरोधक लगाकर ट्रैफिक को रोका गया। उनके अनुयायियों, भक्तों, स्थानीय निवासियों ने उन्हें अपने घर व समाचार चैनल के माध्यम से श्रद्धांजलि व अन्तिम विदाई दी।

''यहाँ प्रश्न सीधा यह उठता है कि प्रशासन द्वारा क्या बेरिकेटिंग की जा सकती थी। जबकि धर्मनिरपेक्ष सरकार की तुष्टिकरण की नीति के कारण ऐसा नही हो पाया। ऐसा भयावह दृश्य दिखा जिसकी कल्पना सम्भव नही है। उत्तराखंड में कोरोना बढ़ने से, समय पूर्व ही कुम्भ मेले को बीच में ही विभिन्न अखाड़ों द्वारा विसर्जित करने की घोषणा स्वयं महामंडलेश्वर द्वारा की गई। महामारी में सजगता का परिचय स्वयं समाज का नेतृत्व करने वाले धर्मप्रेमी संगठनों द्वारा किया गया। ''

यहाँ प्रश्न सीधा यह उठता है कि प्रशासन द्वारा क्या बेरिकेटिंग की जा सकती थी। जबकि धर्मनिरपेक्ष सरकार की तुष्टिकरण की नीति के कारण ऐसा नही हो पाया। ऐसा भयावह दृश्य दिखा जिसकी कल्पना सम्भव नही है। उत्तराखंड में कोरोना बढ़ने से, समय पूर्व ही कुम्भ मेले को बीच में ही विभिन्न अखाड़ों द्वारा विसर्जित करने की घोषणा स्वयं महामंडलेश्वर द्वारा की गई। महामारी में सजगता का परिचय स्वयं समाज का नेतृत्व करने वाले धर्मप्रेमी संगठनों द्वारा किया गया।

तथाकथित धर्मनिरपेक्ष विचारक, बुद्धिजीवी, पत्रकार और सेक्युलर गैंग अब न जाने क्यों मौन है? प्रदेश के जाने माने ख्याति प्राप्त पत्रकार पुलिस, प्रशासन की बड़ी लापरवाही से मौन है। समाचार पत्रों, मीडिया कवरेज, चैनल डिबेट में यह विषय कहीं नहीं हैं। इतना ही नहीं इन्हें छबड़ा में हुये दंगों का सच भी दिखाई नहीं दे रहा। यह सत्ता के प्रभावशाली बिगड़े रूप की मोहनी में सुख भोग रहे हैं।

लेखक जयपुर में सरकारी बीमा कंपनी में कार्यरत हैं और राष्ट्रीयता से जुड़े विषयों पर लेखन कार्य करते हैं।

ईमेल : response50123@gmail.com

खबरों में देश-विदेश

■ सोनम जैन

मोदी सरकार 18 प्लस के सभी लोगों को नि:शुल्क उपलब्ध कराएगी कोरोना वैक्सीन

मोदी सरकार ने कुछ समय पूर्व तय किया था कि वैक्सीन निर्माता कंपनियां अपने कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत तक केंद्र सरकार, 25 प्रतिशत तक राज्य सरकारों व 25 प्रतिशत तक प्राइवेट अस्पतालों को उपलब्ध करा सकती हैं। किंतु अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में यह बात कही है कि भारत सरकार राज्यों के हिस्से के 25 प्रतिशत का भी स्वयं भुगतान करेगा। इस तरह जो लोग प्राइवेट अस्पतालों में वैक्सीनेशन कराना चाहते हैं, उनको छोड़कर सभी के लिये कोरोना वैक्सीन उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी अब केंद्र सरकार की होगी। प्रधानमंत्री ने एक और बड़ी घोषणा करते हुए कहा है कि दीपावली तक सभी लोगों को नि:शुल्क राशन दिया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में बच्चों को दी जाने वाली वैक्सीन के ट्रायल की जानकारी भी दी। उन्होंने बताया कि नाक से अर्थात नेजल स्प्रे के माध्यम से वैक्सीन देने के लिए भी ट्रायल चल रहे हैं।

विश्व के कई देशों में कोरोना की तीसरी लहर की आहट

जहां एक ओर भारत में कोरोना के मामले तेजी से घट रहे हैं, वहीं विश्व के कई देशों में स्थिति पहले से खराब होती नजर आ रही है। इसे कुछ विशेषज्ञ तीसरी लहर की आहट के रूप में भी मान रहे हैं। जैसे कुछ ही समय पहले ब्रिटेन में मामले बढ़ने शुरू हो गये हैं। ब्रिटेन में पहले उम्मीद की जा रही थी कि 21 जून से लॉकडाउन हटा लिया जाएगा लेकिन अभी परिस्थितियां बदली नहीं है। वहां पर अब लॉकडाउन हटाने की योजना को कुछ समय के लिए टालने की मांग उठ रही है। इसके पीछे का कारण यह है कि कुछ विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि जिस तरह ब्रिटेन में कोरोना के नए मामले तेजी से आ रहे हैं, उम्मीद की जा सकती है कि देश में तीसरी लहर की शुरुआत हो चुकी है। ऐसा ही कुछ चीन और रूस में भी देखने को मिला है। चीन के ग्वांगझोउ में मनोरंजन स्थल बंद कर दिए गए हैं। इसका कारण यहां कोरोना के नए मामले में तेजी बतायी जा रही है। इसी प्रकार रूस में भी कोरोना के मामले पहले से अधिक आने लगे हैं। पहले जहां सात हजार के लगभग नए मामले नजर आ रहे थे, वहीं अब इनकी संख्या बढ़कर 10000 से अधिक हो गई है। इस कारण कुल सक्रिय कोरोना मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। फिलहाल भारत की ओर से अच्छी खबर यह है कि भारत में सक्रिय मामलों की संख्या घटकर लगभग 8 लाख हो गयी है। यह संख्या प्रतिदिन घट रही है इसलिए उम्मीद की जा रही है कि जल्द ही आंकड़ा 5 लाख से नीचे चला जाएगा। अभी यदि विश्व की तुलना में बात करें तो हमारे यहां पर सक्रिय कोरोना के मामले अमेरिका के बाद सबसे अधिक हैं, ब्राजील तीसरे नंबर पर आता है लेकिन यहां नए मामले भी तेजी से देखे गये है। इससे ऐसा लगता है कि शीघ्र ही भारत तीसरे पायदान पर पहुंच जाएंगा।

भारत तिब्बत सीमा पर चीन की हर गतिविधि पर नजर बनाए हुए है भारतीय सेना

चीन ने हाल ही में भारत तिब्बत सीमा के पास युद्ध अभ्यास किया। इसमें विशेष रूप से उसकी वायु सेना ने भाग लिया। यद्यपि यह युद्धाभ्यास चीन ने अपनी सीमा के अंदर किया किंतु इससे ऐसा माना जा रहा है कि चीन अभी भी सीमा

विवाद के विषय पर आक्रामक है। इस पर भारतीय सेना नजर बनाए रखते हुए प्रतीक्षा कर रही है कि चीन आगे क्या करता है? भारतीय सेना का प्रयास है कि जब तक इस सीमा विवाद का स्थाई हल नहीं निकल आता, तब तक सीमा पर यथास्थिति बनायी रखी जाये। प्राप्त जानकारी के अनुसार चीनी अभ्यास में चीन के 1 स्क्वायड प्लस चीनी लड़ाकू विमान शामिल थे। 1 स्क्वायड प्लस में 18 से अधिक लड़ाकू विमान होते हैं। इसलिए इसे एक बड़ा युद्धाभ्यास माना जा रहा है। इसके बाद भी फिलहाल भारत तिब्बत सीमा पर किसी प्रकार का नया तनाव देखने को नहीं मिल रहा है। भारत सरकार चीन के इस व्यवहार से नाराज है। पहले भी विदेश मंत्री और रक्षा मंत्री आदि चीन के द्वारा सीमा विवाद हल करने की दिशा में कोई प्रयास न करने पर नाराजगी व्यक्त कर चुके हैं।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी से मिले अभिनेता संजय दत्त

अभिनेता संजय दत्त ने हाल ही में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के नागपुर आवास पर उनसे भेंट की। इसकी जानकारी नितिन जी ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट के द्वारा दी। उनके द्वारा पोस्ट एक चित्र में दिखाई दे रहा है कि संजय दत्त ने सामाजिक दूरी रखते हुए केंद्रीय मंत्री व उनकी धर्मपत्नी का अभिवादन किया। एक अन्य तस्वीर में संजय दत्त नितिन गडकरी से बात करते हुए दिखाई दे रहे हैं। कुछ माह पूर्व ही संजय दत्त अपना कैंसर का उपचार करवा कर भारत वापस लौटे हैं।

उत्तर भारत की खबरें

■ विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन

महानगर के रूप में होगा पंचकुला का विकास : मनोहर लाल

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने पत्रकारों से बात करते हुए जानकारी दी कि पंचकुला का विकास मेट्रोपॉलिटन सिटी (महानगर) के रूप में किया जाएगा। इसके लिए इंटीग्रेटेड विकास प्लान बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पंचकुला को पर्यटन के मानचित्र में लाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। जिले में सड़कों का जाल बिछाया जाएगा। पंचकुला को एयरपोर्ट से जोड़ने के लिए एक हाईवे के निर्माण की तैयारी की जा रही है, इसका डीपीआर तैयार हो चुका है। इसके साथ ही कई अन्य सड़कों को चौड़ा किया जाएगा। पहले पंचकुला का डेवलपमेंट चार्ज मोहाली से अधिक था, अब इसका दोबारा निर्धारण किया जा रहा है। मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने बताया कि लगभग 48 साल पहले पंचकुला की स्थापना हुई थी, इसके विकास के लिए पहली योजना 1983 में बनाई गई। अब हमने 2018 से इसके विकास को गति देने के लिए प्रयास प्रारंभ किए हैं। यहां पर औषधीय पौधे लगाए जा रहे हैं। संग्रहालय बनाया जा रहा है। मंडी आदि का निर्माण किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य भी कई विकास की योजनाएं हैं, जिनको भविष्य में पंचकुला के अंदर शुरू किया जाएगा।

100 दिन पूरे होने पर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री रावत कर सकते हैं कई घोषणाओं का ऐलान

उत्तराखंड में तीरथ सिंह रावत ने 10 मार्च 2021 को मुख्यमंत्री के रूप में पदभार संभाला था। इसके अनुसार जून में उनके 100 दिन पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर वह कई घोषणाओं का ऐलान कर सकते हैं। इसकी तैयारी के लिए वह कुछ दिनों पूर्व दिल्ली में थे। जहां उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित विभिन्न केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात की और उत्तराखंड से संबंधित नयी योजनाओं पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात में तीरथ सिंह रावत ने उन्हें चार धाम यात्रा के इंफ्रास्ट्रक्चर विकास के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री से ग्लेशियरों के अध्ययन के लिए एक रिसर्च सेंटर और कुमाऊं में एम्स की स्थापना की मांग भी की। तीरथ सिंह रावत ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से भेंट की और कोविड-19 व विभिन्न आपदाओं के समय केंद्र सरकार के द्वारा दिए गए सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात में तीरथ सिंह रावत के द्वारा ऋषिकेश और हल्द्वानी में डीआरडीओ की मदद से एक-एक कोविड केयर सेंटर खोलने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया गया। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात करके मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड के 42 प्रस्तावों को शीघ्र ही स्वीकृति देने का अनुरोध किया। इन सड़क निर्माण प्रस्तावों की कुल लागत 615.48 करोड रुपए आने की संभावना है। मुख्यमंत्री ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा से शिष्टाचार मुलाकात की।

कै. अमरिंदर सिंह ने कोरोना की तीसरी लहर से बच्चों को बचाने के लिए शुरू की तैयारियां

ऐसा माना जा रहा है कि सितंबर या अक्टूबर में भारत के अंदर कोरोना की तीसरी लहर अपना कहर बरपा सकती है। इसके लिए विभिन्न राज्यों ने अभी से तैयारियां शुरू कर दी है। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने बाल रोग विशेषज्ञों का एक समूह बनाने का ऐलान किया है। यह समूह इस बात की चिंता करेगा कि यदि बच्चे कोरोना की चपेट में आते हैं, तो उनका उपचार किस प्रकार किया जाए? इसके लिए क्या-क्या तैयारियां करने की जरूरत है? यह ग्रुप पंजाब के सरकारी मेडिकल कॉलेजों, स्वास्थ्य विभाग व पीजीआई आदि स्वास्थ्य से जुड़े संस्थानों के संपर्क में भी रहेगा, जिससे इन संस्थानों को कोरोना से लड़ने के लिए तैयार किया जा सके और इसके लिए उनकी क्या जरूरत है उसको भी समझा जा सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी सरकारी मेडिकल कॉलेज अपने यहां कम से कम 3 दिन का ऑक्सीजन भंडारण रखें, जिससे सप्लाई बाधित न हो। यदि ऑक्सीजन की कमी पड़ती है, तो भी उसे उपलब्ध कराने के लिए अधिक समय मिल सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम इस हिसाब से तैयारी कर रहे हैं कि राज्य के पास हर समय कम से कम 375 मिट्रीक टन ऑक्सीजन उपलब्ध हो, जिससे निर्बाध उपचार सुनिश्चित हो सकेगा।

उत्तर प्रदेश ने कोरोना जांच का बनाया रिकार्ड

पूरे भारत में कुछ राज्यों को छोड़कर कोरोना के मामले तेजी से घट रहे हैं। इनमें से एक राज्य उत्तर प्रदेश भी है। दूसरी लहर में जिस प्रकार यहां मामले बढ़ना शुरु हुये, उससे लगा कि अब स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गयी। लेकिन अब कोरोना अपना कहर बरपाने के बाद कमजोर पड़ने लगा है। समाचार लिखे जाने के समय तक उ.प्र. में कोरोना के सक्रिय मामले 7 हजार से भी कम हैं। आरोप लगाया गया कि कोरोना की जांच ही नहीं हो रही, इसलिये नये मामले भी कम आ रहे हैं। किंतु योगी सरकार के द्वारा 5 करोड़ से अधिक कोरोना के टेस्ट करवाकर एक रिकार्ड बनाया गया है, जो कि इन आरोपों का जवाब स्वयं दे रहा है। इतनी तेजी से कोरोना के मामले घटने का एक कारण यहां तेजी से होने वाला वैक्सीनेशन है। उ.प्र. देश में दूसरा सबसे अधिक वैक्सीनेशन करने वाला राज्य बन चुका है। यहां लगभग 2 करोड़ लोगों को कोरोना के टीके की पहली डोज लग चुकी है।

पूर्वोत्तर भारत की खबरें

■ राजीब अगस्ती/आलोक सिंह

असम के मुख्यमंत्री ने उपराष्ट्रपति व प्रधानमंत्री सहित कई केंद्रीय मंत्रियों से की मुलाकात

असम के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने दिल्ली आकर उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी सहित कई केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने असम सरकार की योजनाओं के विषय में जानकारी दी तथा केंद्रीय मंत्रियों से विभिन्न परियोजनाओं को पूरा करने के लिए उनके मंत्रालय का सहयोग मांगा। इसके अतिरिक्त कुछ नई परियोजनाओं के प्रस्ताव पर भी केंद्रीय मंत्रियों के साथ हिमंत बिस्व सरमा की चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री से की गई अपनी मुलाकात के बारे में बताया कि उन्होंने प्रधानमंत्री को बताया है कि वे अपने मंत्रियों से सरकार के बारे में निगेटिव फीडबैक लेंगे, जो फीडबैक उन्हें विधायकों से मिले हैं। इस फीडबैक को एक वरिष्ठ मंत्री के द्वारा इकट्ठा किया जाएगा और उसके बाद उस पर चर्चा होगी। इसके पीछे का उद्देश्य यह है कि सरकार के बारे में लोग क्या सोचते हैं? लोगों की कौन सी अपेक्षाएं हैं, उनको जाना जा सके। मुख्यमंत्री ने बताया कि गुजरात में मुख्यमंत्री रहते हुये नरेंद्र मोदी ने ही यह प्रयोग किया था। उसी मार्ग पर असम सरकार भी आगे बढ़ रही है। इससे सरकार और जनता के मध्य और नजदीकी आयेगी। असम के मुख्यमंत्री ने उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, गृह मंत्री अमित शाह, सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से भी मुलाकात करके असम राज्य के बारे में चर्चा की और उन्हें अपनी योजनाओं के बारे में भी बताया।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री ने की कक्षा आठ की छात्रा की मदद

सोशल मीडिया हमारे लिए लाभदायक सिद्ध हो या हानिकारक यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका प्रयोग कैसे करते हैं। त्रिपुरा में कक्षा 8 की एक छात्रा ने अपनी बीमार मां के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री बिप्लव देव से फेसबुक पर मदद मांगी। कोरोना संक्रमित मां के उपचार के लिए मदद मांगता हुआ यह वीडियो त्रिपुरा के मुख्यमंत्री के पास तक पहुंचा। छात्रा बहुत ही गरीब परिवार की थी। एक अस्थाई कमरे में परिवार के चार सदस्य रहते थे। पढ़ाई के लिए कोई भी व्यवस्था नहीं थी। ऐसे में उसकी मां के कोरोना वायरस से संक्रमित हो जाने से पूरे परिवार के सामने एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई। वर्षा नाम की इस छात्रा की बात जैसे ही त्रिपुरा के मुख्यमंत्री तक पहुंची उन्होंने अधिकारियों को हर संभव सहायता उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। जिसके बाद छात्रा के पास पढ़ाई के लिए मेज, पूरे परिवार के लिए भोजन के पैकेट और बीमार मां के लिए दवाई पहुंचा दी गई। वर्षा को उम्मीद नहीं थी कि उसकी बात मुख्यमंत्री तक पहुंचेगी और यदि पहुंच भी गई तो उसे इस प्रकार से मदद प्राप्त हो पाएगी। इसलिए छात्रा और उसका परिवार बिप्लव देव के द्वारा उपलब्ध कराई गई इस मदद के लिए मुख्यमंत्री का बहुत आभार मान रहा है। मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार संजय मिश्रा ने बताया कि मुख्यमंत्री बिप्लव देव पहले भी कई बार सोशल मीडिया या किसी अन्य माध्यम से किसी पीड़ित की गुहार पहुंचने पर उसकी मदद करते रहे हैं।

एवरेस्ट फतह पर अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने दी ताशी यांगजोम को बधाई

अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले में रहने वाली 37 वर्षीय ताशी यांगजोम ने हाल ही में एवरेस्ट पर्वत पर चढ़ाई की। इसके बाद उनका नाम अरुणाचल प्रदेश की उन गिनी चुनी महिलाओं में शामिल हो गया है, जिनको यह उपलब्धि प्राप्त हुई है। यांगजोम राष्ट्रीय पर्वतारोहण व संबंध खेल संस्थान (एनआईएमएस) में प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। इस संस्थान के

निदेशक कर्नल सरफराज सिंह के अनुसार पिछले 3 वर्षों में 9 ऐसे प्रशिक्षक हैं जिन्होंने यह सफलता प्राप्त की है। उनकी इस सफलता पर अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल बिग्रेडियर (रिटायर्ड) डॉ. बी.डी. मिश्रा व मुख्यमंत्री पेमा खंडू के द्वारा उन्हें बधाई दी गई। राज्यपाल डॉ. बी.डी. मिश्रा ने कहा कि यांगजोम की सफलता प्रदेश की महिलाओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने कहा कि उनकी सरकार आगे भी प्रदेश की महिलाओं और युवतियों को खेलों में आगे बढ़ने की प्रेरणा देगी और उन्हें हर संभव सहायता भी प्रदान की जायेगी।

सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने नीतीश के कहने पर उपलब्ध कराई मदद

सिक्किम की राजधानी गंगटोक में कोरोना वायरस से एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। यह व्यक्ति मूल रूप से बिहार के किशनगंज जिले का रहने वाला था। जब बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को इसकी जानकारी मिली कि पीड़ित परिवार को मृतक का शव प्राप्त नहीं हो पा रहा है तो उन्होंने सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि पीड़ित परिवार को अंतिम संस्कार के लिये मृतक का शव दिलवाने में वे सहायता करें। दरअसल कुछ कारणवश परिवार के द्वारा गंगटोक प्रशासन को दिया गया अनुरोध स्वीकार नहीं हो पाया था। मुख्यमंत्री के पास पत्र पहुंचने के बाद उनके हस्तक्षेप से गंगटोक जिला प्रशासन ने किशनगंज के प्रशासन को मृतक का शव सौंप दिया, जिसके बाद इस शव को एंबुलेंस से उनके घर लाया गया।

दक्षिण भारत की खबरें

■ नवरतन पींचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय

दक्षिण भारत में अभी भी नहीं थम रहा है कोरोना का कहर

वैसे तो महाराष्ट्र देश का सबसे अधिक कोरोना संक्रमण से प्रभावित राज्य है, किंतु यदि एक्टिव केस की बात करें तो वह अब तीसरे नंबर पर आ चुका है। पहले और दूसरे स्थान पर क्रमशः कर्नाटक और तमिलनाडु आते हैं। समाचार लिखे जाने तक कर्नाटक में एक्टिव केस 150000 से अधिक थे। यद्यपि यहां से 100 वर्ष की आयु पार कर चुके बुजुर्गों के लिए अच्छी खबर आई है, इतने अधिक संक्रमण के बाद भी प्रदेश में 100 वर्ष की आयु पूरी कर चुके बुजुर्गों में कोरोना संक्रमण से होने वाली मृत्यु की दर मात्र 5 प्रतिशत है अर्थात 95 प्रतिशत बुजुर्ग कोरोना को हराकर, स्वस्थ होकर अपने घर पहुंच चुके हैं। कई बार इन बुजुर्गों को युवाओं की अपेक्षा अधिक समय तक अस्पताल में रखना पड़ता है, किंतु इसके बाद भी उनमें तेजी से रिकवरी देखी जाती है। यह भविष्य के लिए भी एक अच्छा संकेत है। हालांकि कुल मौतों के मामले में कर्नाटक इस समय देश में दूसरे स्थान पर है।

इस समय एक्टिव कोरोना वायरस के मामलों में देश का दूसरा सबसे अधिक प्रभावित राज्य तमिलनाडु है। चौथे नंबर पर केरल और पांचवें पर आंध्र प्रदेश आता है। तेलंगाना आठवें स्थान पर है अर्थात पहले सबसे अधिक कोरोना प्रभावित 5 राज्यों में से चार दक्षिण भारत से हैं। दक्षिण भारतीय राज्यों में भी शेष भारत की तरह ठीक होने वालों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। यदि कुल ठीक होने वालों की बात की जाए तो पहले 5 प्रदेशों में चार दक्षिण भारत से हैं। केरल दूसरे, कर्नाटक तीसरे, तमिलनाडु चौथे और आंध्र प्रदेश पांचवें स्थान पर है। इससे उम्मीद की जा रही है कि जल्द ही यहां भी स्थितियां सुधरेगी।

दक्षिण भारत के राज्यों में तेजी से वैक्सीनेशन बढ़ रहा है। संभव है कि अन्य राज्यों की तरह ये प्रदेश भी शीघ्र अच्छी स्थिति में आ जाए। उदाहरण के लिए यदि हम 13 जून की बात करें तो इस दिन सबसे अधिक वैक्सीनेशन करने वाले राज्यों में तेलंगाना दूसरे, तमिलनाडु तीसरे और कर्नाटक पांचवें स्थान पर था। आंध्र प्रदेश उससे थोड़े ही नीचे सातवें स्थान पर था। 13 जून को रविवार था और इस दिन अधिकांश प्रदेशों में कम वैक्सीनेशन किया जाता है। संभव है कि ऐसा वैक्सीनेशन में लगे हुए हमारे स्वास्थ्य कर्मियों को राहत देने के लिए किया जाता है। इसके बाद भी दक्षिण भारतीय राज्यों तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में वैक्सीनेशन के प्रति उत्साह देखा जाना एक शुभ संकेत है।

यदि टेस्टिंग की बात करें, तो कर्नाटक में 3.2 करोड़, तमिलनाडु में 3 करोड़, केरल में 2.1 करोड़, आंध्र प्रदेश में 2 करोड़, तेलंगाना में 1.7 करोड़ व पुडुचेरी में 11.6 लाख टेस्ट हो चुके हैं। देश में 10 सबसे अधिक टेस्टिंग करने वाले राज्यों में कर्नाटक तीसरे, तमिलनाडु पांचवें, केरल सातवें, आंध्र प्रदेश आठवें व तेलंगाना दसवें स्थान पर आता है। इस अनुसार यह कहा जा सकता है कि पहले जो भी स्थिति रही हो, अब यहां टेस्ट और वैक्सीनेशन दोनों तेजी से हो रहे हैं। अधिक टेस्ट के कारण हो सकता है कि कुछ समय तक संक्रमितों की संख्या बढ़े, लेकिन फिर इसमें तेज वैक्सीनेशन के कारण गिरावट भी अवश्य ही आयेगी।

तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को वीडियो संदेश जारी कर दी बधाई

तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने नागपुर निवासी वरिष्ठ पत्रकार अविनाश पाठक द्वारा प्रारंभ किये गये यूट्यूब चैनल 'पंचनामा' को दिये गये एक वीडियो संदेश में केंद्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को जन्मदिन की बधाई दी और और उनके साथ अपने अनुभवों को साझा किया। राज्यपाल श्री पुरोहित ने कहा कि नितिन जी अद्भुत प्रतिभा के धनी हैं।

उन्होंने कहा कि नितिन जी ने अपने कई भाषणों में कहा है कि कार्यकर्ताओं के लिए राजनीति रोजी-रोटी का साधन नहीं बल्कि सेवा का साधन होना चाहिए। इस बात को उन्होंने अपने व्यवहार में साकार करके भी दिखाया है। उन्होंने अनेक गंभीर बीमारियों से ग्रस्त मरीजों के आपरेशन करवाये और गरीबों को खुलकर मदद कर रहे हैं। नितिन जी ने कृषि में आधुनिक संसाधनों का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है, यह किसानों को बताया और इसके लिये आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने में भी उनकी मदद की। इससे भी लाखों किसानों को लाभ हुआ है। महाराष्ट्र के विकास में भी उनका बड़ा योगदान रहा है। मुम्बई के लगभग आधे फ्लाइओवर उनके द्वारा ही बनवाये गये हैं। उन्होंने ऐसा करते हुये भाषा, जाति या पंथ का कभी भी ध्यान नहीं रखा। उनके द्वारा एक मुस्लिम को टिकट दिलवाया गया। उसे उन्होंने डिप्टी मेयर बनवाया। बाद में आवश्यकता पड़ने पर उसके हार्ट का ऑपरेशन भी नितिन जी ने ही करवाया।

इन कार्यों में उन्हें परिवार का सदैव साथ मिला। इस अवसर पर नितिन जी की धर्मपत्नी कंचन गडकरी का उल्लेख करते हुये श्री पुरोहित ने कहा कि नितिन जी से मिलने के लिये जब भी हम या कोई अन्य कार्यकर्ता पहुंचता है, कंचन जी उसके भोजन आदि का पूरा ध्यान रखती हैं। इसलिये यह कहा जा सकता है कि नितिन जी की सफलता के पीछे उनकी धर्मपत्नी का भी बड़ा योगदान है। चाणक्य वार्ता के सम्पादक डॉ. अमित जैन ने भी 'पंचनामा' को दिये अपने वीडियो संदेश में नितिन गडकरी जी को जन्मदिन की बधाई दी।

पश्चिम भारत की खबरें

■ आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से की मुलाकात

महाराष्ट्र में भाजपा और शिवसेना का गठबंधन समाप्त होने के बाद संभवत: यह पहली बार था, जब मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच दिल्ली में वार्ता हुई। इस कारण विभिन्न अटकलें भी लगना शुरू हो गई हैं। इन कयासों का जवाब देते हुए उद्धव ठाकरे ने कहा कि हमारा गठबंधन समाप्त हुआ है रिश्ते नहीं। मैं कोई पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मुलाकात करने नहीं गया था। इस व्यक्तिगत मुलाकात में गलत क्या है? मैंने एक मुख्यमंत्री के रूप में प्रधानमंत्री के सामने महाराष्ट्र से जुड़े कई विषय रखें।

उन्होंने हमारी बात को बहुत गंभीरतापूर्वक सुना और सभी विषयों पर उचित निर्णय लेने का आश्वासन भी दिया। उद्धव ठाकरे ने बताया कि उनके द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने मराठा आरक्षण, राजनीतिक आरक्षण, मेट्रो शेड, जीएसटी कलेक्शन, फसल बीमा और चक्रवात से हुए नुकसान सहित 12 मुद्दे रखे गये। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री से मुलाकात के बाद संतुष्ट दिखाई पड़े। उद्धव ठाकरे के साथ प्रदेश के उप मुख्यमंत्री अजीत पवार और मंत्री अशोक चौहान भी उपस्थित रहे।

पश्चिम भारत में सुधर रहे हैं कोरोना से हालात

देश का सबसे अधिक कोरोना वायरस प्रभावित राज्य महाराष्ट्र था। अब यहां पर हालात तेजी से सुधर रहे हैं। नए कोरोना संक्रमितों के मामले अपेक्षाकृत कम आ रहे है। उम्मीद की जा रही है कि शीघ्र ही स्थितियां बदलेगी और महाराष्ट्रवासियों को लॉकडाउन से जुड़ी पाबंदियों से राहत मिलेगी। अभी यह दावे के साथ नहीं कहा जा सकता है कि महाराष्ट्र में स्थितियां अच्छी बनी रहेंगी। इसका एक कारण यह है कि बीच-बीच में महाराष्ट्र के अंदर नए संक्रमितों का आंकड़ा ठीक होकर घर जाने वालों से अधिक हो जाता है। प्रदेश सरकार के लिए यह चिंता का विषय है। स्थितियों में और सुधार के लिए तेज वैक्सीनेशन का लगातार प्रयास चल रहा है। पश्चिम भारत के दूसरे राज्य गुजरात में अब पहले से बहुत अच्छी स्थिति है। यहां पर लगातार ठीक होने वालों की संख्या नए संक्रमितों से अधिक आ रही है। इसका सीधा असर कुल सक्रिय कोरोना संक्रमितों के आंकड़ों पर पड़ रहा है। कोरोना से मौतों में भी यहां पर कमी देखी गई है। गोवा में अभी क्षेत्रफल की दृष्टि से कोरोना के नए मामले अधिक हैं। किंतु यहां भी ठीक होने वालों की संख्या नए मामलों से अधिक आ रही है। इससे उम्मीद की जा सकती हैं कि निकट भविष्य में यहां पर भी राहत मिलेगी।

आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार ने राष्ट्र सेविका समिति के कार्यालय जाकर प्रमुख संचालिका से की भेंट

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य व वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार ने अपने नागपुर दौरे के दौरान राष्ट्र सेविका समिति के मुख्यालय देवी अहिल्या मंदिर जाकर समिति की प्रमुख संचालिका शांता अक्का, प्रमुख कार्यवाहिका सीता अक्का, पूर्व प्रमुख संचालिका प्रमिला ताई जी और प्रचारिका पूनम तथा उनकी पूज्य माताजी से भेंट की। हाल ही में प्रमिला ताई का 93वां जन्मदिन था। इंद्रेश जी ने उन्हें जन्मदिन की बधाई दी और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

इंद्रेश जी जब जम्मू-कश्मीर के प्रांत प्रचारक थे उस समय पूनम जी प्रचारिका निकली थी। उनका भी जन्मदिन कुछ दिन पूर्व था। अत: उन्हें भी इंद्रेश जी ने बधाई और आशीर्वाद दिया। समिति के पदाधिकारियों के साथ कई समसामयिक मुद्दों पर इंद्रेश जी ने चर्चा की। उन्होंने मुसलमानों को मुख्यधारा में जोड़ना और उन्हें कट्टरता, अलगाव और हिंसा मुक्त बनाने में राष्ट्र सेविका समिति का सहयोग मांगा।

महाराष्ट्र के राज्यपाल ने मॉरीशस के पूर्व राष्ट्रपति की याद में लगाया पौधा

भारतीय मूल के अनिरुद्ध जगन्नाथ मॉरीशस के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति दोनों ही पदों पर रहे। हाल ही में उनका निधन हो गया है। अनिरुद्ध जगन्नाथ भारत यात्रा के दौरान महाराष्ट्र राजभवन भी आए थे। मूलत: उत्तर प्रदेश के रहने वाले श्री जगन्नाथ का भारत से पुराना नाता तो था ही, साथ ही उन्होंने मॉरीशस में विभिन्न उच्च पदों पर रहने के बाद भी हमेशा भारतीय हितों पर गौर किया था। यही कारण था कि महाराष्ट्र में राष्ट्रीय शोक के रूप में तिरंगा झंडा आधा झुका रहा, इसके अलावा महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने राजभवन में उनकी याद में एक पौधा भी लगाया। मॉरीशस के पूर्व राष्ट्रपति को राजभवन के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भी पौधा लगाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

हरियाणा सरकार

आओ, कोविड-19 को हराएं
घर पर भी अपनी जिम्मेवारी निभाएं

श्री मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

- नियमित रूप से तापमान/ऑक्सीजन स्तर की जांच करें, यदि ऑक्सीजन का स्तर 94 प्रतिशत से कम हो तो ही डॉक्टर से सम्पर्क करें
- ऐसी स्थिति में प्रोनिंग (पेट के बल लेटकर) व ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाने वाले व्यायाम जैसे अनुलोम-विलोम, प्राणायाम इत्यादि करें
- होम आइसोलेशन के दौरान ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थ लें, पौष्टिक आहार का सेवन करें तथा नियमित दवाइयां लें व कोविड के नियमों का कड़ाई से पालन करें

निम्न परिस्थितियों में ही चिकित्सीय सहायता आवश्यक है

- सांस लेने में तकलीफ
- ऑक्सीजन स्तर में लगातार गिरावट
- अत्यधिक खांसी/छाती में दर्द/दबाव का लगातार बने रहना
- शारीरिक रूप से उठने में अक्षमता अथवा मानसिक भ्रम की स्थिति
- पांच दिन से ज्यादा तेज़ बुखार

निम्न चार्ट के अनुसार करें अपने स्वास्थ्य की नियमित मॉनिटरिंग

लक्षणों का दिन और समय (प्रत्येक 4 घंटे बाद)	शारीरिक तापमान	हृदय गति (पल्स ऑक्सीमीटर से)	एस.पी.ओ.-2 (पल्स ऑक्सीमीटर से)	स्थिति (बेहतर/पहले जैसी/खराब)	सांस (बेहतर/पहले जैसी/खराब)

हेल्पलाइन नंबर
8558893911
संपूर्ण राज्य के लिए
व **1075**
(गुरुग्राम व फरीदाबाद को छोड़कर)

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा | www.prharyana.gov.in @Cmohry @DiprHaryana

असम के वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री लक्ष्मीनंदन बोरा का निधन

कोरोना ने पिछले लगभग 2 वर्षों में हमसे बहुत से अनमोल रत्नों को छीन लिया है। असम सहित पूरे पूर्वोत्तर में अपनी साहित्यिक प्रतिभा के लिये जाने-जाने वाले पद्मश्री लक्ष्मीनंदन बोरा का कोरोना से निधन हो गया। 89 वर्षीय श्री बोरा ने 60 से अधिक पुस्तकों का लेखन किया। इनमें अधिकांश उपन्यास और लघु कहानियों के संकलन थे। उनके पहले उपन्यास 'गंगा सिलोनिर पाखी' का अब तक 11 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है तथा इस पर 1976 में एक फिल्म भी बन चुकी है। उनके इस योगदान को देखते हुये उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, सरस्वती सम्मान व असम वैली लिटरेरी अवार्ड के साथ ही भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया है। उन्होंने असम साहित्य परिषद के अध्यक्ष के रुप में भी अपनी सेवाएं दी थी। चाणक्य वार्ता परिवार उन्हें अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नहीं रहे नागालैंड के गाँधी पद्मश्री पियोंग तमजेन जमीर

पूर्वोत्तर राज्य नागालैंड में रहकर राष्ट्रभाषा हिन्दी की अभूतपूर्व सेवा करने वाले पद्मश्री पियोंग तमजेन जमीर अब हमारे बीच नहीं रहे। श्री जमीर ने नागालैंड राज्य में अपने प्रयासों से हिन्दी स्कूल का निर्माण पदमपुखरी, दीमापुर में करवाया। उनके प्रयासों से गैर हिन्दी भाषी राज्य नागालैंड में 2 हजार से अधिक हिन्दी शिक्षक तैयार हुये और उन्हें विभिन्न माध्यमों में सरकारी नौकरी भी प्राप्त हुयी। कई बार उन्हें हिन्दी प्रचार के लिये धमकी भी मिली, परंतु उन्होंने अपना अटल संकल्प नहीं तोड़ा। श्री जमीर ने 1963 में वर्धा जाकर हिन्दी भाषा की पढ़ाई की और उसके बाद अपने गृह राज्य में लौटकर हिन्दी सेवा का कार्य प्रारंभ कर दिया। भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने श्री जमीर को पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया। श्री जमीर के प्रस्थान के बाद उनकी जिम्मेदारी उनके सुपुत्र वालेन जमीर और उनकी बेटी उठायेंगे। जनवरी 2021 में चाणक्य वार्ता के एक प्रतिनिधि मंडल ने नागालैंड के प्रमुख समाजसेवी पंकज सिन्हा के नेतृत्व में पद्मश्री पियोंग तमजेन जमीर से मुलाकात की थी। चाणक्य वार्ता के प्रति उनका अत्यंत स्नेह भाव था। चाणक्य वार्ता परिवार उनके निधन पर उन्हें शत-शत नमन करते हुये अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

मिजोरम राज्य में रह रहे विश्व के सबसे बड़े परिवार के मुखिया श्री जिओना चाना का निधन

मिजोरम राज्य के सेरक्षिक जिले के साक्सोग गांव के रहने वाले जिओना चाना जो देश के सबसे बड़े संयुक्त परिवार के प्रमुख थे अब हमारे बीच नहीं रहे। उनके परिवार में कुल 170 सदस्य हैं, जिनमें उनकी 39

पत्नियां, 85 बच्चे, 22 पोती और 26 पोते हैं। उनकी पहली पत्नी का नाम ठियानी है। चाणक्य वार्ता के पूर्वोत्तर जनसंपर्क प्रभारी आलोक सिंह ने कई बार उनके गांव जाकर उनसे मुलाकात की थी। उस समय श्री चाना के परिवार ने आत्मीयता और सहजता ने उनका भावविभोर होकर स्वागत किया था। उनके निधन से बड़ी रिक्तता पैदा हुई है। चाणक्य वार्ता परिवार उनको अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्रीमती वीना कोहली को श्रद्धांजलि

उ.प्र. सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के संयुक्त सचिव एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दीपक कोहली की माताजी श्रीमती वीना कोहली का लखनऊ में आकस्मिक निधन हो गया। दीपक जी के पिता स्व. राजकुमार कोहली उच्च शिक्षा निदेशालय में संयुक्त निदेशक थे। उनकी माताजी उच्च शिक्षित थीं और उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एमए, बीएड और एमएड की उपाधियां प्राप्त की थी। उन्होंने अपने दो सुपुत्रों डॉ. दीपक कोहली व डॉ. प्रशांत कोहली को भी उच्च शिक्षित बनाया व परिवार के बच्चों में हमेशा धार्मिक संस्कार देती रहीं। अपनी मृत्यु से पूर्व उन्होंने कई बार धार्मिक स्थानों की यात्रायें की और परिवार के साथ समय व्यतीत किया। चाणक्य वार्ता परिवार ऐसी आदर्श विचारों की धनी श्रीमती वीना कोहली को सादर नमन करते हुये अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बिहार के वरिष्ठ पत्रकार श्री शशिभूषण प्रसाद सिंह का निधन

बिहार के वरिष्ठ पत्रकार श्री शशिभूषण प्रसाद सिंह का मुजफ्फरपुर में अपने पैतृक निवास पर आकस्मिक निधन हो गया। श्री सिंह सेवाभावी, व्यवहारकुशल और कर्मठ पत्रकार के रुप में लगभग 40 वर्षों तक सार्वजनिक जीवन में सक्रिय बने रहे। उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और एजेंसियों में काम किया और वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन ऑफ बिहार के अध्यक्ष पद पर भी अपनी सेवायें दी। वे एक महान संयोजक थे, जिनके नेतृत्व में अनेकों विशाल आयोजन संपन्न हुये। श्री सिंह चाणक्य वार्ता से प्रारंभ से ही जुड़े रहे और इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसायटी की गतिविधियों में भी उनका सक्रिय सहयोग रहा। चाणक्य वार्ता परिवार उनके निधन पर उनको अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

दिल में
हिंदुस्तान
देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ
SURYA
MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES
आत्मनिर्भर भारत की पहचान
SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | Toll Free No.: 1800 102 5657

सरकारी नौकरियाँ आज के हर युवा का सपना है। अपने इसी सपने की पूर्ति के लिये हर कोई अपने स्तर पर प्रयासरत है। आपके इसी प्रयास में साथ देने के लिए हमने 'चाणक्य वार्ता' में इस जॉब नोटिफिकेशन को स्थान दिया है, जिससे किसी भी सरकारी नौकरी की सूचना आप तक पहुंच सके। आशा है यह कॉलम आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो रहा होगा।

सरकारी नौकरियों में अवसर

सी.ए. स्वीटी जैन

न्यूक्लियर पॉवर कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लि.
पद : विभिन्न
संख्या : 121
अंतिम तिथि : 15 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.npcil.nic.in

माझगाव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड
पद : विभिन्न
संख्या : 1388
अंतिम तिथि : 4 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.mazagondock.in

नादर्न कोलफील्डस लिमिटेड
पद : विभिन्न
संख्या : 1500
अंतिम तिथि : 9 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.nclcil.in

बिहार लोक सेवा आयोग
पद : जिला सूचना अधिकारी
संख्या : 31
अंतिम तिथि : 5 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.bpsc.bih.nic.in

गुजरात एनर्जी ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लि.
पद : विद्युत सहायक
संख्या : 352
अंतिम तिथि : 8 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.getcogujarat.com

राजस्थान लोक सेवा आयोग
पद : हेड मास्टर
संख्या : 83
अंतिम तिथि : 13 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.rpsc.rajasthan.gov.in

रीवा श्याम शाह मेडिकल कॉलेज
पद : टेक्निशियन
संख्या : 18
अंतिम तिथि : 2 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.ssmcrewa.com

मद्रास उच्च न्यायालय
पद : विभिन्न
संख्या : 3557
अंतिम तिथि : 9 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.mhc.tn.gov.in

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग
पद : विभिन्न
संख्या : 130
अंतिम तिथि : 1 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.uppsc.up.nic.in

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
पद : टीचर
संख्या : 5807
अंतिम तिथि : 3 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.dsssbonline.nic.in

संकलनकर्ता 'चाणक्य वार्ता' की आर्थिक सलाहकार हैं। ई-मेल **sjsweetyj@gmail.com**

नहीं रहे फ्लाईंग सिक्ख मिल्खा सिंह

महान स्प्रिंटर मिल्खा सिंह का चंडीगढ़ के सेक्टर 25 के श्मशान घाट में अंतिम संस्कार किया गया। उनका 91 साल की उम्र में निधन हो गया था। इससे पहले सेक्टर-8 के गुरुद्वारा साहिब से फूलों से सजे वाहन से मिल्खा सिंह का पार्थिव शरीर श्मशान घाट तक लाया गया। अंतिम संस्कार में सैकड़ों की संख्या में लोग शामिल हुए। चंडीगढ़ पुलिस और सीआरपीएफ के जवानों ने सलामी दी। उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने आए केंद्रीय खेल मंत्री किरण रिजिजू ने कहा कि जब भारत में खेल के बारे में कोई जागरुकता नहीं थी। उस वक्त मिल्खा सिंह ही थे, जिन्होंने भारत के झंडे को पूरी दुनिया में लहराया था। टोक्यो ओलंपिक आ रहा है, वहां जो भी खिलाड़ी शानदार प्रदर्शन करेगा, हम उस प्रदर्शन को मिल्खा सिंह को समर्पित करेंगे।

खेल मंत्री रिजिजू ने मिल्खा सिंह की मृतक देह पर पुष्प अर्पित किए। अंतिम संस्कार के बाद पूरे परिवार के साथ रिजिजू गवर्नर पंजाब से मिलने के लिए पहुंचे। मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह ने यहां घोषणा की कि खेल विश्वविद्यालय पटियाला में मिल्खा सिंह चेयर की स्थापना की जाएगी। साथ ही सरकार प्रयास करेगी कि मिल्खासिंह की यादें सदा युवा पीढ़ी को प्रेरित करती रहे। मिल्खा सिंह के अंतिम दर्शन करने के लिए मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल, खेलमंत्री राणा गुरजीत सोढ़ी, स्वास्थ्य मंत्री बलबीर सिंह सिद्धू, वित्त मंत्री मनप्रीत सिंह बादल, अकाली दल के विक्रमसिंह मजीठिया, पूर्व अकाली नेता सुखदेव सिंह ढींढसा समेत कई हस्तियां पहुंचीं। गवर्नर पंजाब वीपी सिंह बदनोर ने भी जीव मिल्खा सिंह के साथ संवेदना व्यक्त की।

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने मिल्खा सिंह को देश का गौरव बताया और खिलाड़ियों से उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान किया।

सिनेमा ■ साहित्य ■ श्रद्धांजलि

डॉ. महेश्वर

गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष के रूप में पद्मश्री विष्णुभाई पंड्या ने सफलतापूर्वक पूरे किये चार साल

पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार विष्णुभाई पंड्या को गुजरात साहित्य अकादमी का अध्यक्ष बने 4 वर्ष पूरे हो गये। इन चार वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न उल्लेखनीय कार्य किये। पिछले 4 वर्षों में 15 वरिष्ठ साहित्यकारों को साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। साहित्य सृजन को प्रोत्साहित करने के लिये गुजरात साहित्य अकादमी के माध्यम से उन्होंने 383 से अधिक युवा वार्ता, शिविर, परिसंवाद, व्याख्यान, वेबिनार व कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रमों का आयोजन कराया। इस कालखंड में हिन्दी, गुजराती, कच्छी, सिंधी, संस्कृत व उर्दू भाषाओं की 195 पुस्तकों का प्रकाशन अकादमी द्वारा करवाया गया। इन पुस्तकों को स्टाल के साथ-साथ ऑनलाइन बिक्री के लिये भी उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गयी। डॉ. पंड्या द्वारा हिन्दू दर्शन के विश्वकोष 'हिन्दुत्व' का पुन: प्रकाशन करवाया गया। यह ग्रंथ महामना मदन मोहन मालवीय की प्रेरणा और बाबू शिवप्रसाद गुप्त के सहयोग से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र के अध्यापक रामदास के द्वारा लिखा गया था। जिसका प्रकाशन कई दशकों पूर्व हुआ था।

गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष बनने से पूर्व व बाद में विष्णु पंड्या के ऐसे ही विभिन्न उल्लेखनीय योगदानों को देखते हुये वर्ष 2018 में उन्हें पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त पिछले 4 वर्षों में अकादमी से जुड़े उनके कार्यों को देखते हुए फिलीपींस की संस्था पेंटासी के द्वारा उन्हें श्रेष्ठ उपलब्धि गौरव का सम्मान दिया गया था। उन्हें मुंबई का प्रसिद्ध प्रियदर्शनी अवार्ड भी प्राप्त है। विष्णुभाई पंड्या के सफल कार्यकाल हेतु चाणक्य वार्ता के संपादक डॉ. अमित जैन और गुजरात चाणक्य वार्ता के ब्यूरो चीफ धीरेन बरोट ने उन्हें अपनी शुभकामनाएं दीं हैं।

रविकांत की धारावाहिक का प्रसारण 19 से

उत्तर-पूर्वी राज्य त्रिपुरा की प्रेम कथा पर आधारित धारावाहिक 'चामुरुई ओप्पा...एक प्रेम कथा' का प्रसारण दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर 19 जून से रात्रि 10:30 बजे शुरू होगा। इसकी जानकारी जैसे ही दाउदनगर प्रखंड के रेपुरा ग्राम के ग्रामीणों को मिली तो उनमें खुशी का माहौल है। रेपुरा निवासी फिल्मकार, रंगकर्मी, लेखक रविकांत द्वारा निर्देशित उक्त धारावाहिक का प्रसारण शुरू हो रहा है। रविकांत ने बताया कि धारावाहिक त्रिपुरा की सांस्कृतिक विरासत को संजोए उसकी पुरानी परंपरा पर आधारित एक प्रेम कहानी है और इसकी पूरी शूटिंग त्रिपुरा में ही हुई है। धारावाहिक के माध्यम से त्रिपुरा के सांस्कृतिक परिवेश वेशभूषा रहन-सहन और वहां की प्रमुख भाषा कॉकबरकश को भी धारावाहिक में उचित सम्मान मिला है। हिंदी धारावाहिक होने के बाद भी इसके गीत कॉकबरक में रखे गए हैं। इस धारावाहिक में हिरोइन की भूमिका मणिपुर निवासी हेमलता ने निभाई है जो चाणक्य वार्ता से जुड़ी हैं।

'चाणक्य वार्ता' देशभर के निम्नलिखित केन्द्रों पर बिक्री हेतु उपलब्ध है।

उत्तर प्रदेश

सुभाष पुस्तक भंडार : गुरुनानक मार्केट, चारबाग रेलवे स्टेशन के सामने, लखनऊ

अलका न्यूज एजेन्सी : रेल बाजार, कानपुर

लक्ष्मी नारायण न्यूज पेपर एजेन्ट : विद्यापीठ रोड, वाराणसी

जायसवाल बुक डिपो : कटरा, इलाहबाद

प्रसाद मैगजीन सेंटर : नारायण कॉम्पलेक्स, धर्मशाला रोड, गोरखपुर

न्यूज प्वाइंट, पुराना बस अड्डा, अलीगढ़

अमरनाथ सेठी एंड संस : 13, जवाहर हाट, विकास बाजार के सामने, मथुरा

चावला बुक डिपो : रोडवेज बस स्टैण्ड, मेरठ

रायल बुक डिपो : प्रकाश चौक, मुजफ्फरनगर

भीम पुस्तक भण्डार : इंदिरा नगर, रायबरेली

प्रेम बुक सेंटर : इकदरा चौक, फैजाबाद

उत्तराखण्ड

जैन न्यूज एजेन्सी : सिविल लाइन्स, रुड़की

गुप्ता न्यूज एजेन्सी : लक्ष्मणझूला, ऋषिकेश

पटवाल न्यूज एजेन्सी : खान मार्केट, हल्द्वानी

हरियाणा

अरोड़ा न्यूज एजेन्सी : गाँधी मार्केट, अम्बाला

नीलम न्यूज एजेन्सी : पीपली, कुरुक्षेत्र

सचदेवा न्यूज एजेन्सी : बस स्टैंड के पीछे, यमुना नगर

श्याम नोबल स्टोर : किला रोड, रोहतक

पंजाब

जे. के. न्यूज एजेन्सी : बस स्टैण्ड के पीछे, पटियाला

मोहन्द्रा न्यूज एजेन्सी : चौड़ा बाजार, घंटाघर के पास, लुधियाना

सेठी एंटरप्राइजेज : शास्त्री मार्केट, जालंधर

जयदीप न्यूज एजेंसी : आउट साइड, हॉल बाजार, अमृतसर

भाटिया बुक डिपो : स्टेशन रोड, पठानकोट

चण्डीगढ़

पंजाब बुक सेंटर, सेक्टर 22बी, चंडीगढ़

हिमाचल प्रदेश

सुभाष न्यूज एजेन्सी : आईएसबीटी बस स्टैण्ड, शिमला

जम्मू-कश्मीर

शीला बुक कॉनर : कच्ची छावनी, जम्मू

राजस्थान

नवरत्न बुक सेलर : चौड़ा रास्ता, जयपुर

दैनिक जागरण बुक स्टॉल : रोडबेज बस स्टैंड, अलवर

गीता पुस्तक भण्डार : स्टेशन रोड, अजमेर

कैलाश बुक स्टाल : जवाहर नगर बस स्टैण्ड, उदयपुर

सर्वोदय बुक स्टाल : स्टेशन रोड, जोधपुर

छाजेड़ न्यूज एजेन्सी : परकोटा, बीकानेर

ओसवाल न्यूज एजेन्सी : चौपाटी बाजार, कोटा

असम

दुर्गा न्यूज एजेन्सी, पान बाजार, गुवाहाटी

कर्नाटक

सपना बुक हाऊस : गांधी नगर, बंगलौर

तमिलनाडू

आर.के. न्यूज एजेंसी : चिल्ड्रन हॉस्पिटल के पास, àßgmore, चेन्नई

केरल

आइडियल बुक्स : संध्या ट्यूटोरियल लेन, स्टैचू त्रिवेन्द्रम, त्रिवंतपुरम

आंध्र प्रदेश

समस न्यूज एजेन्सी : फरमान वाड़ी, हैदराबाद

मध्य प्रदेश

तेलंग बुक कार्नर : भारत टाकीज, भोपाल

बलराज बेजवानी : रेलवे स्टेशन, ग्वालियर

साहू न्यूज एजेन्सी : मालवीय चौक, जबलपुर

छत्तीसगढ़

कुशल बुक प्वाइंट : पुराना बस स्टैण्ड, रायपुर

बिहार

सिन्हा बुक एजेंसी : न्यू मार्केट, बुद्धा प्लाजा कॉम्पलेक्स, पटना

अन्नू बुक स्टाल : मोती झील, मुजफ्फरपुर

मोहन बुक्स एण्ड न्यूज एजेन्सी : बस स्टैण्ड, छपरा

पी.के. बुक स्टाल : स्टेशन रोड, भागलपुर

झारखण्ड

मॉडर्न मैगजीन कॉनर : दाल पट्टी, रांची

भाटिया मैगजीन सेंटर : रागाटाउ, धनबाद

उड़ीसा

ए. के. नायक न्यूज एजेन्सी : कैपिटल बस स्टैण्ड, भुवनेश्वर

माधव बुक स्टाल : बादाम बाड़ी, कटक

पश्चिम बंगाल

मोहन बुक्स स्पलायर न.2 : डेकर्स लेन, कोलकता

महाराष्ट्र

नोवल्टी बुक सेंटर : महिन्द्रा चैम्बर्स, फोर्ट, मुम्बई

भूटाडा न्यूज एजेन्सी : अप्पा बलवन्त चौक, बुधवार पीठ, पुणे

गोवा

एसईवी मुथु : रेलवे बुक स्टाल, वास्कोडिगामा, गोवा

गुजरात

विनोद एजेन्सीज : रुस्तम अली की ढाल, खानपुर, अहमदाबाद

विज्ञापन हेतु सम्पर्क सूत्र

दीक्षा

मो. 08571841127

चाणक्य वार्ता

सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

आपकी पसन्दीदा पत्रिका अब ई-बुक रूप में पढ़ें ऑनलाइन मात्र 20 रुपये में

NotNul

www.notnul.com पर

विशेषांकों सहित वार्षिक सदस्यता शुल्क रुपये 500 मात्र

पंचवार्षिक रुपये 2000 मात्र

(यह योजना एक वर्ष तक लागू है)

मुख्यालय

'सन्निधि', ए-28, मनसाराम पार्क, नई दिल्ली 110059

कॉरपोरेट कार्यालय

321, तृतीय तल, वर्धमान मॉल, प्लाट-2, सेक्टर-19, द्वारका, नई दिल्ली 110077

सम्पर्क

8586858285, 09871909808

ई-मेल

chanakyavarta@gmail.com

वेबसाइट

www.chanakyavarta.com

HIGH-TENSILE THREADED REBAR

Hot Rolled Threaded Bars
Key features:

Fully threaded bar - can be cut and coupled at any point

Robust thread - ideal for use on construction sites

Coarse pitch thread form with two flats ensures self-cleaning of thread

Metaroll

Leading Steel Manufacturers

www.threadedrebars.com

IDPS
Enlightening lives

International Divya Parivar Society

(Registered with Govt. of National Capital Territory of Delhi, Reg. No.5/WEST/2011 5300145)

LEADING NGO IN SKILL DEVELOPMENT

Handicraft Training

Computer Training

Food Product Training

General Sewing Training

Artificial Jwelary Making Training

Certificate & Cheque Distribution

For any query contact us at : 09718681010

divyaparivar@gmail.com • http://www.facebook.com/divya.parivar • htto://www.twitter.com/divya_parivar

www.divyaparivar.co.in

प्रत्येक माह 1 व 16 तारीख को प्रकाशित
पोस्ट करने की तारीख : 3-4 व 17-18
नई दिल्ली से प्रकाशित
Posted at Delhi RMS - 110006

RNI No. DELHIN / 2016 / 65854
Postal Regn No. DL(W) 10/2230/2019-21
Licensed to Post without Pre-payment
of Postage L.No. U(W)-13/2019-21

हर अंक संग्रहणीय

गौरवशाली प्रकाशन का 6 वाँ वर्ष

देश के 26 राज्यों पर केन्द्रित
विशेषांक प्रकाशित करने वाली
एक मात्र हिन्दी पत्रिका

देश-विदेश की लोकप्रिय पाक्षिक

चाणक्य वार्ता

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय पत्रिका

शुल्क
वार्षिक सदस्यता शुल्क : रुपये 500 मात्र
पंच वार्षिक 2000 रुपये मात्र

संपर्क
ई-मेल : chanakyavarta@gmail.com
मो. 8571841127, 9871909808

आपकी पसंदीदा पत्रिका अब
ई-बुक रूप में पढ़े
ऑनलाइन मात्र 20 रुपये में NotNul

chanakya.varta2016 | YouTube chanakyachannelandwebinar | www.chanakyavarta.com